अणुव्रत का उजाला

अणुव्रत का उजाला

मुनि सुखलाल

आदश साहित्य सघ, चूरू (राजस्थान)

स्वर्गीया श्रीमती इन्दिरादेवी पगारिया (धर्मपत्नी—श्री रायचन्दजी पगारिया) की स्मृति म
श्री हीराचन्द उत्तमचन्द नीलेशकुमार निमलकुमार पगारिया बीड़ (महाराष्ट्र) क अथ सौजन्य स।

प्रकाशक कमलेश चतुर्वेदी / प्रबधक आदर्श साहित्य सघ चूरू (राजस्थान)
मूल्य चालीस रुपय / प्रथम सस्करण १६६८ / मुद्रक पवन प्रिटर्स दिल्ली-३२
ANUVRAT KA UJALA by Muni Sukhlal Rs 40 00

प

प्रस्तुति

आदमी के अतर का अधेरा वहुत खतरनाक हे। अधेरा तो वाहर का भी लाभकारी नही होता। पर अनर का अधेरा होता हे तो आदमी सत्य को भी मिथ्या मान लेता हे। उसी से असयम ओर अनीति निष्पन्न होती हे। आचायश्री तुलसी ने आदमी के अतर के अधेरे को दूर करने के लिए अणुव्रत का उजाला किया।

प्रकाश चाहे कितना ही तेजोमय क्यो न हो पर उसकी एक सीमा वनती ही हे। अनत आकाश मे अधेरा ही अधिक होता हे। प्रकाश तो कहीं-कहीं समुद्र मे द्वीप की तरह खडा दिखाई देता हे। पर फिर भी यह सही हे कि ढेर सारा अधेरा भी प्रकाश के एक कण को लील नहीं सकता। आचार्यश्री तुलसी ने अनेक असभावनाआ के वीच अणुव्रत के आदोलन को सभव वनाया। नेतिकता का एक स्वर मुखर हुआ। नेतिकता ओर अणुव्रत आज पर्यायवाची शव्द वन गए हे। दूर-दूर तक इसकी प्रतिध्वनि हुई ह। यद्यपि आज भी अणुव्रत के विस्तार की अपेक्षा से इन्कार नही हुआ जा सकता, पर आचार्यश्री ने निरतर सघप कर पचास वर्षो तक इस उजाले की सुरक्षा की। इस अतराल म अधकार के आक्रमण कम नही हुए। अनेक रूपाकारा मे उसने इस उजाले का घेरने का प्रयास किया, पर आचायश्री ने हर आक्रमण का करारा जवाव दिया। यही कारण हे अणुव्रत अपने पचास वर्प का इतिहास वना सका।

यह खुशी की वात हे कि अणुव्रत का अतीत इसके वर्तमान को भी आभापित कर रहा हे। हर महापुरुप की अनुपस्थिति मे एक रिक्तता उसके स्थान को घेर लेती हे। लेकिन आचाय तुलसी ने आचार्य महाप्रज्ञ के रूप म अणुव्रत अनुशास्ता की एक ऐसी परम्परा स्थापित कर दी

है जो इस आदोलन का एक निरतरता प्रदान करती रहेगी। सयोग स यह वप अणुव्रत का अमृत महोत्सव वप भी ह। आचाय महाप्रज्ञजी न इस साथता प्रदान करन की अपनी प्रतिबद्धता जताइ है। इसीलिए इस वर्ष एक नियाजित कदम उठान का प्रयास चल रहा है। सभी लाग उत्साह स आग वढ रह ह।

मेरा भी अणुव्रत स गहरा तादात्म्य रहा है। मै मानता हू मरी उजा सीमित ह, अत मै अनक दिशाआ म काय नही कर सक्ता। मन अपन काय की जो दिशाए चुनी उनम अणुव्रत एक प्रमुख काय दिशा है। अनेक लोग इस दिशा म आग वढ रह है। मुझे भी अच्छा अवसर मिला है। यह अणुव्रत अनुशास्ता क कुशल नतृत्व का ही सुखद परिणाम है के अनक जाने-अनजान, दूर-नजदीक, छोट-वड़ कायकता आज भी कुछ करने मे जुट हुए ह। दश विदेश म अणुव्रत का एक विस्तृत नटवक है।

अणुव्रत के सदभ म अनेक लोगा ने अपनी लखनी भी चलाई है। पर मने अणुव्रत-लेखन की दिशा म जो अवसर प्राप्त किया है उतना शायद कम लागा का प्राप्त हुआ ह। समय समय पर मुझे अनक रूपा म अणुव्रत पर लिखन का जो अवसर मिलता रहा ह, इस मै आचायश्री तुलसी एव आचायश्री महाप्रज्ञ का अनुग्रह ही मानता हू। मुझे अपनी अक्षमताआ का भी अहसास हे पर मेरे म जो क्षमताए ह उन्ह प्रस्फुटित होन का जो अवसर मिला ह, उससे मुझे आत्म-सतोष ह।

'अणुव्रत का उजाला के रूप मे मेरी अन्त प्रेरणा फिर एक वार सामने आ रही हे। इस म आचायश्री तुलसी के प्रति अपनी श्रद्धा एव आचायश्री महाप्रज्ञ के आशीवाद के रूप म स्वीकार कर रहा हू। अणुव्रत का उजाला सवकी राह का उजाला वने यही कामना है।

मुनि सुखलाल

२ अक्टूबर १९९८
सरदारशहर

ई।ਪ੍ਰ

अनुक्रम

अणुव्रत एक व्रत-विचार

व्रत का अर्थ हे सयम। सयम जव परिपूर्ण होता हे तव वह महाव्रत होता है। हर आदमी महाव्रती नही यन सकता। इसलिए जा सावधिक सयम को स्वीकार करता है, वह अणुव्रती कहलाता हे। अणु का अर्थ होता हे छोटा। जो छाटे-छोटे व्रतो को स्वीकार करता ह वह अणुव्रती होता ह। महाव्रती ओर अणुव्रती शब्द प्रयोग श्रमण महावीर के हे। महावीर कहते है—'इच्छा हु आगास समा अणतया'। आकाक्षाए आकाश के समान अनत हे, उन्हे पूरा नही किया जा सकता। पर साथ ही साथ यह भी सच है कि आकाक्षाए जव फेलती है तो व्यक्ति का व्यक्तित्व विघटित होता है। व्यक्तित्व का विघटन व्यक्ति के स्वय के लिए ही अशुभ-अहितकर होता हे। इससे दूसर भी प्रभावित होते हे। दुनिया म जितने भी द्वद्व हे वे आकाक्षाओ के विस्तार के ही परिणाम ह। इसीलिए महावीर का व्रत-विभाजन का यह विचार अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। यदि व्यक्ति परिपूर्ण रूप से सयम नहीं कर सके तो कुछ तो सीमा करे। उन्होने सीमाआ के इस दशन को वहुत विस्तार से समझाया हे। पर वीच का समय ऐसा आ गया जिसम महाव्रत ओर अणुव्रत को जेन सम्प्रदाय के साथ वाध दिया गया। श्रमण महावीर कोइ साम्प्रदायिक व्यक्ति नही थ। वे तो आत्मद्रष्टा महापुरुष थे। पर धीर-धीरे उनक पीछे जो एक परम्परा वनी उसने अणुव्रत को भी एक घेरे मे वाध दिया।

अणुव्रत शब्द का उत्कर्ष

सवसे पहली वात तो यह है कि आचार्य तुलसी ने अणुव्रत को जेन परम्परा के घेरे से निकालने का महत्त्वपूण काय किया है। दूसरे

शब्दो मे कहा जाए तो आचार्य तुलसी ने भगवान महावीर को भी एक घेरे से निकालने का प्रयत्न किया है। यह एक सयोग ही समझना चाहिय कि अणुव्रत का यह आन्दोलन उस समय शुरू हुआ जब अणुवम विकसित हो चुका था। विकसित ही नही हो चुका था उसका भयकर विस्फोट हमारी इस दुनिया म हो चुका था। इस दृष्टि से भी लोगा का ध्यान अणुवम के विनाशकारी स्वरूप से हटकर अणुव्रत के रचनात्मक रूप की ओर गया।

पचास वप पूर्व जब भारत म आजादी का उजाला प्रकाश फल रहा था, लोग आकाक्षाओ के विम्तार की दोड दाडने लगे थे, आचार्य तुलसी ने सयम ओर सदाचार का यह विचार देश के सामने प्रस्तुत किया। इस वात को स्वीकार करने म हिचक नहीं होनी चाहिए कि अणुव्रत का शब्द निर्युक्त एक सम्प्रदाय विशेप की भावधारा से जुडा हुआ था। अणुव्रत की पुरानी व्रत रचना मे भी इस सत्य को बहुत स्पष्टता से समझा जा सकता हे। पर जल्दी ही इस वात को समझ लिया गया कि व्रत-सयम के लिये किसी भी सम्प्रदाय की दीवार आवश्यक नहीं ह। इसीलिए अणुव्रत के साथ आदोलन शब्द को जोडकर एक नई अर्थ-ध्वनि को उद्गीत किया गया। धीरे-धीरे यह वात साफ हो गई कि अणुव्रत किसी सम्प्रदाय विशेप की सीमा मे आवद्ध नही हे।

अथ-संवेदना

अणुव्रत की व्रत की अपनी एक विशेप अर्थ सवेदना हे। जब तक आदमी म सयम का भाव उदित नही होता तव तक व्रत निष्पन्न नही हो सकता। वहुत सारे ज्ञानवादी लोग मानते ह कि सत्य का बोध ही पयाप्त हे। जव आदमी सत्य को पहचान लेता ह तो वह असत्य से अपने आप दूर हो जाता हे। पर कठिनाई यह हे सत्य एक अनत अस्तित्व हे। उसे परिपूर्ण रूप से जान लेना वहुत कठिन हे। फिर मनुष्य के पास तो इन्द्रियो का एक घेरा हे। इन्द्रिया अर्थ वोधक ता ह पर उनसे होने वाला ज्ञान अनन्त नही हो सकता। कुछ लोग मानते ह कि अनुभूति अपने आप मे एक पूर्ण सत्य हे। पर जब हम गहराई से देखते ह तो

पता लगता हे अनुभूति भी निरपेक्ष नही हो सकती। उसके साथ भी सापक्षता निश्चित रूप से जुडी हुइ हैं। आइस्टीन का सापेक्षवाद (Rélativity) इसी तथ्य की स्वीकृति हे। आदमी का ज्ञान चाहे कितना ही हो जाए अज्ञान का घेरा उससे ज्यादा व्यापक/विस्तृत हे। ऐसी स्थिति म यह समझने मे कठिनाइ नही होनी चाहिए कि सापेक्षता ही सत्य है, वही सम्यग् ज्ञान हे। इसीलिए सम्यग् ज्ञान के साथ सम्यग् दशन भी आवश्यक ह। ज्ञान ही पर्याप्त नही हे उसके साथ आस्था भी आवश्यक हे। आस्था का अर्थ हे अवचेतन मे पल रहे सस्कार। यदि सस्कार सही नहीं हे, अवचतन मन सही नहीं है तो अणुव्रत का कोइ अथ नही हे।

निदेशक तत्त्व

बहुत वार अणुव्रता को व्रता की एक सूचि या आचार संहिता मान लिया जाता हे। उसी के आधार पर कुछ विधि-निपेध खडे हो जाते हे। पर यह पयाप्त नही हे। यह सही हे कि विधि-निपेधा के विना व्रत की कोइ स्पष्ट-रूपरेखा नही वनती, पर सवसे महत्त्वपूर्ण वात हे वह तो अणुव्रत के निदेशक तत्त्व है। ये एक प्रकार से अणुव्रत का दशन पक्ष हे। जव तक निदेशक तत्त्वो को अच्छी तरह से नही समझ लिया जाता तव तक अणुव्रता को भी अच्छी तरह से नही समझा जा सकता। जब तक व्रत की वात को नही समझा जाता हे तव तक एक भिखारी भी अणुव्रती नहीं वन सकता। भले ही उसके पास कुछ भी धन नही हे, पर फिर भी वह सम्राट वनने का सपना ले सकता हे। दूसरी ओर जव व्रत को समझ लिया जाता हे तो अपार वेभव का स्वामी भी अणुव्रती वन सकता हे। असल म सम्यग् दर्शन ही आदमी के लिए व्रत की भूमिका वनती है।

अणुव्रत क लक्ष्य मे इस वात को स्पष्ट कर दिया गया ह कि जाति, रग, सम्प्रदाय, दश ओर भाषा के भेदभाव से ऊपर उठकर आत्म-सयम की पेरणा ही अणुव्रत हे। मैत्री, एकता, शाति ओर आध्यात्मिक-नैतिक उन्नयन ही इसका उद्देश्य हे। अहिसक समाज रचना इसका उद्देश्य हे, पर व्रत स्वीकार करने से पहले निदेशक तत्त्वो को समझना भी आवश्यक

हे। इसी दृष्टि से अणुव्रत के निदेशक तत्त्वो पर विचार करना अनुचित नही होगा। अणुव्रत क नो निदेशक तत्त्व हे।

सहयात्रा

यह समयना वहुत जरूरी हे कि इस दुनिया म मनुष्य अकला नहीं हे। उसका अस्तित्व समाज के साथ जुडा हुआ हे। केवल मनुष्य ही नही पाणी मात्र अम्तित्व की दृष्टि से मनुष्य क साथ जुडा हुआ हे। सवम एक ही प्राणधारा वहती हे। प्राणी ही नहीं जिसे साधारणतया अप्राण समया जाता हे वह भी मनुष्य के अस्तित्व के साथ जुडा हुआ ह। जव भी मनुष्य दूसरो के अस्तित्व को अस्वीकार करता हे तो उसका प्रतिफल उसे स्वय को ही भोगना पडता हे। वस्तुत ता वह स्वय के अस्तित्व का ही अस्वीकार हे। आज तो पयावरण की समझ ने पूरी दुनिया का एक साथ जोड दिया हे। उसका मूल दूसरा की अस्वीकृति मे हे। जो आदमी दूसरो के अस्तित्व को स्वीकार करेगा व उच्छृखल भोगोपभोग म लिप्त नही हा सकता। उसके मन मे ही करुणा की पवित्र धारा वह सकनी ह।

मनुष्य जाति रेकेव

हम मनुष्य की दृष्टि से देखे तो मनुष्य जाति एक ही हे। हर मनुष्य के शरीर मे एक ही प्रकार का लहू वह रहा हे। हर एक के पास एक जेसा शरीर एव इन्द्रिया प्राप्त हे। पर अपन अहकार के कारण भनुष्य अपने आपको स्पृश्य, अम्पृश्य, अमीर-गरीव, काला-गारा आदि अनेक विभक्तियो म वाट लेता हे। पर यह भेद अतत उसके अपने ही लिए दुखदायी वनता हे। दुनिया म जितने भी युद्ध फूटते हे उनम अहकार ही मुख्य कारण रहता हे। यदि मनुष्य को इस धरती पर शांति से रहना हे तो मानवीय एकता का समादर करना ही होगा। एक ही देश म प्रदेशा के विभाजन का लेकर जितने झगडे होते हे उससे मानव जाति को अकारण नुकसान होता हे। इसीलिए अणुव्रता को ग्रहण करने से पूव अणुव्रती को मानवीय एकता की पृष्ठभूमि का वहुत स्पष्टता स समझना जरूरी ह।

सह अस्तित्व की भावना

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। वह अकेला रह नही सकता। जब बहुत सारे लोग साथ रहते हे तो उन्हे एक दूसरे का सहना पडता हे, स्वीकार करना आवश्यक हो जाता हे। समाज मे वही आदमी सफल हो सकते हे जो एक दूसर के अस्तित्व को स्वीकार करते हे। यह सही हे कि आदमी को अपने अस्तित्व की रक्षा करनी पडती है, पर जब वह अपने अस्तित्व के लिए दूसरो को आहत/अनादृत करना शुरू कर देता हे तो विषमताए बढती हे। समता पूर्ण समाज की सह अस्तित्व एक आवश्यक शर्त है।

साम्प्रदायिक सद्भाव

'मुडे मुडे मतिभिन्ना' के अनुसार मत-भिन्नता एक अनिवार्य स्थिति हे, पर भेद के पीछे एक अभेद भी छिपा हुआ हे। वह अभेद ही धर्म हे। भेद सम्प्रदाय हे। सम्प्रदायो से इकार नही किया जा सकता। पर यदि उनके नीचे धर्म का धरातल नही रहे तो साम्प्रदायिक कट्टरता से भी बचा नही जा सकता। सम्प्रदायो के नाम पर आज तक जितना खून-खराबा हुआ है, उससे कोन अपरिचित है। इसीलिए अणुव्रत साम्प्रदायिक सोहाद पर विशेष बल देता हे। यह एक ऐसा धम हे जो सम्प्रदायो से ऊपर उठकर आचरण पर बल देता हे। अणुव्रत उपासना नही आचरण हे। किसी भी उपासना करने वाला व्यक्ति अणुव्रती बन सकता हे।

सतुलन

जीवन मे हिसा ओर अहिसा दोनो हे। अणुव्रत दोनो म एक सतुलन रेखा हे। जब हिसा उग्र हो जाती हे तो अहिसा निर्बल हो जाती हे। हिसा का सहना कायरता हे, पर सवाल हे हिसा का प्रतिकार केसे किया जाए? यदि हिसा से हिसा का प्रतिकार किया जाता ह तो उसकी प्रतिक्रिया भी हिसक हुए बिना नही रह सकती। दुनिया म आज तक शस्त्रो का जितना विकास हुआ हे वह हिसक प्रतिक्रिया के रूप मे ही हुआ हे। असल म शस्त्र का प्रतिकार शस्त्र नही हो सकता। उसका प्रतिकार तो

अशस्त्र ही हो सकता हे। अहिसा अशस्त्र ह। इसीलिए अणुव्रत अहिसात्मक पतिरोध म विश्वास करता हे।

सयम ही जीवन हे

असग्रह महाव्रत हे। हर आदमी असग्रही नहीं हो सकता। पर इच्छाओ का विस्तार भी अनत हो सकता ह। अनत इच्छाए अप्राप्य तो ह ही पर व्यक्ति के अपने लिए भी त्रासदायी ह। समाज भी उससे प्रभावित होता ही है। ऐसी स्थिति म इच्छाआ पर विराम लगाना व्यक्ति एव समाज दोना के लिए आवश्यक ह। इसीलिए अणुव्रती का अपने व्यक्तिगत सग्रह की सीमा करना आवश्यक हे। सग्रह के साथ-साथ उपभोग पर अकुश लगाना भी आवश्यक हे। वस्तु का उपभोग सग्रहवृत्ति को प्रवल वनाता है। उसी से अधिक उत्पादन की वृत्ति जागती है। उसी स प्रदूषण पेदा होता है। यही पृथ्वी के असतुलन का हेतु वनता ह। अत समस्त की सुरक्षा हेतु व्यक्ति के निजी सग्रह एव उसके उपभोग पर नियत्रण आवश्यक हे। जव अर्थ-नीति उपभोक्तावाद को प्रश्रय देने लगती ह तव उससे सयम फलित नहीं हो सकता। व्यक्ति-व्यक्ति का असयम ही अतत सृष्टि के प्रलय की परिस्थिति पेदा करता ह।

परस्परता

दुनिया का पूरा व्यवहार विश्वास के आधार पर चलता हे। चूंकि आदमी अकेला नही रह सकता अत उसे दूसरो के साथ सम्वन्ध बनाना ही पडता ह। यदि वह सम्वन्ध अप्रामाणिक हो जाता ह तो पूरा सामाजिक जीवन ही विघटित हो जाता हे। जव एक आदमी अविश्वसनीय व्यवहार करता हे तो दूसरे पर भी उसका प्रभाव पडता ह। ओर यह अविश्वसनीयता जव आम हो जाती ह तो पूरा समाज विकृत हो जाता हे। उसका प्रभाव राष्ट्र पर भी पडता ह। ऐसी स्थिति मे सहज ही दूसरे लोगा को अवसर मिलता हे ओर वे अपना पजा कस कर पूरे राष्ट्र को ही परतत्र वना देते हे।

साध्य-साधन मे शुद्धि

साध्य और साधन म एक अतर्क्य समीकरण हे। साध्य गलत हो तव तो सारी वात ही विगड जाती है, पर शुद्ध साधन के लिये भी शुद्ध साधनो की नितात आवश्यकता हे। यदि शुद्ध साधन नही रहत हे तो साध्य भी अशुद्ध हुए विना नहीं रह सकता। वहुत वार आदमी का साध्य शुद्ध रहता हे, पर वह साधनों की शुद्धि पर अडिग नहीं रहता। इससे परेशानिया घटती नही, वढती ही हे। महात्मा गाधी ने भी कहा था—योग्य साध्य तक पहुचने के लिये साधन भी योग्य होने चाहिए। यह वात एक श्रेष्ठ नेतिक सिद्धान्त ही नही वल्कि एक अत्यत व्यावहारिक राजनीति मालूम पडती हे। क्योकि जो साधन अच्छे नहीं होते वे स्वय साध्य का ही अत कर देते हे ओर उनम नई समस्याए तथा कठिनाइया उठ खडी होती हे। शुद्ध साध्य के लिए दड ओर लालच ये दोनो वाते गलत हे। उसके सामने स्वर्ग ओर नरक की वात भी सही नही वेठती। हमने देखा ह वहुत सारी जगह पर समता की स्थापना के लिए हिसा का सहारा लिया गया। उसमे एक वार विपमता भी मिट गइ तो उसने पुन सिर उठा लिया। इसीलिए अणुव्रत के निदेशक तत्त्वो के अन्तगत साध्य शुद्धि का विचार वहुत महत्त्वपूर्ण ह।

आध्यात्मिक आधार

अभय तटस्थता ओर सत्यनिष्ठा तो जीवन के मालिक गुण हे। ये केवल आध्यात्मिक सत्य ही नही ह अपितु व्यवहारिक जीवन म भी इनका वहुत वडा उपयोग हे। अभय के विना न ता अहिसा सधती हे ओर न सत्य। वास्तव मे सत्य ओर अहिसा जीवन की मूल धुरी हे। जिस आदमी मे अभय का विकास नही होता उसका जीवन वुझा हुआ-सा रहता हे। अभय जीवन की सफलता का मूल हे।

इसी प्रकार तटस्थता भी जीवन की एक वहुत वडी सफलता हे। सत्य तो सारी सृष्टि का आधार हे। जव सत्य का सूय छिप जाता हे तो पूरी दुनिया पर घोर अधेरा छा जाता हे। जीवन मे भी जव सत्य का लोप हो जाता हे तो पूरे जीवन को अधेरा घेर लेता है। सत्य ओर

भगवान दा नही है। इसीलिए जिन्हे भगवान को प्राप्त करना है उनके लिए तो सत्य निष्ठा एक अनिवाय शत है ही, पर दुनिया क व्यवहार के लिए भी उसकी परिपालना आवश्यक है। कभी-कभी ऐसा लगता हे आदमी का झूठ से सफलता मिल जाती है, पर वह सफलता बहुत लम्बे समय तक नही चल सकती है। लम्बे समय तक ता इमानदारी ही चलती हे। झूठ भी यदि चलता है तो उसके लिए सत्य की बैसाखी की जरूरत ह। विना सत्य निष्ठा के जीवन शून्य हे।

जब इन नो निदशक तत्त्वा का सम्यग् दशन व्यक्ति म जागता हे तभी वह अणुव्रती बन सकता ह। निश्चित ही व्रत से पहले सम्यग् दशन आवश्यक ही नहीं अनिवाय है। जब तक व्यक्ति इस दर्शन का नही समय लता तब तक व्रत उसके जीवन म उतर नहीं सकते। व्रत की धारणा ही अणुव्रत को दुनिया के पूर आन्दोलना स विशेष करती ह। आज दुनिया मे जितने भी आन्दोलन चलते है, उनके साथ केवल विचार ह। अणुव्रत के साथ विचार भी हे आर व्रत भी है। यही इसकी अपनी निजता हे।

आध्यात्मिक अभ्युदय का प्रतीक–अणुव्रत

अणुव्रत नेतिक जागरण का अभियान हे। पर वास्तव मे इसकी पृष्ठभूमि आध्यात्मिक है। नेतिकता ओर आध्यात्मिकता मे थोडा अतर हे। नेतिकता के केन्द्र मे समाज हे तो आध्यात्मिक के केन्द्र मे व्यक्ति हे। दुनिया के ज्यादातर लोग समाज के विपय मे ही सोचते रहे हे, इसलिए नेतिकता ही चर्चा मे ज्यादा रही हे। जहा अध्यात्म का सोच विकसित हुआ वहा नेतिकता की पृष्ठभूमि भी आध्यात्मिक रही।

राजनीति अध्यात्म प्रेरित हो

अणुव्रत का इतिहास भारत की आजादी के साथ जुडा हुआ हे। महात्मा गाधी के नेतृत्व मे आजादी की लडाइ लडी गई। भले ही समझने वाले लाग गाधीजी की महात्मता को समझते रहे हो, पर ज्यादातर लोग तो उन्हे राष्ट्रपिता के रूप मे ही जानते हे। यहा तक कि भारत के प्रथम प्रधानमत्री पडित नेहरू भी गाधीजी की आध्यात्मिक दृष्टि के वहुत कायल नही थे। आजादी के थोडे समय वाद ही गाधीजी का निधन हो गया। उमके वाद नेहरूजी ही भारत के सर्वाधिक लोकप्रिय नेता थे। उनकी दृष्टि मे समाज आर राजनीति ही प्रमुख तत्त्व थे। वे अध्यात्म के प्रति अप्रतिवद्ध थे। यहा तक कि नेहरूजी के साथी भी उनसे अध्यात्म की चचा करते सकुचाते थे। अणुव्रत प्रवतक आचायश्री तुलसी ने जब राष्ट्रपति डॉ राजेन्द्र प्रसाद से अणुव्रत की चर्चा की तो राष्ट्रपति ने कहा–यह वात आप पडितजी से भी करे। आचार्यश्री ने कहा–हमारा नेहरूजी से कोई परिचय नही ह। तो राष्ट्रपति ने कहा–यह कार्य म कर सकता हू। मै पंडितजी को पत्र लिखकर सूचित कर देता हू। आप

पंडितजी से वात अवश्य करें। ऐसा ही हुआ। आचार्यश्री का यह सुझाव केवल राष्ट्रपति ने ही नहीं दिया, मोरारजी देसाई ने भी आचार्यश्री से यही कहा था कि आप पंडित नेहरू से अध्यात्म के सम्बन्ध में बात करें। आचार्यश्री ने उनसे कहा—यह बात पंडितजी से आप क्यों नहीं करते हैं? आप तो सदा उनके साथ उठते बैठते हैं, तो यह बात तो उन्हें आप भी कह सकते हैं। मोरारजी ने कहा—हम उनसे यह बात नहीं कर सकते। आप एक संत हैं, अतः आप ही यह बात कर सकते हैं।

ऐसा ही संयोग बना कि आचार्यश्री से बात करने के बाद एक दिन पंडितजी ने अपने सार्वजनिक भाषण में अध्यात्म की चर्चा की। कई लोगों को इस संकेत का आश्चर्य हुआ। मोरारजी को भी आश्चर्य मिश्रित खुशी हुई। उन्होंने आचार्यश्री से कहलवाया कि आपका प्रयास सार्थक हुआ। आपसे बात करने के बाद पंडित नेहरू ने अपने सार्वजनिक भाषण में अध्यात्म की चर्चा की यह विशेष बात है। यह हमारे देश के लिए महत्त्वपूर्ण बात है। इसी संदर्भ में उसी समय ब्लिट्ज के सम्पादक श्री करंजिया ने पंडित नेहरू से एक भेंट वार्ता में पूछा—क्या जीवन की सांध्य-वेला में पंडित नेहरू में यह परिवर्तन आ गया है कि आप अपने भाषण में अध्यात्म की चर्चा करते हैं। पंडित नेहरू ने भी इस बात को स्वीकार किया कि नैतिकता के लिए आध्यात्मिक पृष्ठभूमि आवश्यक है। इस दृष्टि से अणुव्रत की अपनी एक महत्त्वपूर्ण भूमिका है। फिर तो वे अणुव्रत के अनेक कार्यक्रमों में भी शामिल हुए।

सेवा और साधना

वास्तव में आजादी के काल में भारत में अध्यात्म एवं समाज के बीच संवादिता का एक अभाव-सा महसूस होने लगा था। अध्यात्म के पुरुष जहां समाज से दूर क्रियाकांड या अपनी एकांत साधना में ही अध्यात्म को पहचानने लगे थे, वहां राजनीति के लोग अध्यात्म को हिन्दु, मुस्लिम, ईसाई आदि सम्प्रदाय मान कर उसे दूर से ही प्रणाम करने लगे थे। इसीलिए जब अणुव्रत आन्दोलन का प्रारंभ हुआ तो गांधीजी के अनन्य सहयोगी श्री किशोरलाल मश्रुवाला ने उस पर अपनी प्रथम

टिप्पणी मे कहा था—अणुव्रती सघ अध्यात्म के साथ सेवा का एक अद्भुत प्रयोग हे। अर्थ इसका यही ह कि साधारणतया समाज सेवा ओर अध्यात्म को दो विपरीत ध्रुव माना जाने लगा था। आचार्यश्री तुलसी ने इस विपरीतता मे एक समीकरण वनाया।

साम्यवाद को भी स्वीकार्य

आचार्य तुलसी एक महाव्रती थ। महाव्रत अध्यात्म का उच्चतम शिखर हे। उसका आरोहण हर व्यक्ति के लिए सभव नही हो सकता। इसीलिए भगवान महावीर ने एक सामान्य गृहस्थ के लिए अणुव्रत शब्द दिया। आचार्य तुलसी ने उसी शब्द को एक व्यापक अर्थवत्ता देने के लिये अणुव्रत आन्दोलन का प्रवर्तन किया। चूंकि साम्यवादी लोग अध्यात्म मे विश्वास नही करते, अत उन लोगो ने प्रारभ म अणुव्रत के लिए भी अपनी असहमति जताते हुए कहा—हमारा तो विरोध ही बुर्जुआवादी विचारो स हे। इसलिए हम अणुव्रत को भी स्वीकार नही कर सकते। आचार्यश्री ने उन्ह समझाया—आपका विरोध सस्थागत धर्म से हो सकता हे पर क्या आप सत्य ओर पामाणिकता को भी अस्वीकृत कर सकते हे? क्या आप मानवीय दृष्टि को नही मानते? उन्होने उत्तर दिया—इनको तो हम मानते ह। आचायश्री न कहा—यही अणुव्रत हे, यही अध्यात्म हे। अणुव्रत कोई सम्प्रदाय नहीं हे। यह तो सव धर्मो मे स्वीकृत सदाचार की एक आचार-सहिता ह यह शाश्वत धर्म हे। इसकी अपेक्षा पहले भी रही, आज भी हे तथा आगे भी रहेगी।

सयम ही जीवन हे

अध्यात्म का सम्प्रदाय से वचाने के लिए ही आचार्यश्री ने अणुव्रत का घोप दिया—'सयम खलु जीवनम् सयम ही जीवन है'। यह अणुव्रत की एक ऐसी सार्वजनिक स्वीकृति थी जिसने अणुव्रत को सब धर्म सम्प्रदायो के साय-साथ सभी राजनतिक विचारधाराओ के लिए भी सुगम वना दिया। पूना-सतारा की यात्रा करते हुए एक बार आचायश्री ने अपने प्रवचन मे अणुव्रत के इस सदाचारमय सयम रूप धम की विस्तार से व्याख्या की तो एक साम्यवादी कार्यकर्ता आगे आया ओर वोला यदि

यही अध्यात्म है तो म इसे स्वीकार करता हू। आज तक मने अध्यात्म का विरोध किया हे पर आज म अणुव्रती के रूप मे अपनी आध्यात्मिक आस्था को प्रकट करता हू।

सम्प्रदाय-समन्वय

यह सही हे कि अध्यात्म आर नेतिकता के माग आगे आकर अलग-अलग हो जात ह पर यह भी इतना ही सही हे कि एक सीमा तक ये दोना समानान्तर रेखाओ की तरह साथ-साथ भी चल सकते हे। आचामश्री ने अणुव्रत को इसी रूप मे प्रस्तुति दी। यही कारण था जिससे विभिन्न धम-सम्प्रदायो के साधु-सत भी एक मच पर उपस्थित होन लगे। पहल ऐसा नही था। वैदिक, बाद्ध ओर जैन सतो के एक मच पर आने की कल्पना ही दुरुह लगती थी। अणुव्रत ने उस दूरी को पाटने का काम किया। बल्कि अणुव्रत एक सम्प्रदायमुक्त धम का मच बन गया। अणुव्रत के कारण ही जन आचार्यो के साथ-साथ बोद्ध लामाओ तथा वदिक धर्म के शिखर पुरुप शकराचार्यो का भी सहावस्थान हो सका। अणुव्रत प्रवर्तक आचायश्री तुलसी उस सहावस्थान के एक प्रतीक पुरुप बन गए।

दिल्ली म एक बार हिन्दु धर्म के मच पर अनेक शकराचार्यो क साथ-साथ अन्य प्रमुख लोग उपस्थित हो रह थे। आयोजन के व्यवस्थापको ने तत्कालीन राष्ट्रपति श्री राधाकृष्णन से उस आयोजन मे उपस्थित होने का आग्रह किया। राष्ट्रपति ने आयोजन की असाम्प्रदायिक दृष्टि का आकलन करते हुए पूछा—क्या इस आयोजन म आचार्य तुलसी भी शामिल हो रहे हे। आयोजको ने आचार्य तुलसी की स्वीकृति तो प्राप्त नहीं की थी। पर उन्हे विश्वास था कि वे आचार्यश्री को इसके लिए राजी कर लेगे। इसी सम्भावना को ध्यान म रखकर उन्होने कहा—हा आचाय तुलसी आयोजन मे सम्मिलत हो रहे हे। इस स्पष्टीकरण के बाद राष्ट्रपतिजी ने आयोजन मे उपस्थित होने की स्वीकृति प्रदान की। आयोजक लोग हर्पित होकर आचार्य तुलसी क पास आय। उनक हर्पित हाने का यह एक पुष्टकारण भी था कि पहली बार एक धर्मसभा म राष्ट्रपतिजी की उपस्थिति सभव हो रही थी। पर जब वे आचार्य तुलसी के पास पहुचे

तक आचार्यश्री दिल्ली से राजस्थान की ओर प्रस्थान कर चुके थे। ायश्री के आगे की पदयात्रा के विश्राम स्थलो की भी घोषणा हो थी। अत आपने इस आयोजन मे उपस्थित होने मे अपनी असमथता : की। आयोजको क लिए तो यह एक प्रतिष्ठा का प्रश्न यन गया। सकोच अनुभव होने लगा कि अव वे राष्ट्रपति को क्या जवाव उन्होने अत्यन्त विनम्रभाव से अपने सकट का परिचय विवरण दिया अणुव्रत अनुशास्ता आचार्यश्री तुलसी को भी अपनी याा का मुख कर उस आयोजन मे उपस्थित होना स्वीकार करना पडा। ओर इस र एक उत्कट असाम्प्रदायिक भाव अपने आप झलकने लगा। वास्तव सिक्ख, ईसाई, मुसलमान तथा अन्य अनक धर्म सम्प्रदायो को एक पर एकत्र होने मे अणुव्रत का अपना एक उल्लेख्य अभिक्रम रहा इंडियन नेशनल चर्च के फादर विलियम ने तो न केवल देश मे अपितु विदेशो मे भी अणुव्रत की चर्चा की। अनेक हिन्दु, सिख व ामान धर्मगुरुओ के अणुव्रत के प्रचार मे अपनी सुदृढ भूमिका निभाई।

अणुव्रत का पचास वर्षो का पूरा इतिहास राष्ट्र के शिखर-पुरुपो सम्पर्क सुरभि से महक रहा हे। आचार्य विनोवा भावे ने जहा अणुव्रत सतो एव कायकताआ के सगम स्थल की सभावनाओ के रूप म । वहा श्री जयप्रकाश नारायण ने इसे अहिसक शक्तिया के ध्रुवीकरण मच माना। तमिलनाडू के अन्नादुरे विश्वविद्यालय के प्रमुख ने इसे णी ओर उत्तरी भापाओ का सगम स्थल माना तो लोगोवाल ने इसे राष्ट्रीयता का प्रतीक माना। राष्ट्र के जीवन मे कभी ऐसे क्षण भी े जव किसी प्रश्न पर ससद मे गतिरोध उत्पन्न हुआ तो अणुव्रत समन्वयवादी मत्र से ही उसे सुलझाया गया। राष्ट्र के ऐसे कम ही ख व्यक्ति रहे हे जिनको अणुव्रत से परिचय नही हुआ। वल्कि कई ान सभाआ ने तो अणुव्रत के सदर्भ मे प्रशसा प्रस्ताव भी पारित ए। अणुव्रती की अध्यात्म निष्ठा से ही सभी राजनेतिक दलो का सद्भाव त हुआ।

अध्यात्म की सर्वोत्कृष्ट उपलब्धि हे अभेद। सम्प्रदाया की अस्मिता त वार भेद को उभार कर कुछ विभक्तिया खडी कर देती हे। ऐसी

ही एक विभक्ति हे छूत ओर अछूत की। इस विभक्ति स मुख्य रूप से वे व्यक्ति ही दुखी होते हे त्रस्त होते है जो दुर्बल हाते ह। अणुव्रत की ओर से निरतर ऐसे प्रयत्न होते रहे जिससे कमजोर समझ जाने वाले वग को प्रोत्साहन मिला व आत्म विश्वास जागा। यह प्रयास उनके सस्कार निर्माण की दृष्टि से किया गया। यह सही वात हे कि अध्यात्म के नाम पर कुछ कमजोर लोगो के साथ वहुत विपम व्यवहार हुआ। उन लोगो को पीढियो तक हीन माना जाता रहा। उनके साथ सामाजिक न्याय भी नहीं हुआ। अणुव्रत ने उन लोगा के वीच भी कुछ ठोस कार्य किया।

आतरिक परिवर्तन

नेतिक जागरण का काय कोइ मामूली काम नही हे। दुनिया में यदि सवसे कठिन कोई काम हे तो मनुष्य के आन्तरिक परिवतन का काम हे। अणुव्रत कभी तीव्रता से तो कभी मदता से निरतर यह कार्य करता आ रहा हे। इस अर्से मे देश म नेतिकता के अनेक सगठन खडे हुए, पर वे दीर्घजीवी नही वन पाये। अणुव्रत ने अपना पचास वर्ष का उज्जवल इतिहास वनाया। इसका मुख्य कारण अणुव्रत प्रवर्तक आचायश्री तुलसी का आध्यात्मिक व्यक्तित्व तो रहा ही हे, पर उनके साथ सकडो त्यागी सता-महात्माओ का सहयोग भी रहा। उनकी आध्यात्मिक तपस्या से ही यह सभव हो पाया कि नेतिकता का अभियान प्राणवान रह सका। साधारण आदमी थोडी-सी कठिनाई म ही घवरा जाता हे आर उसका सतुलन विगड जाता हे। ऐसी स्थिति मे आत्मवान् लाग ही उसका सहारा वन सकते ह। आत्मवान् लोग न केवल स्वय सतुलित रहते हे अपितु दूसरो के सतुलन मे भी सहयोगी वन सकते ह। आचार्यश्री ने एक सम्प्रदाय के आचार्य रहते हुए भी अणुव्रत को सम्प्रदाय नही वनाया। उन्हान तेरापथ की अध्यात्म दृष्टि से अणुव्रत का प्रवर्तन, प्रवर्धन किया।

राजनीति का सोच रहता ह कि शासन व्यवस्था सुधर जाती हे तो आदमी अपने आप नेतिक हो जाता हे। अध्यात्म का सोच ह कि आदमी अन्दर से वदल जाता ह तो शासन व्यवस्था अपने आप स्वच्छ

वन जाती हे। यह सही वात हे कि आदमी के नेतिक रहने मे शासन की सुव्यवस्था वहुत महत्त्वपूण हे। पर यह वात उससे भी ज्यादा सही हे कि अन्दर स वदला हुआ व्यक्ति ही स्वच्छ शासन दे सकता हे तथा अन्दर से वदले हुए व्यक्ति ही शासन की स्वच्छता की सुरक्षा कर सकते ह। राज्य का शासन दडवल के आधार पर चलता हे। दडवल स बुराइया मिटती नहीं अपितु भूमिगत हो जाती हे। अध्यात्म वल से बुराइया अपने आप वाहर निकल आती हैं। समाज की धारणा म जीने वाला व्यक्ति सामने तो कोई अन्याय नही करता, पर गुप्त रूप मे वह वडे से वडा अनथ कर डालता हे। आध्यात्मिक व्यक्ति न दिन मे अन्याय कर सकता हे न रात मे अन्याय कर सकता हे। न एकान्त मे अन्याय कर सकता हे ओर न सवके वीच अन्याय कर सकता हे। यहा तक कि वह नींद मे स्वप्न मे भी अन्याय नहीं कर सकता।

व्यवस्था चाहे कैसी ही क्यो न हो, उसकी सफलता इसी वात पर निभर करती है कि उसे सचालित करने वाला व्यक्ति केसा हे। अणुव्रत का यह मतव्य नहीं हे कि शासन व्यवस्था सर्वथा वेकाम हो जायेगी। मार्क्स ने एक स्टेटलेस स्टेट की कल्पना की थी। पर वह सफल नही हो पाई। भविष्य मे भी उस तरह का प्रयोग यदि सफल हो सकता हे तो योगलिक-युग की ही वात होगी। यागलिक युग मे जीने वाले व्यक्तियों का जीवन स्वत ही अध्यात्ममय होता हे। उनकी इच्छाए इतनी अल्प होती हे कि उसे इतिहास पृष्ठो मे नही समेटा जा सकता। हा' यह सभव हे कि अणुव्रत से भावित व्यक्ति शासन का नियामक होता हे या शासन द्वारा नियंत्रित व्यक्ति अणुव्रत से भावित होते हे तो समाज व्यवस्था अपने आप सुघड वन जाती हे। इसीलिए अणुव्रत आतरिक परिवर्तन पर वल देता हे।

नैतिकता का ज्योति-दीप

अणुव्रत का नाम सामने आता है लगता है जैसे उमडती हुई आधी का खाली हाथो स रोकने का प्रयास किया जा रहा है। अणुव्रत का नाम सामने आता है तो लगता है उफनती हुइ नदी की बाढ मे ककर फैंक कर उसे रोकने का प्रयास किया जा रहा हे। अणुव्रत का नाम सामने आता हे तो लगता हे अधेरे क महासमुद्र मे कापती हुइ दीपशिखा की नोका तूफानो से टकरा टकरा कर भी आगे वढ रही ह।

भोतिकता की आधी इतनी तीव्र हे कि उसमे भले ही कुछ सीमेन्ट के महानगर खडे रह सकते ह पर गावो की सभ्यता की प्रतीक झापडिया तिनके-तिनके होकर विखर रही ह। यह सही ह कि महानगरीय सभ्यता मे उद्योगो का बहुत वडा विकास हो रहा है, पर उससे जो पयावरण क्षत-विक्षित हो रहा ह उसकी रक्षा कौन करेगा? भले ही कुछ बहुराष्ट्रीय कम्पनिया की वेरोक बाढ आ जाए पर गरीवी के सैलाव को कौन रोकेगा? भले ही कुछ चमकीले उपग्रह तेज रोशनी फेला सकते हे, पर ठडे चूल्हो ओर भूखे पटा को इधन कोन देगा?

अणुव्रत उत्तर हे

इन्ही सब प्रश्नो का उत्तर अणुव्रत म समाया हुआ हे। आधी को यदि सव कुछ विनिष्ट करने की खुली छूट हो तो विनाश ही दुनिया का भविष्य होगा। उसे राका नही जा सकता। यदि उसे रोकने का कोई विकल्प खडा हो सकता हे तो व्यक्ति के विश्वास ओर सकल्प को ही जगाना होगा। ऐसा नहीं ह कि प्रलय काल आज ही आने वाला हे। जव प्रलय काल आ गया या आ जायेगा तो धरती पर कोई अकुर

खडा नहीं रह सकेगा। पर अभी जो कुछ हरियाली दिखाई दे रही है वह प्रलय की नहीं सृजन की ही सूचना है। अवश्य अमरीकी सभ्यता पूरी दुनिया पर छा रही ह, पर फिर भी हर राष्ट्र ओर सभ्यता की अपनी अस्मिता भी खडी ह। वल्कि अमरीकी सभ्यता ही अपने आपके लिए चुनोती वनती जा रही हे। ऐसी स्थिति म हम जीवन के आध्यात्मिक मूल्यो को जगाने के लिए अणुव्रत का सहारा लेना ही होगा।

जीने की वात

यह सही है कि अणुव्रत कोई प्रचार-प्रसार की वात नही है वह ता जीने की वात हे। अणुव्रत को जीना ही उसका प्रचार-प्रसार है। पर फिर भी विचार और वाणी मनुष्य की पहचान है। आदमी केवल चिंतन ही नहीं करता वह उसे अभिव्यक्त भी कर सकता है। अन्य प्राणियो के पास यह सुविधा नहीं हे। मनुष्य के पास यदि विचार हे तो उसे अभिव्यक्त करने की सुविधा है। यद्यपि इस सुविधा ने बहुत सारी कठिनाइया पेदा कर दी हे। अखबारो से लेकर सिनेमा ओर टेलीविजन ने अभिव्यक्ति-स्वतन्त्रता के नाम पर ऐसा सन्देश देना प्रारम्भ कर दिया हे जिसमे मानवीय मूल्य तीव्रता से ध्वस्त हो रहे हे। ऐसे क्षणो म अभिव्यक्ति एक वरदान नहीं वन कर अभिशाप वनती जा रही है।

नैतिकता को चुनोतिया

सचमुच नेतिकता को आज अनेकानेक चुनोतिया ह। पहली चुनौती तो व्यक्ति की अपनी ही आस्था हे। आदमी सोचता हे जो कुछ दीखता हे वही सत्य हे। इसलिए यावज्जीवेत् सुख जीवेत्--जव तक जीना हे सुख से जीओ। सुख को खरीदने के लिए ऋण भी करना पडे तो करो, पर सुख का मत छोडो। कल क्या होने वाला हे इसकी चिता नहीं है। आज सुख से वीते यही अभीप्रेत हे। यह ठीक हे कि आज को दुखमय नही वनाया जाय, पर आज का सुख यदि आने वाले अनेक दिनो पर ऋण लाद जाता हे तो वह सुख नही हे, दु ख ही हे। आज पूरे भारत देश पर कितना ऋण हे? ऋण लिया तो इसलिए गया था कि कल

को सुखमय वनाया जाए। पर जव उस आज के लिए ही खर्च कर दिया गया तो कल कितना भारी होता जा रहा है।

यह वात केवल भारत जसे गरीव दश के लिए ही नहीं है अमेरिका जसे विकसित राष्ट्रा के भी अधिकतर नागरिक ऋण युक्त ह। इससे कुछ एक वड लोग ता सम्पत्तिशाली वनते हैं, पर जीवन जीने की सही दृष्टि नही होने क कारण य न कवल दूसरा पर गरीवी लादते है पर स्वय भी विलास म डूव रहे ह। निश्चय ही विलासिया का स्वय अत भी वहुत ही दुखमय एव करुण होता है। वे अपने सुख के लिए पयावरण को इतना विकृत कर जाते हैं कि पूरा भविष्य ही उनके ऋण के वोझ से दव जाता ह। इसीलिए यावज्जीवेत्त सुख जीवेन् की आस्था व्यक्ति के अपने हित मे भी नहीं हे।

इस दुनिया म मनुष्य अकेला नही है। यहा न केवल पाच अरव मनुष्य ही हे अपितु अनन्त छोटे-मोटे प्राणी भी है। मनुष्य का जीवन उन सवस जुडा हुआ हे। भले ही अपने अज्ञान के कारण एक वार आदमी दूसरो की उपेक्षा कर दे, पर अतत उसे समझना होगा कि अपने सुख के लिए हमे अन्य प्राणिया के विनाश का अधिकार नहीं है, अहिसा की यह उदात्त भावना ही अणुव्रत के प्राण प्रदेश हे।

अहिसा ही विकल्प है

हिसा जव-जव उद्दाम हुई ह विश्व शांति को खतरा पेदा हुआ हे। आज भी विश्व शांति का प्रश्न वडा विकट वना हुआ हे। आश्चर्य तो यह हे कि इतने युद्ध लडने के वाद भी मनुष्य युद्ध से विरत नहीं हुआ हे। वह शस्त्र मे ही शांति खोज रहा ह। इसीलिए आज शस्त्र निर्माण आर शस्त्र शिक्षा के प्रति जो अभिरुचि हे वह अहिसा के प्रति नही ह। यही कारण ह कि आज शस्त्रो के निर्माण प्रशिक्षण म विपुल अर्थ, समय और श्रम नियोजन किया जा रहा हे जवकि अहिसा के समर्थन एव प्रचार प्रसार पर उसका शताश भी खर्च नियोजित किया जा रहा हे। पर यह सत्य हे कि वदूक की नाल से कभी शाति नही निकल सकती।

यह खुशी की वात हे कि कुछ लोगो का ध्यान इस ओर गया हे ओर कभी-कभी अहिसा के प्रशिक्षण के स्वर भी उठने लगे हे। अभी-अभी १६ फरवरी १९९१ को राजसमन्द मे इस सन्दर्भ मे एक अन्तर्राष्ट्रीय कान्फ्रेस आचार्यश्री तुलसी के सान्निध्य मे आयोजित हुई थी। उसमे पूरी दुनिया से समागत लोगो ने अहिसा के प्रशिक्षण पर अपनी सहमति प्रकट की।

पर अहिसा पर चर्चा तो अनेक वार होती रहती हे, अनेक सम्मेलन भी इस पर होते हे। पर उसके प्रशिक्षण की विधि पर कोई चर्चा नही हुई। यह भी खुशी की वात हे कि कुछ विश्वविद्यालयो ने इस प्रशिक्षण म भी अभिरुचि प्रकट की हे। जेन विश्व भारती लाडनू तथा अजमेर विश्वविद्यालय इस दृष्टि से धन्यता के पात्र हे कि उन्होने अपने विश्वविद्यालयो मे अहिसा के प्रशिक्षण को मान्यता प्रदान की हे। वेसे अजमेर विश्वविद्यालय मे तो पिछले वर्ष ही यह कार्य शुरू हो गया था पर इस वर्ष एम ए के कोर्स द्वितीय वर्ष म भी इसे शामिल किया जा रहा हे।

शाति की खोज

इसम कोई सन्देह नही कि आज शांति को अत्यन्त आकुलता से चाहा जा रहा हे। शान्ति मनुष्य की सवसे बडी चाह हे। सभी धर्मो का मूल लक्ष्य शांति ही हे। पर शांति केवल चाहने से ही नही आ सकेगी। चाह के साथ-साथ जब तक मनुष्य स्वय को तदनुरूप नही ढालेगा तव-तक वह आकाश-कुसुम की तरह ही रहेगी। इसीलिए अणुव्रत के अन्तर्गत अहिसा प्रशिक्षण का एक पूरा अध्याय जुडा हुआ है। अणुव्रत एक विविध आयामी अभियान हे। अणुव्रत केवल विचार-मात्र नही हे जो सभा-सम्मेलनो सेमिनारो मे ही गूजे ओर शात हो जाए। यह तो एक सकल्प का अभियान हे। व्रत का अभियान हे। व्रत आदमी को अन्दर से रूपातरित करता हे। आदमी को अन्दर से वदलने के लिए प्रेक्षाध्यान का प्रयोग शुरू हुआ। यद्यपि सकल्प अणुव्रत की अपनी विशिष्ट पहचान हे। पर सकल्प को ग्रहण करने मात्र से काम नही वन जाता। सकल्प का सघनता देने के लिए ही प्रेक्षा ध्यान की पद्धति भी सामने आयी।

प्रेक्षा का कायोत्सर्ग से लेकर अनुप्रेक्षा तक का एक नियोजित कोर्स हे, इसकी एक सुनिश्चित विधि हे। देश एव विदेश में अनेक क्षेत्रों में प्रेक्षाध्यान के केन्द्र कार्य कर रहे हे। उनमे साम्प्रदायिक मान्यताआ से मुक्त चरित्र-धर्म का प्रशिक्षण दिया जाता हे। तनाव हमारे आज क आद्योगिक सभ्यता की सवसे वडी समस्या हे। इस समस्या से निपटने के लिए ही अणुव्रत प्रवर्तक आचार्यश्री तुलसी की प्रेरणा से आचायश्री महाप्रज्ञ ने इस पद्धति को एक सुनिश्चित रूपाकार प्रदान किया। वास्तव मे प्रक्षाध्यान अणुव्रत के प्रायोगिक प्रशिक्षण का ही दूसरा नाम हे।

प्रेक्षा केन्द्रो मे योग्य, अनुभवी, प्रशिक्षका द्वारा न केवल समय समय पर शिविर ही आयोजित होते हे, अपितु नित्य साधना क्रम भी चलता हे। योगिक क्रियाए, प्राणायाम, कायोत्सर्ग, ध्यान, अनुप्रेक्षा आदि के प्रयागा से न केवल मनुष्य के तन के तनाव को दूर किया जाता ह अपितु मन के तनावो से भी निजात दिलाइ जाती हे।

प्रेक्षा मे तनाव मुक्ति के साथ-साथ स्वस्थ जीवन, स्मृति विकास, अनिद्रा रोग, डायबीटीज निवारण, हृदय रोग निवारण आदि का प्रयोग भी मिलता हे। समाज के सभी क्षेत्रो के लोगो मे प्रेक्षा ध्यान के प्रति रुचि जागृत करने के उद्देश्य से प्रवचनो का भी आयोजन किया जाता हे। जिनके कुछ विपय इस प्रकार हे—स्वभाव केसे वदले? तन की सुविधा-मन की दुविधा, स्वस्थ जीवन शेली के स्वर्ण सूत्र, व्यस्त जीवन मे शांति की खोज, दु ख मुक्ति का माग, परिवार मे शाति केसे आए आदि-आदि।

जीवन-विज्ञान

प्रेक्षाध्यान को शिक्षा से जोडने के लिए जीवन विज्ञान के सघन प्रयत्न भी निरतर चलते रहते हे। हजारो हजारो शिक्षको-छात्रो ने जहा प्रेक्षा-धाम मे आकर प्रेक्षा एव जीवन विज्ञान का प्रशिक्षण प्राप्त किया। वहा प्रशिक्षित साधक निरतर वाहर जाकर भी ध्यान का प्रशिक्षण प्रदान करते हे। आज के युग मे शिक्षा को मूल्यपरक बनाने की जोरदार चर्चा हे। पर शिक्षा मूल्यपरक बनी हे या नही यह तो नहीं कहा जा सकता

वह मूल्यवती अवश्य वन गइ हे। शिक्षकों के भारी वेतन, पुस्तको से भरे भारी वेगो का वोझ एव ऊपरी ताम-जाम ने शिक्षा को इतना वोझिल वना दिया है कि वह आम आदमी की पहुच से दूर होती जा रही हे। तिस पर अपसस्कृति का आक्रमण छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य को चोपट करने मे आग मे घी का काम कर रहा हे। ऐसी स्थिति म प्रेक्षाध्यान, जीवन विज्ञान विना किसी आथिक भार के मनुष्य को मनुष्य वनाने का प्रयत्न कर रहा है।

कुछ लोग अणुव्रत को केवल उपदेश ओर प्रचार की एक वात ही मानते है। पर अणुव्रत के अन्तगत अनेक पहलुओ से कितना रचनात्मक कार्य हो रहा है इसकी जानकारी वहुत लोगो को नही हे। वास्तव म विभिन्न पहलू अणुव्रत रो इतने सघन रूप से जुडे हुए हे कि हजारा हजार लोग उससे लाभान्वित हा रहे ह। अणुव्रत के अन्तगत चलने वाले समग्र कार्यक्रम की जानकारी देने के लिये ही, अणुव्रत अनुशास्ता महाप्रज्ञ के निर्देशन मे समानान्तर रूप स चलने वाली गतिविधियो की जानकारी सव लाग पा सके, इस दृष्टि से विपुल साहित्य का सर्जन हो रहा हे। अनेक पत्र-पत्रिकाए भी कार्य कर रही हे।

उजला अतीत

अणुव्रत का एक लम्वा ओर उजला अतीत हे। सुखद ओर उत्फुल्ल वतमान हे तथा आशा और आकाक्षा भरा सुनहला भविष्य है।

लम्वा इसलिए कि पिछली आधी शताब्दी से यह निरतर प्रवर्तमान हे। इस कालखड म अनेक नैतिक आन्दोलन सामने आये। वडे जोर-शोर से गरजे वरसे, पर धीरे-धीरे शात हो गए। आज उनका नाम लेने वाला भी कोइ नही है। यह सही हे कि अणुव्रत के वादल घटा वनकर नही मडराये। पर यह भी सही हे कि इसमे एक अविरल गतिमयता रही हे। अणुव्रत की आस्था है, तज दोडने वाले जल्दी थकते हे, धीरे चलने वाले ज्यादा रास्ता तय करते है।

उजला इसलिए कि अणुव्रत के साथ राप्ट्र के वडे से वडे तथा छाटे से छोटे लोग भी जुड रहे ह। इसने जहा राष्ट्रपति भवन के दरवाजे

तक दस्तक दी है, वहा यह आदिवासियो की झोपडिया तक भी पहुचा। हर वर्ग, वण तथा सम्प्रदाए के लोगो ने इसम भाग लिया है। अछूत समझ लोगा ने भी जहा इससे लाभ उठाया हे वहा उच्च जाति क लोग भी लाभान्वित हुए हे। विभिन्न सम्प्रदायो के लोगो ने भी इसके प्रचार मे महत्त्वपूण भूमिका का निर्वाह किया। असल मे असाम्प्रदायिक दृष्टि ही इस आदोलन का प्राणतत्त्व हे। उत्तर-दक्षिण, पूर्व-पश्चिम पूरे भारत म, वल्कि विदेशो म भी इसका स्वागत हुआ हे। इसके हर कार्यक्रम की अपनी गरिमा रही हे। अणुव्रत की चादर पर किसी प्रकार का कोई काला धव्वा नही हे।

अणुव्रत का प्रारभ वहुत थोडे लोगो से हुआ था। यही सोचा गया था कि कुछ ऐसे आदमी सामने आए जिन्हे प्रतिमान के रूप मे प्रस्तुत किया जा सके। पर धीरे-धीरे यह कारवा वढता गया ओर लाखो-लाख लोगो ने इस पथ पर चलना स्वीकार किया।

आज तो ऐसा हो गया हे जेसे अणव्रत नेतिकता का पर्याय वन गया हे। राजनेतिक पर्टियो के तुमुलनाद मे अणुव्रत ने अपनी एक आवाज बनाई हे। आज राजनीति जीवन पर इतनी हावी हो गई हे कि उससे जीवन का हर क्षेत्र प्रभावित हे। पर अणुव्रत ने राजनीति मे अपना प्रभाव पेदा किया हे। यही कारण हे अणुव्रत के मच पर हर पार्टियो क लोग आते रहे हे। यह एक सुखद वात हे कि सभी एक स्वर से इसकी उपयोगिता का स्वीकार करते हे।

आज धम ओर नेतिकता का अनुवध भी टूट-सा गया हे। आदमी धार्मिक तो है, पर नेतिक नही हे। अणुव्रत ने इम अनुवध को मजबूत वनाने का प्रयास किया हे। हर धर्म के विशिष्ट लोगो ने इस असाम्प्रदायिक अभियान का न केवल स्वागत ही किया हे अपितु इसके प्रचार-प्रसार मे भी सहयोग दिया हे।

अणुव्रत ने जीवन-विज्ञान के रूप मे शिक्षा ओर अध्यात्म मे एक सेतुवध का काम किया ह। इस दृष्टि से न केवल शिक्षा का एक प्रारूप लेकर शिक्षा विभाग के दरवाजे पर दस्तक दी गइ हे अपितु लाखो-लाख शिक्षको एव छात्रो को भी इस पक्ष मे भागीदार वनाया गया हे। इस

तरह अणुव्रत के चारो ओर उत्साह एव उत्फुल्लता का आभावलय वन रहा हे।

पर सबसे वडी उपलब्धि ता यह हे कि अणुव्रत ने आशा ओर आकाक्षा के नये क्षितिज की ओर इशारा किया हे। असल म साधन शुद्धि की साधना ने ही इस आदालन को इस मुकाम पर पहुचाया हे। आज के भौतिक अभिसिद्धियो के युग मे अध्यात्मशक्ति को मुखर वनाने का यह मूल्यवान प्रयास हे। आज जीवन शेली ही ऐसी वन गई हे कि नेतिक शब्द ही अप्रासंगिक वनता जा रहा हे। आज ऐसा वडे से वडा आदमी भी नजर नहीं आता जो नैतिक आस्था से प्रतिवद्ध हो। हर व्यवसाय हिसा ओर अपराध से जुड गया हे। धम का क्षेत्र भी इस सघातिक व्याधि से आक्रान्त है। सम्प्रदायो ने आज ऐसा घेरा वना दिया हे कि मानव-समाज कटा-फटा सा लग रहा हे। लोग तीव्र घृणा से भरे हुए हे। ऐसी अमा की घोर तमिस्रा म अणुव्रत का यह दीप जल रहा हे। यही लोगों के लिए एक आशा का सकेत हे।

अणुव्रत अनुशास्ता आज किसी सम्प्रदाय विशेप के प्रतिनिधि ही नहीं रह गए, अपितु लोगो को उनमें अहिसक नेतृत्व की सम्भावना नजर आती हे। इस तरह अणुव्रत के सामने एक सुनहला तथा सम्भावना भरा भविष्य हे। अणुव्रत परिवार के रूप मे अणुव्रत अनुशास्ता ने अहिसक समाज रचना का एक सकल्प हम लोगो को दिया हे, उसे हमे साकार करके दिखाना हे।

सर्वगामी अभियान

गावा से लेकर अन्तर्राष्ट्र तक इसका कार्य क्षेत्र हे। इसीलिए अणुव्रत के सदर्भ मे गावो के लिए भी आदर्श गाव बनाने की प्रयोजना सामने आई हे। अणुव्रत अनुशास्ता का लाडनू प्रवास गावो की दृष्टि से बहुत ही महत्त्वपूण रहा। यद्यपि लाडनू म राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के भी कइ आयोजन हुए तथा होने जा रहे ह। पर चूंकि अणुव्रत एक समग्र जीवन दृष्टि है इसलिए गाव भी उससे ओझल हो नही सकते। विकास-परिपद् में भी इस वात की पूरी व्याख्या-व्यवस्था हुई। कुछ गावो

की अणुव्रत ग्राम वनाने का प्रयत्न शुरू किया है। लाडनू के पार्श्वस्थित कासण गाव की विशेप चर्चा की जा रही है।

कासण गाव १५० परिवारो की आवादी का एक छोटा-सा गाव है। वहा सवमे पहल सर्वेक्षण किया गया। वहा जाट तथा परिगणीत जाति के लोग विशेप रूप स निवास करते ह। वहा शराव का कोई ठेका नही हे। जिस गाव से वोतल विदा हो जाती ह उस गाव से अन्य वुराइया भी धीरे-धीरे विदा होने लगती है। कासण मे दारू पीने वाला की सख्या नगण्य हे, वल्कि तमाखू पीने वालो की सख्या भी कम होती जा रही हे। उससे प्रेरणा प्राप्त कर अन्य अनेक गावो म दारू के ठेके एव व्यसनो की सख्या कम हान लगी हे।

अज्ञान के अधेरे को मिटाने के लिए साक्षरता पर जोर दिया गया। सात गृह-कक्षाए शुरू की गइ। पाटी-वस्ता तथा अन्य साधना की व्यवस्था की गई। पूरा गाव रात के ममय लालटेन की रोशनी मे चमकता एक स्कूल सा वन जाता था। चूंकि दिन म लोग खेती-वाडी के कार्य म व्यस्त रहते ह अत रात का समय ही उनके लिए अनुकूल रहता है। वह दृश्य अत्यन्त दर्शनीय वन जाता था जव वच्चे विनोद ही विनोद मे अपनी माताओ, वहिनो तथा भाभियो को अक्षर शिक्षा के लिए प्रयत्न रहते थे। इसी का परिणाम है कि आज कासण गाव काफी साक्षर वन गया हे। अधेड भाई-वहिनो ने भी साक्षरता के अभियान मे उत्साह से भाग लिया हे।

चूंकि कासण गाव सडक से हटकर दो किलोमीटर अदर की ओर ह, अत उसे सडक से जोडने के विशेप प्रयास समिति द्वारा किए गए। सरकार के सामने इस बात को प्रभाव के साथ प्रस्तुत किया। इसीलिए स्थानीय सासद रामसिह कच्छावा ने अपने क्षेत्रीय फड के माध्यम से गाव को सडक से जोड दिया गया ह। कई वर्षो से कोर्टो मे फसे जटिल मुकदमो को भी आपसी समझ से सुलझाया गया।

गाव के स्वास्थ्य मे विकास के लिए जन विश्व भारती लाडनू के सहयोग से सप्ताह मे दो वार चिकित्सक वहा पहुचता हे तथा ग्रामीणा की नि शुल्क चिकित्सा करता हे। इस दृष्टि से लाडनू मे लगे नत्र शिविर

का भी ग्रामीणो ने पूरा लाभ लिया। गाव म स्थायी चिकित्सा प्रबन्ध की दृष्टि से लाडनू के एक दानदाता ने वहा चिकित्सालय के निर्माण की भी स्वीकृति प्रदान कर दी है।

गाव की स्वच्छता की दृष्टि से भी विशेष ध्यान दिया गया। अणुव्रत कार्यकताओं तथा ग्रामीणा ने मिलकर न केवल कीचड़ ओर गदगी को ही साफ किसा हे अपितु पयावरण-विशुद्धि के लिए भी विशेप प्रयत्न किये गए है। चारो ओर वृक्षा की हरितिमा नजर आने लगी हे। पूरे गाव मे दीवारा पर लिखे गए नैतिकता के सूचक अणुव्रत घोप तथा आदश वाक्य भी वहा पहुचने वाले लोगा को अणुव्रत ग्राम का अहसास कराते है।

ग्राम के लोगो का एक शिविर भी अणुव्रत अनुशास्ता एव आचार्यश्री के सान्निध्य म लगाया गया। विना किसी जाति-पाति के भेद के आयोजित इस शिविर मे सभी लागा ने अपन गाव को अणुव्रत ग्राम वनाने का सकल्प ग्रहण किया। सभी लोगो का यह उत्साह की अणुव्रत-कायकताआ को प्रेरणा देता ह। उनके प्रयास से ही अणुव्रत-छात्र ससद के छात्रो ने भी वहा स्वच्छता एव साक्षरता के अभियान म सहयोग दिया। देश के भिन्न-भिन्न क्षेत्रो से समागत विशिष्ट कार्यकर्ताओ ने भी समय-समय पर वहा अपना समय दिया। आसपास के अनेक गावो के लोग यह प्रार्थना लेकर अणुव्रत अनुशास्ता के पास उपस्थित होन लगे कि उनके गाव को भी अणुव्रत ग्राम के रूप मे विकसित करने के लिए चुना जाए। इसीलिए आज कासण के आस-पास वाढा, विश्वनाथपुरा मालासी आदि अनेक गावा म अणुव्रत का नियोजित कार्य चल रहा हे।

कासण गाव से उठा यह अभियान धीरे-धीरे आसपास म भी फेलने लगा हे। इसीलिए वहा विश्वनाथपुरा, वाढा, गनेडा, हारावती, मालासी आदि अनेक गावा मे यह कार्य आगे वढ रहा हे।

अणुव्रत प्रचेता

अखड सत्य को समझना अत्यन्त मुश्किल हे, वल्कि असभव हे। क्योंकि वह अनत ओर अपार हे। हम जितना जो कुछ समझते हे, वह

सापेक्ष हे। यदि सापेक्षता की दृष्टि नही रहे तो आग्रहो को पनपने से नही रोका जा सकता। सत्य को समझना तो मुश्किल है ही, पर उसे समझाना ओर भी मुश्किल हे। सयम को समझने की वात ता ओर भी मुश्किल हे। असयम की वात आदमी अपने आप सीख जाता हे। भोतिकता का सगमरमरीय फश इतना चिकना हे कि उस पर सभल सभल कर चलने वाले पेर भी फिसल जाते हे। फिर भी अणुव्रत अनुशास्ता एक ऐसे युगदृष्टा सत ह जो इस खतरे के प्रति सतत सावधान ह। इसीलिए आपने सयम मूलक अणुव्रत आदोलन का प्रवर्तन किया। अणुव्रत के पास स्वय सयम का जीवन जीने वाले सुशिक्षित साधु-साध्वियो की एक सशक्त सेना हे जो इस अभियान को सदा प्रासंगिक बनाये हुए हे। इसी के वल पर तथा अणुव्रत अनुशास्ता के स्वय के आत्मवल से यह अभियान चल रहा हे। पर फिर भी यह आवश्यकता तो अनुभव हो रही हे अणुव्रत कार्यकर्ताओ की भी एक ऐसी सशक्त टीम उभरे जो देश-विदेश मे अणुव्रत के विचार को तेजी, सघनता स आगे बढा सके।

यद्यपि समाज मे अनेक कार्यकता हे। उस सख्या को वहुत सतोषप्रद तो नहीं कहा जा सकता, पर जो हं वह भी सही प्रशिक्षित ह ऐसा भी नही कहा जा सकता। इसीलिये अणुव्रत प्रचेता के रूप मे प्रवुद्ध प्रयोक्ता, प्रभावक, प्रतिकारधमा व्यक्तियो का एक वर्ग खडा करने की योजना बन रही हे।

लोकतत्र की समस्या का समाधान

सत्य एक सापेक्ष अनुभूति है। अखड सत्य को केवल सर्वज्ञ ही जान सकता हे। एक-एक पदाथ की अनत-अनत पयाय ह। आदमी एक पदार्थ की सारी पर्यायो को भी नही जान सकता तो समस्त पदार्थो की समस्त पर्यायो के जानने का तो प्रश्न ही नही उठता। एक पदार्थ मे भी एक अणु की अनत पयाय हे। अणु के बारे म पुराने जमाने मे भी बहुत चर्चाए हुई ह। वर्तमान युग म भी बहुत खोज हुई हे। अणुबम का आविष्कार हुआ हे। पर रहस्य इतने गहरे हे कि जो जाना गया हे उससे जिज्ञासाए अधिक प्रबल हुइ हे। मनुष्य का ज्ञान ज्या-ज्या विकसित होता जा रहा हे त्यो-त्यो उसे पता लग रहा हे कि उसका अज्ञान ज्यादा गहरा हे। ऐसी स्थिति मे सापेक्षता को समझना अत्यन्त आवश्यक है। जीवन क हर एक पक्ष मे सापेक्षता को समझना जरूरी है। लोकतत्र मे भी सापेक्षता को समझना जरूरी हे। बल्कि लोकतत्र तो सापेक्षता के बिना चल ही नही सकता।

लोकतत्र का स्वरूप

लोकतत्र का अर्थ हे जनता के लिये जनता के द्वारा जनता का शासन। मनुष्य न आदिकाल से लेकर आज तक अनेक शासन प्रणालियो का प्रयोग किया। कभी दडबल का शासन हुआ तो कभी बाहुबल का। पर हर शासन प्रणाली मे व्यक्ति ही पमुख रहा। व्यक्ति का सोच व्यापक रहे तब तो काम चल जाता हे। पर जब सोच सकीण बन जाता है तो अनेक सस्याए खडी हो जाती ह। इसीलिये वर्तमान मे लोकतत्र को प्रतिष्ठा मिली। लोकतत्र मे हर व्यक्ति को आगे बढने का अधिकार है इसीलिए यह सोचा जा रहा हे कि लोकतत्र ही सर्वोत्कृष्ट शासन प्रणाली

है। आज साम्राज्यवाद इतिहास की चीज वन गया है। कहीं यदि सम्राट हे भी तो वे केवल अलकारिक हे। शासन सत्ता तो प्राय जनता क ही हाथ म है।

लोकतत्र के मोलिक सून

स्वतत्रता, समानता, सहयोग, सहानुभूति, समन्वय ओर सहिष्णुता ये अनेकात के कुछ ऐसे मोलिक तत्त्व हे जो लोकतत्र को भी प्रतिष्ठा प्रदान करते हे। पर ये सारे मूल्य भी निरपेक्ष नहीं हो सकते। सापेक्षता के बिना उनसे अनेक विकृतिया भी सभव हो सकती हे।

इसमे कोई सन्देह नही कि स्वतनता एक वहुत वडी उपलब्धि हे। कोई भी आदमी परतत्र नही रहना चाहता। आदमी क्या कोई पक्षी भी परतत्र नहीं रहना चाहता। स्वतत्रता के लिये आदमी सव कुछ दाव पर लगा देता हे। स्वतत्रता के सामने पेसे का तो कोइ मूल्य ही नही हे। आदमी भूखा रहकर भी स्वतत्र रहना चाहता है। बल्कि स्वतत्रता के लिए वह प्राणो से भी खेल जाता हे। दुनिया का पूरा इतिहास ऐसे बलिदानो से भरा पडा है। पर सवाल यह है कि क्या स्वतत्रता भी निरपेक्ष हो सकती है? उत्तर इसका यही हो सकता हे कि स्वतनता के लिए भी सापेक्षता जरूरी है।

एक राष्ट्र आजाद हुआ। लम्वे समय तक गुलाम रहने की कसक सवके मन मे थी। आजादी के क्षणो मे सबका मन उत्साह से भरा हुआ था। सव खुशियो मे मगन थे। एक वुढिया भी आजादी के भावावेश म इतने उत्साह से भर गई कि सडक के बीच आकर लेट गई। सामने से एक ट्रक आ रहा था। ड्राईवर ने हार्न वजाया, पर वुढिया तो टस स मस न हुई। आखिर ड्राईवर को नजदीक आकर कहना पडा--माताजी! सडक मत रोको, एक किनारे हो जाओ। वुढिया ने तडक कर कहा--एक ओर क्यो हो जाऊ? मेरा देश आजाद हो गया। म कही पर सोने के लिये स्वतत्र हू। ड्राईवर ने धीरे से कहा--माताजी! आप सडक के बीच म सोने के, लिये स्वतत्र ह तो म भी आपक ऊपर से गाडी निकालन के लिए स्वतन्त्र हू। तत्काल वुढिया का एक किनारे हो जाना पडा।

समाज म जीने के लिए हर आदमी का हर स्तर पर सापेक्षता को जीना आवश्यकता हे। व्यक्तिगत स्वतत्रता का मूल्य हे, पर वह उसी हद तक स्वीकाय है जिस हद तक दूसरे के लिए वाधक नही वनता। महात्मा गाधी ने वहुत सुन्दर कहा था—मेरी स्वतत्रता वही तक हे जहा तक मेरे घर की सीमा हे। उससे आगे मेरे पडोसी की स्वतत्रता शुरू हो जाती हे।

सचमुच लोकतत्र मे पडोसी की स्वतत्रता का वहुत वडा मूल्य हे। एक आदमी को इतनी स्वतत्रता नहीं हो सकती कि वह दूसरे की उपेक्षा कर दे। इससे जीवन चल ही नहीं सकता। आदमी को पग-पग पर अपने पड़ोस का ध्यान रखना पडता हे। एक वहुमंजिल विल्डिग के नीचे के फ्लेट मे एक परिवार रहता था। जव वह अपनी अगीठी जलाता तो धुआ निकलता आर वह ऊपर के फ्लेट मे रहने वाले व्यक्ति को वाधित करता। रोज-रोज की यह समस्या असह्य हो गई तो उसने अपने नीचे क पडौसी से कहा—भाई! आपकी अगीठी का धुआ हमे बाधित करता हे अत ऐसी कोइ व्यवस्था करो जिससे हमे कोई कष्ट न हो। नीचे के पडौसी ने कहा—इसमे मै क्या व्यवस्था कर सकता हू। धुए का स्वभाव है ऊपर जाने का। मे उसे केसे रोक सकता हू? मेरे पास इसका कोई इलाज नही हे। ऊपर का पडौसी भी विवश था। पर कठिनाइ तो उसके सामने थी। कुछ दिन वाद उसे एक उपाय सूझा और उसने ऊपर की छत म एक छेद कर दिया। उस छेद मे से गदा पानी नीचे के पडौसी के फ्लट मे गिरने लगा। तव उसने कहा—भाइ! यह क्या करते हो। तुम्हारे गंदे पानी से मेरा तो सारा घर ही गदा हो रहा हे। ऊपर वाले न कुटिल व्यग्य करते हुए कहा—भाई! इसमे म क्या कर सकता हू। पानी का स्वभाव ह नीचे जाने का। मै उसे केसे रोक सकता हू। मेरे पास कोइ इलाज नही हे। अव नीचे का पडासी विवश था। आखिर दोना को मिलकर समझोता करना पडा कि नीचे का पडोसी धुए की व्यवस्था करेगा ओर ऊपर की पडोसी पानी को नीचे नही आने देने की व्यवस्था करगा। सचमुच आदमी को इसी तरह पग-पग पर अपने पडोसियो से समझोता करना पडता हे। जव समझोता होता हे तभी दोना

को स्वतत्रता मिलती हे। यदि एक भी निरपेक्ष हो जाए तो कोइ भी सुख से नही रह सकता।

समाज मे एक-दूसरे क साथ रहन के वहुत कानून वन हुए ह। वहुत वडा संविधान वना हुआ हे। पर कानून या संविधान हा जान मात्र से काम नही चलता। जव तक कानून तथा उसकी भापा-सापेक्षता को नही समझा जाता तो वे ही झगडे के मूल कारण वन जात ह।

लाड एक्टन के अनुसार मनुष्य का सवसे महत्त्वपूर्ण लक्ष्य हे धर्म ओर उसके वाद स्वतत्रता। धर्म और स्वतत्रता परस्पर आधारित हे। सयमित स्वतत्रता समाज की सवसे मूल्यवान निधि हे। आधुनिक सभ्यता के विकास का सम्वन्ध मनुष्य की स्वतत्रता ओर उसकी गति को सुस्थिर करना हे।

जो स्वेच्छा से अपने आप पर अनुशासन कर सकता हे वास्तव म वही स्वतत्र हे। क्योकि उसने अपनी आवश्यकताओ एव इच्छाआ को दूसर की आवश्यकता ओर इच्छा के साथ जोडा हे। जिसकी इच्छाए वश म न हो वह स्वेच्छाचारी तो बन सकता हे स्वतत्र नहीं। मनुष्य की चेतना का अर्थ ही हे कि वह अपने मन पर अनुशासन कर सकता हे। शेप प्राणी अपने मन पर नियत्रण नही कर सकते। इसलिए वे स्वेच्छाचारी बन सकते हे स्वतत्र नही।

अभिव्यक्ति की स्वतत्रता लोकतत्र की एक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि ह। इसमे कोई सदेह नही कि अपनी भावना को प्रकट करना सवको अच्छा लगता हे, पर जव अभिव्यक्ति मे सापेक्षता नही होती हे तो एक शब्द ही महाभारत खडा कर देता ह। यह निश्चित ह कि अभिव्यक्ति पर से सापक्षता का अकुश हटता हे तो विवाद बढता ही हे। असल म निरकुश अभिव्यक्ति तो एक तीखा प्रहार हे। वचन का घाव वडा गहरा होता हे। लोकतत्र मे जीने वाले व्यक्ति को न केवल वोलने ओर लिखन म ही सयम रखना पडता हे अपितु समयने म भी सापेक्षता का ध्यान रखने की आवश्यकता ह।

लाकतत्र की प्रतिष्ठा से पहले अभिव्यक्ति की स्वतत्रता जसी कोई चीज नहीं थी। हर इसान मुह खोलने आर कलम, कूची या छनी उठान से पहल दस वार सोचता था कि मर कह या रचे पर समाज आर

शासक की क्या प्रतिक्रिया होगी? अपने समाज की या राज्य की मान्यताओ के विरोध म कुछ कहना या करना विरादरी से वाहर कर दिए जाने का खतरा मोल लेना था, पर लोकतत्र ने मनुष्य को अभिव्यक्ति की ताकत दी। आज एक छोटे से छोटा व्यक्ति भी वडे से वडे आदमी या घटना के वारे म अपनी राय प्रकट कर सकता है। पर अभिव्यक्ति की स्वतत्रता का यह अर्थ नही हो सकता कि आदमी चाहे जो अनर्गल वात कह दे। आज अभिव्यक्ति की स्वतत्रता के नाम पर मीडिया द्वारा जो अभद्र ओर अप सास्कृतिक चीज प्रस्तुत की जा रही हे उस स्वतत्रता का सदुपयाग नहीं अपितु उसका दुरुपयोग ही कहा जायेगा। यह स्थिति तभी वनती है जव आदमी अपनी स्वतत्रता के लिए सामुदायिक स्वतत्रता का मूल्याकन नही करता।

लोकतत्र मे वोट के रूप मे न केवल अपने मत की अभिव्यक्ति का स्वतत्र अधिकार मिलता हे अपितु सत्ता की भागीदारी का भी अधिकार मिलता है। एक छोटे से छोटे आदमी को भी सत्ताशीर्ष पर पहुचने की स्वतत्रता प्राप्त हे। पर इस स्वतत्रता की भी एक सीमा ह। कोई भी व्यक्ति यदि अपनी मताधता से साम्प्रदायिक सौहार्द को चोट पहुचाता हे या जातीयता को प्रस्थापित करना चाहता है तो वह स्वतत्रता का दुरुपयाग ही कहा जायेगा। अन्य लोगो की स्वतत्रता का आदर करना अनेकात दृष्टि से ही सभव ह।

पक्ष-प्रतिपक्ष

लोकतत्र म भी पक्ष ओर प्रतिपक्ष दोनो होत हे। पक्ष के साथ-साथ प्रतिपक्ष का होना भी जरूरी हे। वास्तव मे तो पक्ष ओर प्रतिपक्ष दोना जुडे हुए ह। ये वस्तु के स्वभाव ह। जहा पक्ष हागा वहा प्रतिपक्ष होगा ही। *यदि लोकतत्र मे केवल एक पक्ष ही वन जाए तो वह एकागिता* हो जायेगी। एक पक्ष क लाग मिलकर कोइ भी निर्णय कर लग ता उसमे त्रुटि रह सकती हे। प्रतिपक्ष होता ह तो वह उस त्रुटि का निराकरण कर सकता हे। लोकतत्र म प्रतिपक्ष की तो आवश्यकता हे, पर विपक्ष की नही। विपक्ष का तो मतलव ही हाता हे विरोध करना। विरोध करना

सिद्धान्त नही वन सकता। प्रतिपक्ष विरोध नही हे। वह तो सतुलन हे। जहा भी कोई गडवडी दिखाई द उसमे सतुलन विठाना यही प्रतिपक्ष है। विरोध के लिए विरोध विपक्ष हे। सतुलन के लिये विरोध यह प्रतिपक्ष है। इसलिए लोकतत्र मे प्रतिपक्ष की वहुत वडी भूमिका हे। यही समन्वय हे। पक्ष ओर प्रतिपक्ष मे सतुलन अनेकात दृष्टि से ही सभव हो सकता ह। दर्शन शास्त्र की दृष्टि से हर पदार्थ का प्रतिपक्ष होता हे। जीव हे तो अजीव भी हे ही। इसी तरह जहा भेद होता हे वहा अभेद भी होता ह। वल्कि भेद ओर अभेद का सह अस्तित्व हे। एक ही पदार्थ मे जहा भेद ह वहा अभेद भी हे। दिखने मे यह वात जरा अजीव लगती हे। भेद ओर अभेद दोनो साथ केसे रह सकते ह? पर सापेक्षवाद का यह ध्रुव सिद्धान्त हे। इसकी एक लम्बी दार्शनिक चर्चा है। पर उसे हम एक व्यावहारिक उदाहरण से समझ सकते हे। जैसे एक आदमी भारतीय है। भारत देश की अभेद दृष्टि से वह भारतीय हे पर यदि हम प्रवेश की भेद दृष्टि से देखेगे तो वही आदमी आसामी, तमिल या राजस्थानी हो सकता हे। भारत एक अभेद दृष्टि हे पर उस अभेद मे प्रदेशा का भेद भी समाया हुआ हे। भेद ओर अभेद का यह सहअस्तित्व हर कदम पर हे। पूरी दुनिया की अभेद दृष्टि से देख तो हम एक वेश्विक मानव हे, पर राष्ट्र की भेद दृष्टि से देख तो हम भारतीय, चीनी, जापानी आदि अनेक भेदो म वट सकते हे।

समानता

लाकतन्त्र मे समानता एक महान् सिद्धान्त हे। यदि समानता की दृष्टि न हो तो लोकतत्र सफल हो ही नही सकता। क्योकि जहा समानना ह वहा असमानता हागी ही। भारतीयता एक समानता ह वहा जाति, वग, वण, भाषा, सम्प्रदाय आदि की असमानता स भी इकार नही किया जा सकता हे। समानता एक सत्य ह तो असमानता भी एक सत्य ह। इन दोना को मिटाया नही जा सकता। एसी स्थिति म अनेकात की सापेक्ष दृष्टि ही एक समाधान प्रदान करती ह।

भारत एक विस्तृत देश हे। इसका विस्तृत भू-भाग हे। कही पर्वत हे तो कही मेदान हे। एक ही नदी न जाने कितने प्रदेशो म होकर वहती हे। ऐसी स्थिति मे अभेद की दृष्टि नही हो तो पग पग पर विवाद खडे हो सकते ह। प्रशासनिक, भोगोलिक आदि अनेक दृष्टियो से देश म प्रदेशो की विभक्तिया वनी हे। ये विभक्तिया न हो तो देश का काम नही चल सकता। व्यवहार की सुगमता के लिए देश मे प्रदेश व्यवस्था को भी स्वीकार करना पडता हे। प्रदेश को भी अनेक भागो मे वाटना पडता हे। जहा अभेद की अनेकात दृष्टि नहीं है वहा किसी भी प्रकार के खतरे खडे हो सकते है। अभेद की अखडता को खतरा पेदा हो सकता है। सचमुच मे यदि भेद तथा अभेद की दृष्टि स्पष्ट न हो तो आदमी शांति से सह अस्तित्व पूर्वक रह ही नही सकता। पंडित नेहरू ने इसी दृष्टि से पचशील मे सह अस्तित्व को स्थान दिया था। दुनिया के नक्शे स राष्ट्रा को मिटाया नहीं जा सकता। दुनिया मे अनेक प्रकार के भेद हे—१ मान्यता का भेद, २ विचार का भेद, ३ रुचि का भेद, ४ स्वभाव का भेद, ५ सवेग का भेद। मान्यता के आधार पर सम्प्रदाय वनते हे। विचार के आधार पर चितन बनता है। रुचि के आधार पर इन्द्रिय-सवेदना वनती हे। स्वभाव के आधार पर आदते वनती है। सवेग के आधार पर व्यवहार वनता हे। यदि दृष्टि इसी भेद पर ही उलझी रही तो दुनिया मे कभी शांति स्थापित हो ही नहीं सकती। लोकतत्र का यही तकाजा हे कि पूरी दुनिया मे समानता की सापेक्ष दृष्टि का प्रचार किया जाए। ऐसे लोगो के मन म न ता नस्ल का भेद होता हे न ऊच-नीच का। अधिकाश भेद वास्तविक नही होते, वे मनुष्य के अपने द्वारा ही वनाये जाते है।

सापेक्षता को समझता है उसे ये भेद कभी वाधित नही कर सकते। ऐस लोग ही 'वसुधव कुटुम्बकम्' या 'एक्का माणुस्स जाई' की भावना म जी सकते हे। दुनिया मे सव कुछ एक दूसरे के माथ जुड़ा हुआ हे। वाहर भिन्नता दीखती हे पर भीतर से सव कुछ जुड़ा हुआ है। अनेकता के नीचे छिपी हुई एकता को हम नहीं जानते। इसी प्रकार

एकता के नीचे छिपी हुई अनेकता को भी नहीं जानते। दृष्टि की वह एकांगिता ही सारे झगडों का मूल है। जो आदमी इस तथ्य को नहीं समझता वह लोकतन्त्र को भी नही समझ सकता।

सहयोग

पूरे विश्व की अपनी एक ताल बद्ध नियामकता है। यहा एक-एक अणु की अपनी गतिमयता ह। पर वह गतिमयता एक स्थितिमयता से भी आवद्ध है। गति और स्थिति दोनो मिलकर विश्व की रचना करते है। यहा हर जीवन का अस्तित्व दूसरे जीवन के साथ जुडा हुआ है। हर जीवन की गति-स्थिति का दूसरे जीवन की गति-स्थिति से गहरा सम्बन्ध ह। वह लोकतन्त्र कभी मजवूत नही हो सकता जहा की समाज व्यवस्था सहयोगमयी न हा। साम्राज्यवादी मनोवृत्ति ने अर्थ-व्यवस्था, न्याय-व्यवस्था को भी इस तरह कस कर रख दिया कि कुछ लोग युगो युगा से सर्वहारा बने रहे। लोकतन्त्र की व्यवस्था भी तभी सफल हो सकती हे जबकि पूरे मानव समाज को लाभ मिले। लोकतन्त्र मे भी यदि निहित स्वार्थो ने अपना स्थान बना लिया तो हो सकता हे एक वर्ग ऊपर उठ जाए, पर उसके साथ ही दूसरे वग पिछड जायेगे। वही लोकतन्त्र श्रेष्ठ हे जो सबका कल्याणकारी है। दुनिया मे सबके स्वार्थ एक दूसरे से वधे हुए है। उसी से एक सतुलन बनता है। जव भी वह सतुलन बिगडता है तो अव्यवस्था फेलती है।

एक माली ओर एक कुम्हार गाव से वाहर की ओर जा रहे थे। माली के पास कुछ सब्जिया थी आर कुम्हार के पास कुछ मिट्टी के वर्तन। दोनो ही उन्हे बेचने शहर जा रहे थे। एक ऊट पर एक ओर माली की सब्जी लदी हुई थी आर दूसरी ओर कुम्हार के बर्तन। दोना का एक सतुलन बना हुआ था। दोनो ने एक-दूसरे का सहयोग किया तो काम ठीक चल रहा था। माली ऊट के आगे-आग चल रहा था आर कुम्हार पीछे-पीछे चल रहा था। मार्ग मे ऊट को सब्जी की सुगध आ रही थी। उसन अपनी लम्बी गर्दन को मोडा ओर पीठ पर लदी हुई सब्जी मे से थाडी-थोडी सब्जी खाना शुरू कर दिया। चूकि कुम्हार

पीछे-पीछ व माली आगे-आगे चल रहा था अत माली को यह पता नहीं चला कि ऊट सब्जी खा रहा हे। कुम्हार को पता चल रहा था कि ऊट सब्जी खा रहा है, पर उसने ऊट को टोका नही। वह सोचने लगा सब्जी तो माली की हे। नुकसान होता हे तो माली का हाता हे। मरा इसमे कोइ नुकसान नही होता, मे क्यो ऊट को टाकू। कइ वार यह क्रम चलता रहा। माली वेखवर था। पर धीरे-धीरे एक ऐसी सीमा आइ जव सब्जी ओर वतनो का सतुलन विगड गया। वतन भारी हो गय सब्जी हल्की हो गई। तत्काल पहले वतन गिरे ओर उसके ऊपर सब्जी गिर गई। एक धमाका हुआ। माली ने पीछे मुड़कर देखा तो स्तब्ध रह गया। उसन कुम्हार से पूछा—क्या हुआ? कुम्हार ने कहा—तुम्हारा कुछ नहीं हुआ, थोडी सी सब्जी ऊट ने खाई है, पर मेरे तो सारे वर्तन ही फूट गए हे। मैंने सहयोगिता का धम नही निभाया इसीलिए सारी गड़वडी हुई।

समाज व्यवस्था के लिए सहयोग जितना जरूरी है, असहयोग भी *उतना ही जरूरी है। महात्मा गाधी न अग्रेजी सल्तनत का असहयोग* किया। असहयोग का आन्दोलन चलाया। स्वतन्त्रता के लिये यह आवश्यक था। जव सहयोग की आवश्यकता हुइ तो उन्होने अग्रेजो का सहयोग भी किया। कुछ लोगा ने उनका विरोध भी किया। पर गाधीजी ने कहा—अभी असहयोग का समय नही हे। जिस समय असहयोग का समय आया तो उन्हाने असहयोग भी किया। पर उन्होने असहयोग भी विनय-पूर्वक किया। इसी से यह सम्भव हो सका कि भारत को आजादी मिली। वुराई के साथ असहयाग भी जरूरी हे। पर केवल असहयोग या सहयोग से काम नहीं चल सकता। वुराई के साथ असहयोग जितना जरूरी हे अच्छाई के साथ सहयोग भी उतना ही जरूरी हे।

सहानुभूति

लाकतत्र मे सहानुभूति की भी वहुत वडी आवश्यकता है। एक के सुख-दुख की अनुभूति जव सवको होती हे तभी परिवार, समाज या राष्ट्र चल सकता हे। यह ठीक हे कि दद तो जिसको होता हे उसी

को होता हे पर सहानुभूति होती हे तो दर्द कम हो जाता हे। आर उसका सामूहिक प्रतिकार किया जाए तो वह खत्म भी हो सकता ह।

सहिष्णुता

लोकतत्र मे सहिष्णुता का भी वहुत वडा स्थान हे। यह सही ह कि लोकतत्र मे ५१ का वहुमत ४६ के अल्पमत से शक्तिशाली वन जाता हे। पर इसका यह अर्थ नही हे कि वहुमत अल्पमत का निरादर करे। अल्पमत को भी अपनी सीमा को समझना जरूरी हे। पर वहुमत को भी अल्पमत के साथ सहिष्णुता रखना जरूरी हे। यो सहिष्णुता सभी के लिये आवश्यक हे पर उन लोगो के लिए ज्यादा जरूरी ह जिनके पास शक्ति होती हे। राष्ट्रकवि दिनकर ने ठीक ही कहा हे–

क्षमा शोभती उस भुजग को जिसके पास गरल हो
उसको क्या जो दतहीन-विपरहित विनीत सरल हो।

यह सही हे कि साप को क्षमा रखनी चाहिए, पर दूसरा के लिए भी यह जरूरी हे कि वे जान बूझकर साप पर पेर नही रख। समन्वय का यह दृष्टिकोण ही लोकतत्र की सफलता का स्वर्ण सूत्र हे।

इस प्रकार लोकतत्र की सफलता के लिए अनेकात की अपनी वहुमुखी भूमिका है।

अपरिग्रह से आर्थिक समस्याओ का समाधान

मनुष्य का जीवन एक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि हे। दृश्य दुनिया मे वही एक ऐसा प्राणी हे जिसके पास सर्वाधिक बुद्धिकोशल हे। पर उस बुद्धिकोशल का यह अर्थ नही हे कि वह दूसरो का अहित करे। दूसरा के साथ सामजस्य स्थापित कर अपना विकास करना ही जीवन की सार्थकता हे।

जीवन विकास की दो दिशाए

मनुष्य जीवन की दो विकास-दिशाए हे--पहली आध्यात्मिक एव दूसरी भोतिक। जीवन को कवल भोतिक उपलब्धि समझने वाले लोग सहज रूप से भोगवाद की ओर अग्रसर होते हे। उनका लक्ष्य मात्र पदार्थ होता हे। जब जीवन भोतिक अस्तित्व ही हे तो वह पदाथ से ऊपर उठकर देख ही केसे सकता हे? अस्तित्व मे जब अध्यात्म होगा तब ही पदार्थ से ऊपर उठकर देखने की दृष्टि प्राप्त होगी।

भोग ओर त्याग ये दो विपरीत ध्रुव हे। अपनी अतियो म दोनो ही समाज के सगठक नही हे। समाज मे रहने वाला व्यक्ति न केवल भोग मे जी सकता हे ओर न केवल त्याग मे। भोग मे जीने वाला व्यक्ति स्वार्थ मे जीता हे। त्याग मे जीने वाला व्यक्ति परार्थ म जीता हे। समाज मे रहने वाले व्यक्ति के लिए परस्परार्थ मे जीना आवश्यक हाता हे। इसी दृष्टि से एक सूत्र दिया गया--**'परस्परोपग्रहो जीवानाम्।'** यह व्यक्ति या समाज मे जीने का ही सूत्र नही हे। पूरी दुनिया के अस्तित्व का सदर्शक सूत्र है।

कुछ लोग मानते ह हिसा ही अस्तित्व का सरक्षक सूत्र हे। उनके हिसाब से मत्स्य न्याय ही परम सत्य है। छोटा जीव बडे जीव का आहार बने यही प्राकृतिक व्यवस्था हे। मोटे तोर पर इसे इन्कार नही किया

जा सकता। पर जव समाज-व्यवस्था का सवाल सामने आया तव यह समझा गया कि हिसा जीवन के लिए आवश्यक हो सकती है, पर प्रणा नही। यही से मनुष्य के वुद्धि कौशल का अध्याय शुरू होता है। आदिकाल म मनुष्य प्रकृति मे जीता था। प्रकृति से जा कुछ सहज रूप से मिल जाता वही उसके जीवन का आधार वनता था। प्रकृति असीम थी, मनुष्य थोडे थे, अत जीने म कोई कठिनाई नही थी। यद्यपि मनुष्य को अपन स शक्तिशाली प्राणियो से अपनी सुरक्षा करनी पडती थी, पर फिर भी मनुष्य मे परिग्रह की सज्ञा वहुत अधिक नही थी। उसकी आकाक्षाए भी वहुत प्रवल नही थी। धीरे-धीर ज्यो-ज्या जनसख्या मे वृद्धि हुइ आदमी की चिन्तन क्षमता मे वृद्धि हुई, आकाक्षाओ मे वृद्धि हुई तो सग्रह परिग्रह की वात भी सग्मने आई। पकृति तो जितनी थी उतनी ही थी। उतनी ही रहेगी। जव आकाक्षाओ का विस्तार होता ह तव वात चिन्तनीय वन जाती हे। मनुष्य की आवश्यकनाओ तथा आकाभाआ को रेखांकित करते हुए वहुत सुन्दर कहा गया हे–

तन की तृष्णा अल्प है, आधा-पाव कं सेर।
मन की तृष्णा अमिट है, मिले मेर का मेर।

शरीर के लिए भोजन आवश्यक ह, पर वह ज्यादा-से-ज्यादा आवश्यक हे तो आध-पाव या सेर (किलो) हो सकता हे। पर जव आकाक्षाए वढती ह तो तृष्णा केवल तन की ही नही रह जाती। तव वह मन की वन जाती हे। मन की तृष्णा तो इतनी अमाप्य होती हे कि वह मेरु पर्वत जितने पदार्थो से भी शात नही हो पाती। उसम सुविधा, वासना, विलासिता तथा प्रतिष्ठा के अध्याय भी जुड जाते ह।

मनुष्य ने जव समाज के रूप मे रहना स्वीकार किया तव देहशक्ति के रूप म राज्यवाद एव साम्राज्यवाद भी सामने आया। राजाओ ने अपनी आकाक्षाआ का कम विस्तार नहीं किया। उनकी राज्य-पिसासा ने लाखा-करोडो-अरवा लोगा की वलि ग्रहण की। मनुष्य के अहकार ने राज्य भक्ति के खिताव के रूप मे खूव खेरात भी वाटी गई। पर उसका शोपण भी कम नहीं हुआ। वह न केवल दासता के गलियारे से गुजरा अपितु उसे

अनक दारुण दु ख भी सहन करने पड़े।

भगवान महावीर ने कहा—

> 'सुवण्ण रूपस्स उ पव्वया भवे
> सिया हु केलाससमा अणतया
> नरस्स लुद्धस्स न तेहि किंचि
> इच्छा हु आगाससमा अणतया'

इच्छाए तो आकाश क समान अनत हे। उन्हे कभी पूरा नही किया जा सकता। महात्मा गाधी ने भी ठीक ही कहा हे—'धरती पेट तो सबका भर सकती है, पर मन एक का भी नहीं भर सकती।' अपनी और अपने परिवार की सुरक्षा समझ म आ सकती है। पर जब वह समस्त से कटकर अपने मे सीमित हो जाती है तो समस्या बन जाती हे। परमार्थ मे जीने वाले व्यक्ति के सामने परिवार नहीं होता। वह स्वय ही इतना विस्तृत हो जाता है कि समस्त विश्व उसमे समाहित हो जाता हे। वह समस्त को पाप्त करने का प्रयत्न नहीं करता अपितु स्वय ही समस्त म विलीन हो जाता हे। वह किसी के लिए समस्या नहीं बनता अपितु समाधान बन जाता हे। जो व्यक्ति आकाक्षाओ म जीता हे, उसके लिए परिवार भी कैद बन जाता है। वह इतना स्वकेन्द्रित हो जाता हे कि उसे किसी दूसरे की परवाह ही नहीं रहती। परिवार परस्परार्थ की ओर उठन वाला पहला कदम हे। पर वह भी तब समस्या बन जाता हे जब समस्त की ओर से कट जाता हे।

परिवार की प्रतिबद्धता भी निरपेक्ष नही हो सकती। उसकी भी एक सीमा होनी आवश्यक हे। समाज की आवश्यकताओ को ध्यान मे रखकर जो व्यक्ति अपनी आकाक्षाओ का विस्तार करता हे, वह अनत की यात्रा नहीं कर सकता। वह परस्पराथ की भावना से आबद्ध हो जाता हे। ऐसा आदमी भले ही परमाथ मे न भी जी सके, पर उसके जीने का नाभिक स्वार्थ नही बन सकता। वह अपने जीने के लिए दूसरा को तकलीफ म नही डाल सकता। परस्परार्थ की इस समझ ने ही अपरिग्रह की भावना को जन्म दिया।

अपरिग्रह का कोई अथशास्त्र नही हाता। क्योंकि वह तो त्याग हे। अर्थशास्त्र का तो अर्थ ही भाग से होता ह। इसलिए वह अर्थशास्त्र का विषय नही वन सकता। पर अथशास्त्र यदि निरकुश हो जाए उसका परिणाम भी विपमता ही होगा। विपमता स हिसा जन्म लेगी। भले ही लोगो ने परस्परार्थ की समझ क कारण ही साम्राज्यवाद क स्थान पर लोकतत्र को स्थापित किया था। पर कन्द्र म स स्वाथ नहीं निकल पाया। इसलिए लोकतत्र का अर्थशास्त्र भी शांति का अथशास्त्र नहीं वन सका।

अर्थशास्त्र की दृष्टि केवल मनुष्य को सुखी वनाने की ह। अपरिग्रह की दृष्टि मनुष्य को शात वनाने की है। सुख ओर शांति मे काई अन्तर्विरोध नही हे। ऐसा नही हे कि सुख ओर शांति का सहावस्थान नही हा सकता। पर अपनी मूल प्रकृति मे सुख पदार्थाश्रित है तथा शाति आत्माश्रित। जव लक्ष्य मे सुख रहता ह तो सारी शक्ति पदाथ के सग्रह–उपभोग मे ही खप जाती हे। यह दूसरी वात हे कि सुख के प्राप्त हो जाने के वाद भी शाति मिले या नहीं मिले। पर शांति को प्राप्त हो जाने के वाद सुख न भी मिले तो चल सकता हे। सुख शरीर ओर इन्द्रियो की अनुभूति हे। शांति मन ओर आत्मा की अनुभूति हे। आत्मा की अनुभूति को हर आदमी प्राप्त नही कर सकता। इसलिए सामान्य आदमी को पदार्थ ओर आत्मा की वीच सतुलन विठाना पडता हे। अपरिग्रह उस सतुलन का ही एक सकेत-सूत्र हे।

अपरिग्रह का अर्थशास्त्र

अपरिग्रह के अनेक व्याख्याकार हुए हे। महावीर उनम अग्रगामी आत्म-पुरुप हे। उनके लिए घर, परिवार, समाज, राष्ट्र आदि मारी सज्ञाए चुक गई थी। इसीलिए व अर्थशास्त्र के प्रवक्ता नही थे। जब परिग्रह स्वीकृत ही नही है तो उसकी व्याख्या केसी? पर महावीर जानते थे सव व्यक्ति उस सीमा तक नही पहुच सकत। अपरिग्रह के अन्तिम छोर तक तो कोई-कोई व्यक्ति ही पहुच सकता ह। पर वे यह भी जानते थे कि परिग्रह ही सब कुछ हो गया तो शेप कुछ भी नही रहेगा। इसलिए

उन्होंने परिग्रह पर लगाम लगाने के लिए इच्छा-परिणाम का सूत्र दिया। इच्छा परिणाम म परिग्रह का पूण निपेध नही हे, अपितु उसकी अल्पता की ओर सकेत हे। इस दृष्टि से अपरिग्रह के दो अथ हो जाते हे। एक परिग्रह का सवथा अभाव तथा दूसरा परिग्रह का सीमा सीमाकरण। परिग्रह की साधना को ही हम अपरिग्रह का अर्थ शास्त्र कह सकते हे।

आधुनिक अयशास्त्र की अवधारणा

अणुव्रत अनुशास्ता आचार्यश्री महाप्रज्ञजी का कहना हे—आधुनिक अर्थशास्त्र भोतिकवाद के आधार पर खडा हुआ हे। उसकी कठिनाइ यह एकागी दृष्टिकोण ई हे। यदि एकागी दृष्टिकोण नही होता तो वर्तमान मे इतनी आर्थिक अपराध की स्थिति नही वनती, आथिक स्पर्धा नहीं होती, उत्पादन ओर विरतण मे इतनी विपमता पेदा नही होती। आधुनिक अर्थशास्त्र के प्रमुख-पुरुप केनिज कहते हे—'हमे अपने लक्ष्य को प्राप्त करना हे, सवको धनी वनाना हे। इस रास्ते म नेतिक विचारो का हमारे लिए कोई मूल्य नही हे।' उनका वहुत स्पप्ट कथन हे—'अनेतिकता का विचार न केवल अप्रासंगिक हे, वल्कि हमारे माग मे वाधक भी है।

आधुनिक अर्थशास्त्र का उद्देश्य शाति नहीं हे ओर अहिसा भी नहीं हे। उसका उद्देश्य हे आथिक समृद्धि। प्रत्येक मनुप्य धनवान वने कोई गरीब न रहे। मनुप्य की प्राथमिक आवश्यकताए पूरी हो, इतना ही नही वह साधन-सम्पन्न वने। आथिक समृद्धि के लिए साधन के रूप मे लोभ, इच्छा, आवश्यकता ओर उत्पादन बढे, यही वात स्वीकृत हे।

आज भ्रष्टाचार का प्रश्न ज्वलत हे। वहुत सारे लोग भ्रष्टाचार की वात करते हे। कहते ह—भप्टाचार वढा हे। जव अथशास्त्र की मूल धारणा यह ह कि नतिकता का विचार हमारे माग म वाधक हे तो फिर भ्रष्टाचार का रोना क्यो? इसमे आश्चर्य किस वात का? वर्तमान की अर्थशास्त्रीय अवधारणा क वीच यदि भप्टाचार वढता हे, आथिक अपराध वढते हे, अप्रामाणिकता ओर वेईमानी वढती हे ता स्वाभाविक हे। वे न वढे तो आश्चय की बात हे।

यद्यपि डॉ मार्शल आदि कुछ उत्तरवर्ती अर्थशास्त्रिया ने स्वीकार

किया है कि परिणामत नैतिकता आनी चाहिए, किन्तु यह अनिवाय नहीं ह। केनीज न कहा–जब हम आथिक दृष्टि से सम्पन्न हा जायेग तब नैतिकता पर विचार करने का अवसर आयेगा। अभी उसके लिए उचित समय नही ह। अभी जो गलत है वह भी हमारे लिए उपयागी है। अथशास्त्र उपयोगिता के आधार पर चलता है, इसलिए उसम गलत कुछ भी नहीं हे। जो उपयागी है वह सही हे, वही हमार लिए वाछनीय है।

अर्थशास्त्र क फलिताथ म यदि प्रति व्यक्ति आय समान हाती तो समस्या का समाधान होता। साम्यवाद न एसा ही प्रयोग किया किंतु वसा नहीं हुआ। गाधीजी ने कहा है–'आथिक समानता का आदर्श आदमी कभी प्राप्त नही कर सकेगा। क्यांकि वैयक्तिक क्षमताए भिन्न भिन्न है, योग्यताए भिन्न भिन्न है। हर व्यक्ति इस बिन्दु पर नहीं पहुच सकता स्वार्थ को उभारने का परिणाम यह आया कि आज दुनिया की सारी पूजी कुछ हजार लोगों के हाथ म केन्द्रित हो गइ है। इतने बडे-बडे धनी बन गए ह कि सिवाय प्रतिष्ठा ओर झूठे अह के पोषण क उनकी सूचि म कुछ भी नही हे। दुनिया का प्रथम नम्बर का धनी, द्वितीय नम्बर का धनी आर तृतीय नम्बर का धनी, बस यही उनकी सूचि हे। जो लोग शीर्षस्थ धनी हे वे भी शांतिपूण जीवन जी रह हे, ऐसा नही कहा जा सकता। उनके कारण बहुत सारे लोग गरीब हे, यह बात तो स्पष्ट हे। जो लोग गरीब ह वे दु खी ही है ऐसा तो नहीं कहा जा सकता, पर अमीरी म से सुख निकल ही आये, ऐसा भी नही कहा जा सकता।

किसी अग्रेजी लेखक ने ठीक ही कहा ह–The tiger of worldy desires in human mind is make terrible in living one unlimited desires leads one on the path of destrucation स्टडर्ड ऑफ लिविग की धारणा ने भी आदमी को बहुत धोखे मे डाल दिया। हर व्यक्ति की लालसा होती हे कि जीवन स्तर ऊचा हाना चाहिए। समस्या यह हे कि उसके लिए साधन प्राप्त नही हे। प्रतिष्ठा का मानदड विकास का चिन्ह मान लिया गया। यह भी मान लिया गया कि इतनी बाते तो होनी ही चाहिए। यदि यह धारणा होती–जीवन की प्राथमिक आवश्यकताओ

की पूर्ति होनी चाहिए, तो कोइ समस्या नहीं थी। यह एक स्वस्थ चितन हे। पशु-पक्षी भी अपनी आवश्यकताआ की पूर्ति करते हे तो मनुष्य जेसा बुद्धिमान प्राणी न करे, यह केस हो सकता हे? किंतु स्टेंडर्ड ऑफ लिविग की धारणा ने प्राथमिक आवश्यकताआ को गोण कर दिया तथा अनावश्यक वस्तुओ के प्रति आकपण पेदा कर दिया। कुछ लोगो के स्वार्थ ने परस्पराथ की उपपत्ति का विनाश कर दिया। उपभोक्तावाद को आज जो हवा मिल रही हे उसके मूल मे अधिक उत्पादन ओर फिर उसका आकपक विज्ञापन ये ऐसी वाते हे जो कुछ महापरिग्रही लोगा की मनोवृत्ति को उभार रही हे।

आज का अर्थशास्त्र यह भी कहता हे—इच्छा को वढाओ। इच्छा वढगी तो उत्पादन वढेगा। इसी से उद्योगवाद को वढावा मिला। मनुष्य ने विज्ञान का विस्तार तो किया, कल-कारखाने भी वढे पर उनका रुख-मुख समस्त की ओर नहीं हुआ। यह नही कहा जा सकता कि विज्ञान की उपलव्धिया का सावजनिक उपयोग नहीं हुआ। पर यह भी नही कहा जा सकता कि उसका दुरुपयोग नहीं हुआ। मनुष्य ने विज्ञान को अपने स्वाथ का केन्द्र वनाकर वडे-वडे उद्योग धधे विकसित किए। वल्कि उद्योग-धधो म भी वे ही उद्योग धधे ज्यादा सुविधाए एकत्र कर रहे ह जो हथियारा का उत्पादन करत हे। हथियारो के उत्पादन से पेसा कुछ देशो या व्यक्तियो मे ही कन्द्रित हो गया। एक एसा अर्थशास्त्र पेदा हो गया जो पूजी के केन्द्रीकरण की दलाली करने लगा। यह स्वार्थवाद का ही चरमोत्कर्प हे। यदि परस्पराथ इसके केन्द्र म होता तो कुछ जगह अर्थ के अम्वार नहीं लगते ओर कुछ जगह लोगा को खाने के लिए या प्राथमिक आवश्यकताओ को पूरा करने के लिए ही तरसना नही पडता। आज टेक्नोलोजी का वहुत विकास हुआ है, इसमे कोइ संदेह नही है। किंतु इसके साथ यदि करुणा रहती तो शायद मनुष्य जाति के लिए इतना खतरा पेदा नही होता। टेक्नोलोजी का प्रयोग जिस सूक्ष्मता के साथ सहार की दिशा मे हुआ हे, उतना लाभ की दिशा मे नही हुआ। इसका कारण यही हे कि मनुष्य मे साम्राज्यवाद की, अधिनायकवाद की मनोवृत्ति का वदलाव नही हुआ। भले ही आज सव जगह लोकतत्र प्रतिष्ठित हो गया हो पर

राष्ट्रीयवाद ने मनुष्य को क्षत-विक्षत कर दिया। एक समय था जव जमीन का सामाज्यवाद चलता था। भूमि पर अधिकार करो, अधिकाधिक जमीन हडपो, यह एक प्रकार का भोगोलिक साम्राज्यवाद था। आज महत्त्व इस वात का नही हे कि हमारे पास भूमि कितनी ह, महत्त्व इस वात का हे कि हमारे हाथ म वाजार कितना हे। कइ देश जनसख्या की दृष्टि से वहुत छोटे हे, उनके पास जमीन भी ज्यादा नही हे किन्तु विश्व वाजार म वे सर्वाधिक प्रभावी हे।

आज विलासिता ओर सोन्दर्य प्रसाधना के निर्माण मे कितने कितने निरीह ओर मूक प्राणियो की निर्मम हत्या की जा रही हे। मुलायम ओर कठोर टिकाऊ प्लास्टिक वनाने के लिए स्थापित किए जाने वाले कारखानों मे लाखो चूजा के अविकसित परो को काट कर, इस्तेमाल किया जा रहा हे। मास के निर्यात के लिए कितने ही वूचडखाने लगाने पडे इसकी कोई चिन्ता नही है। यह सव परिग्रह के लिए हो रहा हे। क्योंकि क्रूरता के विना विपुल धन की प्राप्ति सभव नहीं हे। माया, कूट-कपट, प्रपच सव परिग्रह के लिए ही करने पडते हे। काला धन, रिश्वत, धमकी, हत्या, अपहरण आदि सव परिग्रह के लिए ही हो रहे ह। जव तक अल्प परिग्रह की यात समझ मे नहीं आयेगी तव तक इन क्रूरताआ से वचा नही जा सकता।

अल्प परिग्रह अल्प आरभ से जुडा हुआ हे। जहा महारभ होगा वहा अल्प परिग्रह की वात सोची ही नही जा सकती। वहा तो महा परिग्रह ही होगा। अपरिग्रह के अर्थशास्त्र के केन्द्र मे अर्थ नही होगा अपितु प्राणी होगा। मनुष्य भी एक प्राणी हे, पर प्राणी केवल मनुष्य ही नही हे। मनुष्य के अतिरिक्त भी वहुत सारे प्राणी हे। परस्परार्थ की दृष्टि से उनका भी मूल्य हे। आज उद्योग धधो के विस्तार के साथ प्रदूषण की जो समस्या भयकर वनती जा रही हे, वह वहुत खतरनाक हे। उद्योग-धधो ने न केवल वनो आर धरती का ही दोहन किया ह अपितु हवा, पानी आदि के विनाश के रूप म पूरे पयावरण को दूषित वना दिया हे। वनस्पति, पृथ्वी, पानी, हवा आदि मे भी जीवन हे। आज जिस तरह से इनका विनाश हो रहा हे वह स्वय मनुष्य के लिए एक

चुनौती ह। यदि पर्यावरण का सतुलन विगड़ा तो पूरी धरती का अस्तित्व खतर म पड जायेगा। जव पयावरण ही विनष्ट हो जायेगा तो मनुष्य कहा वचेगा? पयावरण की सुरक्षा कवल परमाथ की अर्थात् प्राणीमात्र के हित की ही वात नहीं हे अपितु मनुष्य के अपने हित की वात भी है। यही परस्पराथ की वात है।

अथशास्त्र का सूत्र है--आवश्यकता का असीम विस्तार दो, कही रोको मत। इससे भी मनुष्य किनारे पर लग जाता हे और अर्थ केन्द्र मे आ जाता है। सुविधाओ के लिए अर्थ की आवश्यकता से इन्कार नहीं किया जा सकता। क्योंकि मनुष्य मे कामना है। कामना है तो फिर सुविधाए भी अनपेक्षित नहीं रह सकतीं। कामना और सुविधा को अलग नहीं किया जा सकता। सुविधा की भी अपेक्षा है किन्तु जहा सुविधाआ का अतिरेक हो जाता है वहा मनुष्य गौण वन जाता हे और अर्थ प्रधान बन जाता है।

अथशास्त्र के हिसाव से पैसा साध्य है। अपरिग्रह के हिसाव से पैसा साध्य नहीं साधन है। जव पेसा साध्य वन जाता है तव साधन शुद्धि पर वल नहीं रह जाता। येन-केन-प्रकारेण पैसा कमाना ही साध्य वन जाता है। इससे ही वहुत सारी वुराइया पैदा होती हे। ऐसी स्थिति म अपरिग्रह का विचार ही मनुष्य का मार्ग-दशन कर सकता हे।

अहिसा एक महत्त्वपूर्ण सिद्धान्त है, पर उसका मूल व्यक्तिगत अधिक ह। अपरिग्रह एक सामाजिक मूल्य भी है। इसलिए वह अहिसा से भी ज्यादा महत्त्वपूण है। हिसा परिग्रह के लिए ही की जाती है। जहा अपरिग्रह की प्राप्ति हो जाती है वहा हिसा अपने आप समाप्त हो जाती हे।

अर्थशास्त्र की दृष्टि से गरीवी ओर अमीरी ये दो महत्त्वपूर्ण शव्द ह। पर वास्तव मे गरीवी ओर अमीरी पैसे मे नहीं अपितु मनोभाव मे ह। गरीवी दु खद तो हे, पर जब अपरिग्रह की मनोदशा जाग जाती हे तो वह भी सुखद वन सकती है। इसके विपरीत ऐस अमीरो की कमी नही हे जो अपने अर्थ के कारण ही दु खी होते हे।

अपरिग्रह

अपरिग्रह की व्याख्या करते हुए कहा गया है—'मुच्छा परिग्गहो वुत्तो' मूर्च्छा-आसक्ति परिग्रह है। जब तक मनुष्य मे आसक्ति रहती है तब तक गरीबी उसका पीछा नहीं छोड़ती। ऐसे लोगो के पास कितना ही अर्थ एकत्रित क्या न हो जाए पर उनकी मानसिक गरीबी कभी नहीं मिट सकती। वे लोग न केवल स्वयं ही दुखी रहते हैं अपितु दूसरो के लिए भी दुःख का निमित्त बनते है। दूसरी ओर अपरिग्रही मनोदशा वाले व्यक्ति के पास कितना ही अभाव क्या न हो वह कभी दुःखी नहीं बनता। बल्कि जिन लोगो की वह मनोदशा बन जाती है, अर्थ अपने आप उनसे छूट जाता है। उनसे छूटने वाला अर्थ अपने आप अभाव ग्रस्त लोगो तक पहुच जाता है।

अपरिग्रही होने का अर्थ यह नही है कि मनुष्य के पास अर्थ पदार्थ नही हो। यदि ऐसा होता तो पशु-पक्षी या भिखारी सबसे ज्यादा अपरिग्रही बनते। पर वास्तव मे ऐसी स्थिति नही है। अपरिग्रह तो एक मनोदशा है। जब वह मनोदशा आती है तो अर्थ एक बोझ महसूस होने लगता है। उसे पैसा छोडना नहीं पडता, अपितु अपने आप छूट जाता है।

अपरिग्रही वृत्ति वाला व्यक्ति अर्थ के अभाव मे भी सुखी रह सकता है जबकि परिग्रही मनोवृत्ति वाला व्यक्ति अपार ऐश्वर्य मे भी अभाव महसूस करता है। उनके पास सोने चादी के पहाड हो जाए तो भी उन्हे शांति नही मिलती। वे अधिक से-अधिक सग्रह परिग्रह मे ही व्यस्त देखे जाते है। अपरिग्रही व्यक्ति सग्रह-परिग्रह से दूर होना चाहता है। यही वास्तव मे आर्थिक विषमता का सही समाधान बन सकता है।

पर्यावरण सतुलन और अहिसा

अहिसा एक ध्रुव सत्य हे। सभी धर्मो ने इस पर विचार किया है। पर जेन धर्म मे इस पर अत्यत सूक्ष्मता से विचार किया गया हे। समय-समय पर इसकी उपयोगिता भी समझ मे आती रही हे। कभी-कभी लगता हे जेनधर्म अव्यवहाय हे। वह जीवन की रसमयता को क्षीण करता हे। पर जव व्यापक परिप्रेक्ष्य मे देखा जाता हे तो यह समझने मे कठिनाई नही होती कि वह सत्य की गहरी समझ हे।

आज पर्यावरण प्रदूषण की समस्या जिस तरह उभरकर सामने आ रही हे उससे लगता हे कि जेनधर्म का विचार-दर्शन अत्यत प्रासगिक वनता जा रहा हे। असल मे जव भी कोइ विचार गहराइ से देखा जाता हे तो उसम वारीकिया आती ही हे। सभी धर्मो ने सत्य की गहराइयो म उतरने का प्रयास किया हे पर जेनधम जिस तलस्पशिता तक पहुचा हे वह अप्रतिम हे। वास्तव म यह एक वेश्विक मत्य हे। इसीलिए देश-काल की सीमा से अतिक्रान्त हे। भगवान महावीर आज से २५२४ वर्ष पूर्व हुए थे। उन्होने सत्य का जो साक्षात्कार किया वह जेन विचार का उत्स वन गया। यह उनके विचार की सप्राणता का ही प्रमाण हे कि आज वह विज्ञान की कसोटी पर भी कसा जा रहा हे। अणु से लेकर पूरे लोक-अलोक तक की वातो पर जेनधर्म मे विचार हुआ हे। पर्यावरण पर भी गहरा विचार हुआ हे।

अद्वैत दृष्टि

विश्व एक अद्वेत सत्ता है। वह किसी एक प्राणी के लिए नही हे। उसमे जड-चेतन सभी परस्पराधारित हे। मनुष्य तो उसका एक अश हे। भले ही मनुष्य दृश्य दुनिया का सबसे वुद्धिमान प्राणी हे। पर जीवन-सत्ता

की दृष्टि से पशु पक्षी, कीडे-मकोडे आदि सभी प्राणिया का अस्तित्व हे। वनस्पति मे भी जीवन का अस्तित्व है। विज्ञा ा ने तो वनस्पति के जीवन को अभी थोडे समय पहले स्वीकार किया है। पर भगवान महावीर ने तो उसे ढाई हजार वर्ष पहले ही स्वीकार कर लिया था। बल्कि उन्हाने तो षड्जीवनिकाय के रूप मे पृथ्वी, पानी, अग्नि, हवा आदि मे भी जीवन को स्वीकार किया था। विश्व का कोई भी कण ऐसा नहीं हे जहा जीवन का अस्तित्व नहीं है। वास्तव मे जीवन का अस्तित्व ही विश्व का अस्तित्व है। जव भी हम एक छोटे से जीव की हिसा करते ह तो विश्व-व्यवस्था में व्यवधान पैदा करते है। इसीलिए उन्होने 'अत्त समे मन्निज्ज छप्पी काये' कहकर हर जीवन को बरावरी का दर्जा दिया हे। षड्जीवनिकाय का सिद्धान्त पर्यावरण की सटीक व्याख्या है।

कुछ लोग एकात्म विश्व को तो मानते है, पर वे सव जीवो को ब्रह्म के अश के रूप मे स्वीकार करते है। भगवान महावीर ने भी 'एगे आया' कहकर पूरे जीव जगत् मे आत्मा के एकत्ववाद को तो स्वीकार किया है, पर साथ ही उन्होने 'पुढो सत्ता' कहकर हर जीवन की स्वतत्र अस्मिता को भी स्वीकार किया हे। इसका अर्थ यह हे कि अपने भले-बुरे के लिए हर प्राणी स्वय जिम्मेवार है। ईश्वर न तो किसी का निर्माण करता हे, न किसी का पालन करता है, न विनाश करता हे। पूरी दुनिया अपनी प्राकृतिक व्यवस्था के अनुसार चलती हे। वास्तव मे एगे आया, षड्जीवनिकाय तथा पुढो सत्ता का विचार पर्यावरण की दृष्टि से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण हे। यह आत्म कर्तृत्व की स्वीकृति है।

केवल मनुष्य नहीं

महावीर की दृष्टि से सृष्टि के केन्द्र मे केवल मनुष्य ही नहीं ह। भले ही मनुष्य एक सवाधिक विकसित प्राणी हे, पर आत्मवाद मे विश्वास करने वाला व्यक्ति किसी भी जीवन का अनादर नही कर सकता। आज पर्यावरण पर जो विचार हो रहा हे, वह केवल मनुष्य के अस्तित्व के लिए हो रहा हे। पर वास्तव मे मनुष्य की महत्ता इसलिए नहीं है कि वह अपनी रक्षा कर सकता है। उसकी महत्ता ता इसमे हे कि वह सब

जीवो की रक्षा मे ही अपनी रक्षा मानता है। मनुष्य यदि दूसरो का विनाश कर अकेला जीना चाहे तो वह सभव नहीं है। महावीर ने कहा है—जो सूक्ष्म जीवो के सुख-दुख को जानता है वही अपने सुख-दु ख को जानता है। जो सूक्ष्म जीवा के अस्तित्व को अस्वीकार करता है, वह अपने अस्तित्व को ही अस्वीकार करता है। सचमुच यह एक बहुत मूल्यवान् प्रतिपत्ति है। यही पूरे पर्यावरण क साथ जीने की सही दृष्टि है।

प्रलय से बचाव

प्रकृति एक अनत-अगम रहस्य है। उसे समझ पाना सामान्य आदमी के वश की बात नहीं है। इसके अपने प्राकृतिक सतुलन है। पूरे विश्व का व्यवस्था तत्र इतना जटिल हे कि वह एक गहरा रहस्य है। निश्चय ही विश्व में अपार प्राकृतिक सम्पदाए भरी पडी है। पर यदि उनके दोहन में विवेक का परिचय नही दिया गया तो विपदाओ के आगमन को भी रोका नहीं जा सकता। प्रकृति के अनत रहस्यो मे प्रलय भी एक सत्य है। वह कब और कैसे आता है इसके व्यापक तथा अज्ञात वैश्विक कारण है। पर मनुष्य ने यदि अपने विवेक का इस्तेमाल नहीं किया तो वह भी प्रलय को एक निमत्रण बन सकता है।

अनर्थ हिसा से बचाव

यह सही है कि मनुष्य को जीने के लिए प्रकृति पर निर्भर रहना पडता हे। इससे कुछ सूक्ष्म जीवो की हिसा अनिवार्य हो जाती है। पर हिसा जीवन का सिद्धान्त नहीं बन सकती। जीवन परस्पर सापेक्ष है। हम वनस्पति को ही ले। मनुष्य श्वास के द्वारा कार्बन छोडता है उसे ग्रहण कर पेड़-पोधे बढते है। वनस्पति ऑक्सीजन छोडती है उसे ग्रहण कर मनुष्य जीता हे। परस्पर का यह उपग्रह ही जीवन हे। जब भी यह प्राकृतिक सतुलन बिगडता हे तो अव्यवस्था फेलती है। बढती हुई जनसख्या भी इसका एक कारण हो सकती है। पर मनुष्य यदि निरर्थक रूप से वनस्पति का विनाश करता हे तो वह प्राकृतिक सतुलन को अस्थिर बनाने का एक अप्राकृतिक कारण बन जाता है। इसीलिए जैन धर्म मे

अनर्थ हिसा से वचना वहुत जरूरी वताया गया है। भगवान महावीर ने श्रावक के वारह व्रतो मे आठवा व्रत ही अनथ हिसा का परित्याग रखा हे। यदि आदमी अनथ हिसा से वच जाए तो भी वह पयावरण के लिए खतरा वनने से वच सकता है।

युद्ध और पर्यावरण

आज दुनिया मे युद्ध की जितनी तैयारिया हो रही है वे सारी अनथ हिसा की ही द्योतक है। युद्ध म मनुष्यो की निथक हिसा तो होती ही है पर पयावरण की भी भयकर क्षति होती है। जहा एक वार अणु आयुधा का प्रयोग हो जाता है वहा वर्षो वर्षो तक प्रकृति अपना मूल स्वरूप ग्रहण नहीं कर पाती। अनगिन प्राणी विना मतलव ही काल के गाल म समा जाते है। जो प्राणी वच जाते है वे भी भयकर वीमारिया से ग्रस्त हो जाते है। युद्ध से कभी शांति नही हो सकती। शांति तो मेत्री-अहिसा से ही सभव है।

जेनधर्म मे तो हथियार के प्रयोग को ही हिसा नही माना हे अपितु दूसरे को शस्त्र देना या उसका व्यापार करना भी अनर्थ हिसा माना गया हे। इस दृष्टि से देखा जाए तो आज शस्त्र का व्यापार जिस तरह फल-फूल रहा है वह एक वहुत वडी अनथ हिसा हे। कुछ देश टेक्नोलोजी के नाम पर शस्त्रास्त्रो के निर्माण एव व्यापार द्वारा अपनी आर्थिक समृद्धि का प्रवन्ध कर न केवल विश्व की अर्थव्यवस्था का ही विघटित कर रहे हे अपितु पर्यावरण के लिए खतरा भी पेदा कर रहे हे। यदि अणु अस्त्रो की होड को वढावा मिला तो भविष्य ओर भी सकटमय वन जायेगा। वास्तव मे शस्त्र मे एक प्रतिस्पधा हाती है। वह आगे से आगे वढती जाती है। अणुवम के वाद परमाणु वम तथा हाइड्रोजन वम जसे आविष्कार हो रहे ह। एक हाइड्रोजन वम हजारो अणुवमो से भी ज्यादा खतरनाक होता हे। उससे अपार उर्जा पेदा होती हे। लाखा डिग्री सटीग्रेड तापमान वढ जाता हे। उससे पूरे पर्यावरण की अपार क्षति होती हे।

वीमारिया और पर्यावरण

पर्यावरण के विनाश का अर्थ है पृथ्वी, पानी, अग्नि, हवा, वनस्पति तथा अन्य त्रस जीवा की हिसा। पर्यावरण की हिसा वास्तव मे मनुष्य की स्वय की हिसा है। प्रदूषण के कारण मनुष्य स्वय मृत्यु के नजदीक पहुच जाता है। ओद्योगिकीकरण, शहरीकरण और खेती के आधुनिकीकरण से पयावरण पर जो हमला हुआ है उस पर प्रकाश डालते हुए राष्ट्रीय स्वास्थ्य एव पर्यावरण सम्मेलन मे वोलते हुए उपराष्ट्रपति डॉ कृष्णकात ने कहा है—हम ऐसे ऐसे नये पदार्थ वनाते जा रहे है जिनसे प्रकृति अपनी रक्षा नहीं कर सकती। अपने प्रायोगिक अहकार मे खुद मा-प्रकृति के शत्रु हो गए है। उन्होंने कहा कि इन नये-नये रसायना के सम्पर्क से अनेक वीमारिया यहा तक कि केंसर का ग्राफ भी वढ रहा है।

भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसन्धान परिपद् के पूर्व महानिदेशक डॉ वी रामलिगा स्वामी ने कहा है—वच्चो मे होने वाली दो तिहाई वीमारिया प्रदूषणजनित कारणो से होती है। ये वीमारिया ऐसी है जिन्हे रोका जा सकता है। यदि वायु-प्रदूषण घटा कर विश्व स्वास्थ्य सगठन द्वारा तय किए गए मानदडो पर ले आया जाए तो लगभग २ करोड लोगो को सास की वीमारियो के ईलाज के लिए न जाना पडे। आज तक १ करोड १० लाख रसायना की जानकारी प्राप्त की जा सकी है। इनमे से लगभग एक लाख रसायनो का औद्योगिक स्तर पर उत्पादन हो रहा है और एक हजार नए रसायन इस श्रेणी म आ जाते है। प्रदूषण की समस्या के विविध रूप है। धरती मे पोपक-तत्त्वो का कम होते जाना भी इसी का एक रूप है।

वेज्ञानिको का अभिमत है कि सघन खेती तथा रासायनिक खादो के कारण मिट्टी से ताम्वा, मोलीवदनम, मगनीज, जिक आदि पोपक तत्त्व कम हो रहे है। इससे खाद्य-पदार्थो मे भी इन चीजा की कमी होती जा रही है। पजाव मे १९६५ के आसपास ही जिक की कमी हो गई थी। अस्सी के दशक तक मेगनीज ओर लोह कम होने लगा था। आज भारत की ४७ प्रतिशत धरती जिक की कमी से ग्रस्त हो चुकी है। इससे किशोर-किशोरियो का शारीरिक विकास प्रभावित हो रहा ह।

मधुमेह हृदयरोग आदि बीमारिया भी बढ़ रही है।

मुबई स्थित इस्टीच्यूड फोर रिसर्च इन प्रोडेक्मन की वैज्ञानिक कमला कृष्णन् का अभिमत हे कि भारत मे पिछल १० वर्षो से किए गए अध्ययना से उजागर हुआ है कि भारतीय पुरुपो के वीर्य म शुक्राणुओ की सख्या ४३ प्रतिशत से नीचे गिर गई है और उनकी सरचना मे ३० प्रतिशत अतर आ गया है। प्रदूपका मे एस्ट्रोजीन पर प्रभाव डालने वाले एस पदार्थ होते है, सभवत उसे ही यह अतर आता है।

पृथ्वी-पानी प्रदूषण

आज पृथ्वी का जो वेहिसाव उत्खनन किया जा रहा है उससे उसका प्राकृतिक सतुलन विगड़ रहा है। कोयला, लोहा, पेट्रोल आदि पदार्थो के अतिशय दोहन से न केलव इनके भडार ही खत्म हो रहे है अपितु प्राकृतिक सतुलन मे भी अतर आ रहा है। पानी के अतिशय दुरुपयोग के कारण न केवल जमीन का जल स्तर ही नीचे गिर रहा है अपितु मल एव औद्योगिक-रासायनिक कचरे के कारण शुद्ध जल भी दुर्लभ होता जा रहा हे। वेज्ञानिको का अभिमत हे कि वर्तमान का हमारा सकट पेट्रोल हे तो आगे का सकट पानी होगा। यदि भविष्य मे विश्व युद्ध हुआ तो सभवत उसका कारण पानी ही रहेगा। प्रदूपित पानी से मनुष्य को ही नुकसान नही हो रहा हे अपितु जल-जीवों के जीवन के लिए भी खतरा पेदा हो गया हे। ईधन के दुरुपयोग से तो आज शहरो म रहना ही मुश्किल हो गया है। पेट्रोल से जो धुआ निकलता है उससे अनेक प्रकार की बीमारिया फेल रही है। फेक्ट्रियो एव कारखानों से निकलने वाला धुआ भी एक समस्या हे। पृथ्वी का तापमान निरतर वढता जा रहा हे। तापमान यदि इसी प्राकर वढता रहा तो पहाड़ो की बर्फ पिघल कर समुद्रो के जल स्तर मे वृद्धि कर प्रलय का द्वार खोल सकती ह। वज्ञानिक सर्वेक्षणो से पता चला हे कि पिछले वर्पो मे कार्बन डाइऑक्साइड की मात्रा तेजी से वढ रही है।

वायु-प्रदूषण

पचास से ज्यादा प्रतिशत वायु-प्रदूषण तो स्वचालित वाहनो से हो

रहा है। साधारतया वायुमडल मे ०१ पी पी एम कार्बन मोनोक्साइड होता है। परतु कार, ट्रक, इंजिन आदि के कारण उनकी सान्द्रता ३५० पी पी एम से भी ऊपर चली जाती है। वायु के इस प्रदूषण के कारण ओजोन परत मे भी छेद हो गया है। यदि यह क्रम इसी तरह बढता रहा तो धरती पर आने वाली परावेगनी किरणो का अवशोषण वद हो जायेगा और उससे धरती पर प्राणियो का जीवित रहना भी मुश्किल हो जायेगा। पारे जैसी जहरी धातु जो समग्र स्नायुतत्र को नष्ट करने मे सक्षम है, हवा मे फैल रही है। सीसे के जहर मानव-मस्तिष्क के ततु नष्ट हो रहे हे। निकल, क्रोमियम, मेगेजिन जेसी धातुओ से फेफडों तथा केसर की बीमारिया बढती हे। अमेरिकन पब्लिक हैल्थ ऐसोसिएशन के अध्ययन के अनुसार बच्चो मे दमे तथा चमडी के रोगो के लिए भी वायुप्रदूषण उत्तरदायी है।

ओजोन परत को नष्ट करने मे नाइट्रिक ओक्साइड तथा फ्लोरिन ओक्साइड ये दो गैसे प्रमुख हे। ऊची उडान भरने वाले सुपर सोनिक जेट विमान नाइट्रिक एसिड पेदा करते है। उससे ओजोन को क्षति पहुचती हे। पर उससे भी ज्यादा क्षति फ्लोरिन ओक्साइड से होती है। फ्लोरिन ऑक्साइड निर्माण फ्लोरो कार्बन नामक रसायन से होता है। यह प्राकृतिक रसायन नहीं हे। उसका निर्माण मनुष्य ने नहीं किया है। वह फ्लोरिन ओर कार्बन का योगिक हे। वह ऊचे तापमान को सह सकता हे इसलिए ज्यादा टिकाऊ है। अनेक उद्योगो मे उसका व्यापक उपयोग होता है। रेफ्रीजरेटरो तथा एयरकडीशनरो मे काम आने वाले द्रव्य ऐरासील स्प्रे, मजबूत प्लास्टिक फॉम के निर्माण मे फलोरो कार्बन के यौगिको का उपयोग होता हे। यह कार्बन वायुमडल मे पहुच कर हवा के अन्य अणुओ से मिल कर वायु मे फैल जाता है। वेज्ञानिको का मत हे कि ये परमाणु पचास से सो वर्ष तक विनष्ट नहीं होते। धीरे-धीरे वे समताप मडल मे ओजोन परत तक पहुच जाते हे। वहा पराबेगनी किरणो से उनके बन्धन टूट जाते है। इस प्रक्रिया मे फ्लोरिन मुक्त परमाणु ओजोन के परमाणुओ को तोडते चले जाते हे यह क्रिया-प्रतिक्रिया लम्बे समय तक चलती रहती है। वेज्ञानिक गणना के अनुसार फ्लोरिन का एक कण

ओजोन के एक लाख अणुओ को नष्ट कर देता हे। इस प्रकार विविध रूपा मे ओद्योगिकरण के कारण पृथ्वी पर भयकर प्रदूपण फेल रहा हे।

ध्वनि-प्रदूपण

वायु-प्रदूपण का एक प्रकार हे ध्वनि-प्रदूपण। भगवान महावीर ने कहा था—'ज सम्मति पासइ त मोणंति पासइ' जो सत्य को जानता ह वह मोन को जानता हे। जो मोन को जानता हे वह सत्य को जानता हे। इस उक्ति मे सचमुच मे वहुत गहरा अर्थ छिपा हुआ हे। ज्यादातर लोग शब्द को भापा के रूप मे ही जानते हे पर शब्द का ध्वनिरूप मनुष्य के लिए कितना खतरनाक हो सकता हे यह आज बहुत स्पप्ट हो गया हे। बोलने से मुनष्य की स्वय की शक्ति तो क्षीण होती ही हे पर ध्वनि का प्रहार इतना विस्फोटक होता हे कि उससे कान के कोमल परदे क्या मोटे-मोटे पत्थर भी टूट जाते हे। वस्तुत ध्वनि-प्रदूपण आज के युग की गभीर समस्या बन गया हे। वाहनो का कोलाहल, विमानो की कर्णभेदी ध्वनि, तरह-तरह की मशीनो की धडधडाहट, वातानुकूलित यत्र, रेफ्रीजरेटर आदि का सूक्ष्म कम्पन, रेडियो वाद्ययत्रो तथा लाउड स्पीकरो पर गूजता सगीत, टेलीफोन, टाइपराइटर्स आदि की आवाज, सार्वजनिक सभाओ, शोभा-यात्राओ, पोपसगीत की गगन भेदी आवाज आदि न जाने कितनी प्रकार से प्रत्येक क्षण आदमी के कानो पर आक्रमण कर रहे ह। यद्यपि प्राचीन काल मे भी ध्वनि नही होती थी ऐसा नही हे, परतु आज शहरो की आबादी तथा कारखानो की अतिशय वृद्धि से यह समस्या गभीर बन गई हे। प्रतिवर्प १० प्रतिशत के हिसाब से बढने वाली ध्वनि पर नियत्रण स्थापित नही किया जा सका तो वेज्ञानिको का मानना हे कि थोडे वर्षो मे बहरापन एक व्यापक रोग जेसा रूप धारण कर लगा।

कोलाहल से मृत्यु एक हास्यास्पद कल्पना जेसी बात लगती हे। पर आज यह एक हृदय-विदारक कटु सत्य बन गया है। अमेरिका के वातवरण-सरक्षण विभाग ने अपनी रिपोर्ट मे बताया हे कि तीव्र आवाज के कारण अमेरिका के करोडो नागरिको के आरोग्य को नुकसान पहुचा हे। कार्यालय तथा घर मे शात जीवन व्यतीत करने वाले करोडो लोगो

की कार्यक्षमता म भी ह्रास हुआ है। लाखो लोग तो विना श्रवणमत्र के सुनने म भी असमथ हो गए है। असह्य ध्वनि का प्रभाव केवल कान पर ही नही पड़ता। अपितु समग्र शरीर पर पडता हे। श्वसन तत्र, पाचन तत्र, जनन क्षमता पर भी इसका गहरा प्रभाव पडता हे। इतना ही नही मस्तिष्क तथा स्नायुओं, खासकर हाथ-परा की नाजुक रक्तवाहिनिया पर भी उसका गहरा प्रभाव पडता हे। आखा की वीमारी, शरीर दद आदि वीमारिया की भी इसस भयकर प्रवृद्धि हो रही है। ध्वनि का सवसे खराव असर तो मज्जातत्र पर पडता हे। उसके कारण अनिद्रा, चिडचिडापन, निराशा आदि के रूप म मानसिक स्वास्थ्य क्षतिग्रस्त होता हे। इन सदर्भो मे मौन अशव्द का महत्त्व अक्षीण है।

वनस्पति-प्रदूषण

पेड-पौधो के कारण ही पृथ्वी पर जीवन शक्य हे। उनके विना जेविक-प्रक्रिया अशक्य हे। जेविक सतुलन को वनाये रखने के लिए वनस्पति की हिसा से वचना आवश्यक हे। वास्तव मे वनस्पति मनुष्य के लिए वरदान हे। जगत मे जितना प्राणवायु हे उसका वडा भाग वनस्पति द्वारा ही उत्पन्न होता है। असल मे तो मनुष्य का जीवन वनस्पति पर ही आधारित हे। उसका विनाश मनुष्य का स्वय का विनाश हे। प्राचीन काल मे अनेक प्रकार के फला की उपलब्धता के सकेत मिलते ह। पर सरक्षण के अभाव म वे लुप्त हो गए हे। आज जिस प्रकार से वनस्पति का दोहन हो रहा ह यह वहुत चिता का विषय हे।

वनस्पति की अहिसा का महत्त्वपूर्ण पक्ष यह हे कि उससे प्राकृतिक सतुलन पदा होता ह। जगत मे जितने पदाथ है वे धरती की मूल्यवान सम्पदा हे। इस दृष्टि से वृक्ष कवल स्वय ही सजीव नही है, अपितु वे पृथ्वी पर जीवन-धारा से जुडी हुई प्राकृतिक उपलब्धि हे। जय वन का सहार होता ह तो वर्षा का सतुलन भी विगड जाता हे। पहली वात तो यह हे कि उसके कारण वर्षा के प्रमाण म जवरदस्त कमी आ जाती हे। दूसरी वात यह हे कि वृक्षा को काटने से जगलो की जल सग्रहण क्षमता भी घट जाती है। उनसे पहाडो का स्खलन हो जाता ह, पानी

के प्राकृतिक वधन क टूट जान से वाढ का प्रलयकारी दृश्य भी उपस्थित हो जाता है। उससे रेगिस्तान का विस्तार होता है। पृथ्वी पर से वनस्पति के विनाश से मनुष्य के आचरण में भी स्वाभाविकता कम होने लगती ह। भगवान महावीर ने कहा है--साधक न स्वय वनस्पति का विनाश करे, न औरो से करवाये आर न उसका समर्थन करे। वनस्पति की हिसा स्वय मनुष्य की अपनी हिसा है। अमेरिका की अपराध निवारण शाखा ने अपनी रिपोर्ट में कहा हे--हिसात्मक प्रवृत्तिया का कारण वहा की धरती का लगातार वन विहीन होते जाना है। वन विहीन क्षेत्रो के निवासियो के वर्वर, क्रूर होने का कारण वहा ऑक्सीजन की कमी है। उससे शारीरिक ओर मानसिक रोगा म वृद्धि होती है। वन प्राणवायु के भडार ह। एक आदमी को प्रतिदिन कम से कम १५ किलो प्राणवायु की आवश्यकता होनी हे। उसके लिए ५० टन के ५ वृक्ष आवश्यक ह। इसे यदि दूसरे शब्दा मे कहा जाये तो ५ वृक्षा को काटने का अर्थ हे एक मनुष्य को मृत्यु के मुख मे धकेल देना।

इस तरह हम समझ सकते हे कि पर्यावरण की सुरक्षा के लिए वनस्पति की अहिसा कितनी आवश्यक ह। भगवान महावीर एक महाव्रती, पूर्ण अहिसक महापुरुष थे। पर उन्होने आम आदमी के लिए अणुव्रती के रूप मे अल्पारभ की सज्ञा प्रदान की। यदि सभी लोग इस व्रत को स्वीकार कर ले तो सहज ही प्रदूषण की समस्या को विकट होने से वचाया जा सकता हे।

अल्पारभ-अल्पपरिग्रह

अल्पारभ का ही दूसरा सिरा हे अल्प परिग्रह। सामान्य आदमी पूणत अपरिग्रही नही वन सकता। पर वह अपनी इच्छाआ पर तो अकुश लगा ही सकता ह। यद्यपि आज के अर्थशास्त्र मनुष्य की कृत्रिम इच्छाआ को उभार कर उपभोक्तावाद तथा महापरिग्रह की भावना को वढावा दे रहे हे। उनका सूत्र हे आवश्यकताए वढेगी तो उत्पादन वढेगा। उत्पादन वढेगा तो मनुष्य को सुख समृद्धि प्राप्त होगी। पर असल म इस सिद्धात ने विनाश का ही आमत्रण दिया हे। आज उपभोक्तावाद के कारण प्रकृति

का जो दोहन हो रहा है उससे कोन अपरिचित है? पर उस दोहन के साथ कूडे-कचरे के रूप मे जो प्रदूषण पैदा हो रहा है वह भी कम चिता का विषय नही है। इसीलिए महावीर ने उपभोग परिभोग सीमा व्रत के रूप म पर्यावरण को अदूषित रखने का एक दूरदर्शी उपाय सुझाया। आज विज्ञापना के माध्यम से उपभोक्तावाद को जिस तरह से उभारा जा रहा है वह पूरी दुनिया के लिए चिता का विषय है। उपभोग-परिभोग की सीमा से ही इस समस्या से बचा जा सकता है।

मासाहार और प्रदूषण

पर्यावरण की सुरक्षा के लिए स्थावर-स्थिर रहने वाले प्राणियो के साथ-साथ त्रस-चलने फिरने वाले प्राणिया का भी बहुत बडा योगदान है। इस दृष्टि से पशु-पक्षियो का भी अपना महत्त्व है। इनका भी पर्यावरण से गहरा सम्बन्ध है। मनुष्य जब मासाहार के लिए पशु-पक्षियो की हत्या करता है तो वह पर्यावरण पर ही प्रहार करता है। इसीलिए भगवान महावीर ने मासाहार का विरोध किया था।

साम्प्रदायिक सौहार्द के स्वर

हर मनुष्य की सस्कारो से जुडी हुई अपनी एक सस्कृति होती हे। यद्यपि सस्कार मूल रूप से मनुष्य के आन्तरिक परिष्कार का परिचायक हे। पर होता यह हे कि परिष्कार की वात पीछे रह जाती हे ओर परम्परा आगे आ जाती हे। सस्कृति वास्तव मे सघर्ष नही करवाती। वह तो मनुष्य को सहना सिखाती है। पर जव वह केवल परम्परा वन जाती हे तब आक्रामक वन जाती ह।

भारतीय-अभारतीय

भारत की अपनी एक सस्कृति हे। इसे हम हिन्दु सस्कृति भी कह सकते हे। पर आज यहा मुसलमाना तथा ईसाईया की भी वडी सख्या हो गई हे। यह सही हे कि भारतीय मुसलमानो ओर ईसाईयो मे अधिकाश लोग भारत देश के ही हे। विदेशो से तो वहुत कम लोग आये हे। ज्यादा लोग तो वे ही हे जिन्होने अपने आपको रूपान्तरित किया हे। पर आज वे ही लोग हिन्दुत्व के विरोध मे खडे हें। यह प्रश्न हो सकता हे कि वाहर से आने वाली सस्कृनियो को प्रश्रय क्यो दिया जाए? पर यह प्रति प्रश्न भी हो सकता हे किं उनको आमन्त्रित किसने किया था? ओर उससे भी अगला प्रश्न तो यह हे कि आज भी क्या हिन्दु लोग अपनी सस्कृति के प्रति जागरूक ह? असल म तो हिन्दुत्व आज एक राजनेतिक टेनिस कोर्ट वन गया हे। नेट के दोनो तरफ हिन्दु ह। हिन्दुत्व का नारा देने वाले लोग भी हिन्दु हे ओर उसका विरोध करने वाले लोग भी मुख्य रूप स हिन्दु ही हे। हिन्दु लोग आपस म झगड रहे ह, वाकी के लोग तमाशा देख रहे हे।

सम्प्रदाय निरपेक्षता

महात्मा गाधी ने हिन्दु और अहिन्दु के बीच सामजस्य पेदा करने की एक राजनैतिक समझ का परिचय दिया था। यद्यपि उस समय भी कुछ लोगो को ऐसा लगा था कि गाधीजी अहिन्दुओ का पक्ष ले रहे हे। उनकी हत्या इसी सोच का कट्टरवादी दुभाग्यपूर्ण फेसला था। पर उसके वाद तो हालात ओर भी वदतर हो गए। कुछ लोग वोटो की दुकानदारी के तहत एक जाति विशेष के लोगो को जरूरत से ज्यादा अहमियत दे रहे हे। हिन्दु लोगो ने जितना सहा हे वह कम नहीं है। आज भी हिन्दु लोग जितना सहन कर रहे ह उतना दूसरे लोग कहा कर रहे हे? हिन्दुस्तान के आस-पास के अनेक देशो ने धर्मविशेष को राष्ट्रीयता प्रदान कर दी, पर भारत राष्ट्र धर्म निरपेक्ष है। पर अव स्थिति वदल रही हे। धर्म निरपेक्षता म भी अहिन्दु लोगो से ज्यादा तरजीह दी जाती हे तो यहा भी एक तरह की हिन्दु कट्टरपंथिता जन्म ल रही हे। उससे भी नुकसान हो रहा हे, उसे भी हिन्दु लोगो को ही उठाना पड रहा हे। न केवल देश म ही जान-माल का नुकसान हो रहा हे अपितु विदेशा म भी हिन्दु सस्कृति केन्द्रो को ध्वस्त किया जा रहा है। पर हिन्दु कट्टरपंथिता अभी भी आवेश मुक्त कहा हे? आवश्यकता तो यह ह हिन्दु लोग हिन्दुत्व को ही सगठित करे, उसका सही मार्ग दर्शन करें। पर हो यह रहा हे कि वे आपस मे ही झगड रहे हे। भला जव व अपने ही भाइया को सहन नही कर सकगे, छुआछूत जेसी घृणित ओर भेदमूलक परम्परा से जुड हुए रहेंगे तव तक हिन्दुत्व का उत्थान केसे होगा? आथिक विकास की दृष्टि से भी हिन्दुओ का आभिजात्य वर्ग गरीव लोगा को कहा आगे आने देता हे? अनेक नाम-रूपो मे वह स्वय ही तो दो भागो मे वट रहा हे। केवल जातीय ओर आर्थिक ही नही धार्मिक दृष्टि से हिन्दुत्व अनेक भागो मे वटा हुआ हे। उन सवम तालमेल विठाने की वात वहुत ठडे दिमाग से सोचने की आवश्यकता हे।

हिन्दुत्व को व्यापक वनायें

हिन्दु कट्टरवादिता आज मस्जिद ढहा रही हे। कल वह वोद्ध विहारो

को भी नुकसान पहुचा सकती हे। परसो वह जेन सास्कृतिक केन्द्रो को भी अमान्य कर सकती हे। अत सवसे पहले तो यह आवश्यकता हे कि हिन्दु लोग हिन्दुत्व को सही तरीके से परिभापित करे। आज भारत मे जितने लोग रहते हे वे भारत के नागरिक हे ओर भविष्य म भी उन्हं भारतीय नागरिक ही रहना हे। जितने भी लोग भारत म रहते हें वे सभी हिन्दु क्यो नही हो सकते है? आवश्यकता तो इस वात की हे कि हिन्दुत्व को सकीर्ण नहीं वनाया जाए। हिन्दुत्व यदि पिछड रहा हे तो अपनी सकीणता के कारण ही पिछड रहा हे। अपने आपको उदार वनाना उसके अपने ही हक मे ज्यादा अच्छा हे।

स्वार्थ से ऊपर उठें

हिन्दुत्व के पिछडने का एक दूसरा कारण है राजनीतिक स्वार्थपरता। राजनीति एक ओर धर्मनिरपक्षता का नारा देती हे तो दूसरी ओर वही वोटो के लिए जाति विशेप को अनेक प्रकार की सुविधाए प्रदान कर रही हे। इससे हिन्दुत्व को चाट पहुचती हे। पिछडेपन के कारण वह जब अपनी बात कह भी नहीं सकता तो वह विद्रोही बनता हे। उसी से उसमे कट्टरपंथिता जन्म लेती हे। वह कट्टरपथिता राजनीति के अपने लिए भी खतरनाक हे। राष्ट्र के स्तर पर भी उसके अनेक दुष्परिणाम हो सकते हे। एक भयकर विप्लव पेदा हो सकता है। नया उग्रवाद ओर आतकवाद पेदा हो सकता है।

भारत मे रहने वाल लोगो को मिलजुल कर ही रहना पडेगा। न तो यह हिन्दु राष्ट्र वन सकता हे ओर न मुस्लिम राष्ट्र वन सकता हे ओर न ईसाइ राष्ट्र भी। यह वात जितनी हिन्दुआ के लिए सच हे उतनी ही मुसलमानो के लिए सच हे तथा उतनी ही अन्य लोगो के लिए भी। भारत एक धर्म निरपेक्ष पथ निरपेक्ष राज्य हे। यही ढाचा इसके लिए श्रेयस्कर हे। आज जो हिन्दु के पक्ष ओर विपक्ष मे राजनीति खडी होती ह वह वहुत खतरनाक है।

समस्याए हर युग मे रही ह ओर रहेगी। वे एकदम खडी नहीं हो जातीं। उनका अपना एक सिलसिला होता हे। किसी अनजाने क्षण

मे वे जन्म लेती है आर धीरे-धीरे वडी होकर विकराल रूप धारण कर लती है। अच्छा युग वह नही होता जा समस्याए पेदा करता हे या उनसे आक्रान्त हो जाता है, अपितु वह होता है जो उनसे विचलित नही होकर उनके समाधान का माग खोजता हे।

रामजन्मभूमि और वावरी मस्जिद

हमारे वतमान युग म अनेक समस्याए ह। राम जन्म भूमि ओर वावरी मस्जिद की समस्या ने भी आज विकट रूप धारण कर लिया हे। यह समस्या आज पेदा नहीं हुइ हे। वावर की असहिष्णुता ने इसे जन्म दिया था। यह रामजन्म भूमि है या नही यह अलग वात हे पर इतना तो निश्चित हे कि हिन्दुओ की आस्था का घनीभूत केन्द्र हे। केवल यही नहीं ऐसे अनेक स्थान है जिनके इट-पत्थर विपरीत आस्थाआ के अग वने हुए है। हिन्दुओ के मन म यह रोश होना स्वाभाविक ह कि उनके पूजा-स्थान आज विपरीत आस्थाआ से जुडे हुए हे। पर सवसे पहली वात तो यह हे कि इस दु खद स्थिति के लिए वे स्वय भी कम दोपी नही हे। उनकी कमजोरी ने ही विदेशी सस्कृतिया को भारत मे वुलाया था। आज भी जो लोग विदेशी परिवेश से जुडे हुए हे वे सभी विदेशी नही है। उनमे से अधिकाश लोग भारतीय है, भारतीय मिट्टी की उपज हे। यह अच्छी वात हे कि हिन्दुत्व आज जागा है। पर इस जागृति को राजनीति के हाथो वन्धक नही रख देना हे। हिन्दुत्व को अपने पिछडे कहे जाने वाले भाइयो की ओर भी देखना होगा। आज भी यदि उसमे भातृत्व-चेतना का उदय नही हुआ तो मन्दिरो की पवित्रता को सुरक्षित रखना कठिन हो सकता हे। यह समझने म कठिनाई नही होनी चाहिए कि जिन हाथा को अपवित्र माना जा रहा ह उन्हाने ही मन्दिरा की पवित्रता को सुरक्षित रखा हे तथा भविष्य मे भी रखेगे। मानवीय भावना का तकाजा हे कि जाति-पाति के आधार पर घृणा को सपोपण नही दिया जाए।

असल म तो इस सारे प्रश्न पर मानवीय दृष्टि से चितन करने की आवश्यकता हे। मानवीय दृष्टि से हटकर यदि कोई मदिर-मस्जिद

बन भी गया तो उनकी बुनियाद से गध फूटे विना नहीं रहेगी जेसी आज फूट रही हे ओर वह गध समय-समय पर आदमी को उन्मत बनाये विना भी नही रहेगी। शक्ति सम्पन्नता का अर्थ दूसरो पर आक्रमण नही, कमजोर की रक्षा होनी चाहिए।

भारतीय पहले

भारत की भूमि पर वहने वाला रक्त हिन्दु-मुसलमान का वाद में हे पहले भारतीय हे। आज जो समस्या उलझ गई हे इसे न तो केवल हिन्दु हल कर सकता हे ओर न केवल मुसलमान। यह तो सामुदायिक समाधान का प्रश्न हे। हिन्दुओ को भी अपनी गलतिया का अहसास करना होगा तथा मुसलमानो को भी हिन्दुओं के जिस्म मे लगे हुए घावो को पहचानना होगा, उन पर मरहम लगाने के लिए आगे आना होगा। केवल इतिहास की दुहाई देने से काम नही चल सकेगा, उसे आज क परिपेक्ष्य मे पढना होगा। हिन्दु यह न समझे कि वे जो चाह कर सकते हे। मुसलमान भी यह न सोचे कि वे जो चाहे सो हो जायेगा। धर्म, सम्प्रदाय नही, मानवीय चरित्र हे। यदि मानवीय चरित्र विघटित हुआ तो धर्म को ठेस पहुचे विना केसे रह सकती हे? इसलिए प्रस्तुत मुद्दे पर मानवीय दृष्टि से विचार करना ही धर्म का विचार हे। सम्प्रदायो से वचा तो नही जा सकता, पर उनकी प्रेरणा यदि धर्म नही हुआ तो उनसे ज्योति केसे पेदा हो सकेगी?

धर्म ओर राजनीति

इस दृष्टि से राजनीति भी सम्प्रदायो की प्रेरक शक्ति नही होनी चाहिए। राजनीति गहरे अर्थ मे कूटनीति से जुडी हुई हाती हे। वह वडे कूट तरीके से कही भी प्रवेश कर जाती हे। धर्म ने अनेक वार राजनीति को राह दिखाई, पर वहुत वार उससे मात भी खाई ह। जव भी धर्म ने मात खाई हे तो उसका परिणाम भी सव लोगा को भोगना पडा ह। धम राजनीति से वहुत ऊचा ह। उसे अपने आसन की ऊचाई को समझना चाहिए। उसन यदि अपनी ऊचाइ को नही समझा तो राजनीति उस लील जायेगी। आवश्यकता ह अयोध्या का मसला दिल्ली का मसला

न बन कर अयोध्या का ही मसला बना रहे। अयोध्या ने एक जमाने मे पूरी दुनिया को मैत्री का पेगाम बाटा था। आज उस इतिहास को दोहराने की आवश्यकता हे। धम के नाम पर धरती को रक्त-स्नान करवाना कभी भी उचित नही कहा जा सकता। आवश्यकता यही हे कि अयोध्या को मन्दिर-मस्जिद से ऊपर उठकर मानवता की प्रेरणा का केन्द्र बनाया जाए। मानवता आदमी को बाटती नही जोडती हे।

भगवान राम

राम भारतीय आस्था के चूडामणि भूपण ह। यो भारत के विचार गगन मे समय-समय पर अनेक ज्योतिर्मय नक्षत्र उदित होते रहे हे, पर राम इस अतरिक्ष का ऐसा ध्रुवतारा हे जो सदा अविचल रहा हे। वेसे राम को सूय ही कहना चाहिए पर अपने आस्था-बल के कारण इन्होने भारतीय जीवन क उस नाभिक-स्थान को रोक लिया है, जिसे कोइ भी महापुरुष हिला नही सका। बल्कि व एक ऐसे पुरुप-प्रतीक बन गए है जिन्हे भारतीय आर अभारतीय की व्यवच्छेदक-रेखा के रूप म स्वीकार किया जा सकता हे।

ब्राह्मण-श्रमण

भारत मे ब्राह्मण ओर श्रमण ये दो विचार-धाराए बहुत प्राचीन काल से चलती आ रही ह। ब्राह्मणा के शिव-शाक्त आदि अनेक सम्प्रदाय हे तथा श्रमणा के भी जन-बोद्ध आदि अनेक सम्प्रदाय उपसम्प्रदाय हे। ब्राह्मण परम्परा ने शिव-कृष्ण आदि तथा श्रमण-परम्परा ने ऋपभ, बुद्ध, महावीर आदि अनेक पुरुप-पुगवो को प्रेरणा के रूप मे खडा किया हे, पर राम उन सबके साथ खडे हे। शिव सर्व शक्तिमान सन्यासी ता ह, पर सम्राट नही हे, कृष्ण सम्राट ओर लीलापुरुप तो हे, पर उनके पास सन्यास का वेप नही हे। ऋपभ सम्राट भी हें, सन्यासी भी ह, महावीर ओर बुद्ध भी सम्राट भी हे ओर सन्यासी भी हे, पर उन्ह कोइ अग्नि-स्नान नही करना पडा। महावीर ओर बुद्ध तो अपने हाथ म कभी शस्त्र भी नही उठाते। इसीलिए वे जीवन की समग्रता के प्रतिमान नही बन सके। राम ने केवल सीता को ही अग्नि स्नान नही कराया स्वय भी वनवासी

वनकर अग्नि-स्नात बन गए हे। इसीलिए वे जीवन को समाग्रता स भोगते हे। श्रमण लोग भल ही भगवान को अपनी धारणा के अनुसार राम के हाथो मे सृष्टि सचालन का सूत्र नहीं थमाते पर एक कुशल शास्ता तथा अतत वीतराग-केवली कहकर उनके पूणाग व्यक्तित्व को स्पष्टत स्वीकार करते हे। थोडी वहुत रग-रूप गत विविधताआ के वावजूद आत्मगत समानता की दृष्टि से राम सवके लिए अविवाद प्रणम्य-पुरुप ह।

सर्व सम्मत पुरुप

राम की यह विविधता एक शोध का विपय ह। कुछ लोगो का कहना हे कि राम कोइ एतिहासिक पुरुप नहीं हे। वह एक ऐसा कल्पना पुरुप ह जिसे प्रेरणा के रूप मे काव्य प्रतिष्ठ किया गया हे। कालगणना की उलझने भी उनके अस्तित्व को विवादास्पद वनाती हे। पर ये सार शास्त्रीय सवाल हे ओर इनके शास्त्रीय उत्तर भी ह। डॉ राम मनोहर लोहिया ने राम के वारे मे कहा हे—भारतीय आत्मा के लिए वेशक ओर कम से कम अव तक के भारतीय इतिहास की आत्मा के लिए ओर देश के सास्कृतिक इतिहास के लिए यह अपेक्षा निरर्थक वात हे कि भारतीय पुराणा के ये महापुरुप धरती पर पेदा हुए भी या नही? यद्यपि कुछ लोगो ने उन्हे अतिमानवीय रूप देकर उनके प्रति अपनी अगाध आस्था व्यक्त की हे, पर अधिकाश लोगो ने उन्हे आदर्श मानव के रूप म प्रस्तुत कर व्यवहार्य वनाने का प्रयास किया है। भारत की पूरी सस्कृति मे उसके पूजा पर्वो मे नामकरण के रूप से लकर अतिम यात्रा तक म राम नाम की अनुगूज हे। वह एक ऐसे लोक नायक ह जिनके हाथ मे चाहे जेसा वाद्य यत्र थमाया जा सकता हे, पर उसकी सगीत-माधुरी को नकारा नही जा सकता। वर्तमान म तुलसी का राम सवसे अधिक पहचाना जाता हे। तुलसी रामायण की रचना प्रोढता तथा प्रचार तन्त्र दोना ही इसके साधक तत्त्व ह। पर तुलसी रामयण स पहल भी अनक रामायण भारत म प्रचलित थी। वाल्मिकी रामायण ता सस्कृत का आदि ग्रन्थ माना ही जाता हे, पर अपभ्रश भाषा म भी अनेक रामायण विद्यमान थीं। तुलसी ने उन सव रामायणा को दख कर अपने राम का रूप सवारा निखारा

हे। उन्होंने इस बात का स्वीकार भी किया ह कि उनक सामने रामायण-रचना के कुछ प्रेरणा स्रोत रहे हे। इस दृष्टि से राहुल सास्कृत्यायन स्वय के पउमचरिय की ओर विशेष सकेत करत ह। उन्होन अपने कुछ तुलनात्मक साक्ष्य भी प्रस्तुत किए हे। हो सकता ह उनसे कुछ लोगो की विमति भी हो पर इतना ता तय हे कि राम एक ऐसे लोकनायक पुरुप हुए ह जिन्हे ससारी ओर साधक सभी आदर देते है। नि सदेह रामचरित म कुछ ऐसे प्रेरक कथा-मोड ह जो जीवन के पोर-पोर मे शील-सस्कार की सुरभि भर देते हे। रघुवश मे कालिदास ने उनके पूरे जीवन को एक श्लोक म वडे श्लाघनीय ढग से बाधा हे—

शेशवेऽभ्यस्त विद्याना, यावने विपयेपिणाम्
वार्धक्ये मुनिवृत्तीना, यागेनान्ते तनुत्यजाम्

राम का बचपन महलो की सुख-सुविधाओ म व्यतीत होता ह, पर व उनम लिप्त नही होते उनका विद्याभ्यास प्रकृति की गोद मे प्रकृत आदमी की तरह होता ह। उनका यावन स्वयवर मण्डल मे अपना शोय दिखाता हे पर भरी जवानी म वे पिता की आज्ञा से हसते हसते वनवासी भी बन जाते ह। राजनीति के आरोहो-अवरोहा म भी व अपने आदश को सुरक्षित रखते ह। वहा रणक्षेत्र म भी वे अपने आदश स विमुख नही होते। हो सकता हे कुछ लोगो को उनका 'योगेनान्ते तनुत्यजाम्' योगी-मरण ही सर्वश्रेष्ठ लगता हे, पर सामान्य आदमी के लिए उनकी हर लीला मे एक शिक्षा सकेत प्राप्त होता हे तुलसीदासजी ने ठीक ही कहा हे—

'राम नाम मुनि दीप धरू, जीह देहरी द्वार।
तुलसी भीतरू बहेरुउ, जो चाहिसि उजियार।'

राम कथा का पूरा विस्तार ही इस तरह से होता हे कि इसके सारे पात्र आदर्शोन्मुखी बन जाते ह। वेसे कभी-कभी यह कथायात्रा कुछ ऐस अध गलियारा से होकर भी गुजरती ह, जहा आदश के सूय-चन्द्र को राहू ग्रस लेता है। पर रामकथा का अत प्रकाश की परिक्रमा-पथ

शिक्षा मे मूल्यो का समावेश–जीवन-विज्ञान

ज्ञान मनुष्य की पहचान है। वही मनुष्य ओर पशु मे भेद करता हे। जिसमे ज्ञान हे वह मनुष्य हे, अन्यथा वह 'पशुभि समाना ' की उक्ति के अनुसार वह पशुत्व से ऊपर नही उठ पाता। आदमी वडी से वडी समस्या को सुलझा सकता हे। पशु के पेरो मे रस्सी आ जाए तो वह उस भी नहीं निकाल सकता। इसलिए कहा गया हे–'नाण पयासयर'–ज्ञान प्रकाश कर हे। अधेरे मे वहुत कुछ हो सकता हे, पर प्रकाश नही हे तो सव कुछ होना निष्फल हे, अनहोने के समान हे। मनुष्य ने वहुत कुछ ज्ञान प्राप्त किया हे, पर ज्ञेय की कमी नही हे। एक-एक अणु ओर एक-एक आकाश-प्रदेश मे इतने रहस्य छिपे पडे हे कि उन्ह समझना ही मुश्किल हे। विज्ञान ने वहुत तरक्की की हे, पर जेसा कि विद्ववर आइस्टीन ने कहा था–'समुद्र मे अथाह रत्न भरे पडे है। हम तो उसके किनारे पर वेठकर ककर, शख, सीपिया ही इकट्ठे कर रहे हे।' सचमुच यह वहुत महत्त्वपूर्ण वात हे। हम समस्त की वात न भी करे अपन शरीर म जो रहस्य भरे पडे ह उनको भी जान ल ता वहुत कुछ पाया जा सकता हे। इस दृष्टि से केवल ज्ञान ही पर्याप्त नही हे उस दखने वाली आख की भी अपेक्षा हे। आख नही हे तो हजारो सूरज वेकार ह। इसलिए ज्ञान के साथ उसे देखने वाली दृष्टि भी सम्यक् हानी चाहिए।

ज्ञान भी अज्ञान

ज्ञान केवल अक्षर-ज्ञान ही नही ह। साक्षरता से लेकर पी एच डी ओर डी लिट् तक की वल्कि आगे की भी अनेक उपाधिया हो सकती हे। उनकी अपनी सार्थकता हे, पर यदि आदमी की दृष्टि ठीक नही हे समझ ठीक नही हे तो वह ज्ञान भी अज्ञान बन जाता हे। महावीर

ने इस सत्य को बहुत सूक्ष्मता–सजगता से देखा था। उन्हाने ज्ञान को सम्यग् ओर मिथ्या मे बाट कर सम्यग्-ज्ञान की आवश्यकता को रेखांकित किया था। सम्यग् ज्ञान ही मूल्या की शिक्षा हे।

सम्यग् ज्ञान की उन्होने पाच कसोटिया बताइ थी। जब तक आदमी मे आवेग, आवेश, पदार्थाभिमुखता, क्रूरता तथा आत्म-विश्वास की कमी होगी तब तक उसका ज्ञान सम्यग् नही बन सकेगा। आदमी वड स वडा ज्ञानी तो बन गया पर उपरोक्त पाच बाते नही हे तो अज्ञान हे। वह अपने ज्ञान से बहुत बडा अनर्थ भी घटित कर सकता हे।

आज अक्षर-शिक्षा पर पूरा जोर दिया जा रहा हे। उसके परिणाम भी सामने है। मनुष्य ने अनेक दिशाओ मे प्रगति की हे। पर जब तक उसमे उपरोक्त पाच मूल्यो का समावेश नही हुआ तो उसके दुरूपयोग की सभावनाओ से मुक्त नहीं हुआ जा सकता। प्राचीन साहित्य मे विद्या पर बहुत बल दिया गया हे। यह कहा गया हे–'जावत विज्जा पुरुसा, सव्वे ते दुक्ख सभवा।' जितने भी अविद्यावान् पुरुप हे वे दुख ही पेदा करते ह। विद्यावान् दुख पेदा नही कर सकता। वह स्वय सुखी रहता है तथा दूसरो को भी सुखी बना सकता हे। अविद्यावान् पुरुप न केवल दुखी होता हे अपितु दूसरो के लिए भी अनेक दुख पेदा कर सकता हे। अविद्यावान् पुरुपा के हाथ मे अणुशक्ति आ जाए तो उसके विनाश की कल्पना ही नहीं की जा सकती। बदर के हाथ मे यदि तलवार आ जाए तो न जाने वह कितने आदमियो का गला काट डाले। बल्कि अपने अज्ञान के कारण वह अपने स्वामी के लिए भी खतरा पेदा कर सकता हे। इसीलिए विद्या का अर्थ हे सम्यग् ज्ञान।

शिक्षा ओर विद्या

हमारे यहा शिक्षा को स्वतन्त्र मूल्य नही दिया जाता। व्याकरण की दृष्टि से विचार करे तो शिक्षा का अर्थ हे विद्या का उपादान। शिक्षा धातु का अर्थ हे विद्या का उपादान कारण। यद्यपि उपादान कारण ही अत म कार्य रूप मे परिणत हो जाता हे, पर काय-कारण के विवेचन म उसके भेद को अस्वीकार नही किया जा सकता। पातजल योगदर्शन

मे अविद्या पर विचार करते हुए कहा गया है—अनित्या-शुचि-दु खा-नात्मसु नित्यशुचि सुखात्मख्याति रविद्या। जब आदमी का ज्ञान असम्यग् होता है तब वह अनित्य, अशुचि, दु ख और अनात्म म नित्य, शुचि, सुख और आत्मा की कल्पना कर लेता है। निश्चय ही अक्षर-शिक्षा से हमे नित्य, शुचि, सुख और आत्मा का ज्ञान हो सकता है, पर ज्ञान तो एक अशिक्षित आदमी म भी पैदा हा सकता है। ऐसे बहुत सार लोग हुए ह जिन्हान विद्यालय का कभी दरवाजा भी नहीं देखा, पर उनकी वाणी पर आज अनेक शोध-प्रवन्ध लिख जा रहे है। यह कहकर मे अक्षर-नान का अनादर नही कर रहा हू, पर यह कहना चाहता हू कि यदि अक्षर ज्ञान सम्यक्त्व से जुड जाए तो वहा अंतिम सच्चाईयो को वहुत अच्छी तरह से प्राप्त कर सकता है।

शिक्षापूण बने

डॉक्टर बनना, वकील बनना, इन्जीनियर बनना, प्रबन्धक बहुत अच्छा है। पर यदि वह आवेग, आवेश, क्रूरता, पदार्थासक्ति ओर अनात्मयुक्त है ता उसक दुष्परिणामा से भी बचा नहीं जा सकता। आज मनुष्य के पास जितना अक्षर ज्ञान है वह यदि सम्यग् ज्ञान से जुड जाए तो पृथ्वी को स्वर्ग बनाया जा सकता है। पर चूंकि ऐसा नहीं है, शिक्षार्थी तनावग्रस्त है। अत अनेक कुलपतियो को पुलिस के सरक्षण मे रहना पडता ह। अनक सरकारी मकाना को ताड फोड से बचाने की आवश्यकता पड रही है। अनेक बीमारो को डॉक्टरो की आखो के सामने दम तोडना पड रहा है, अनेक बडे-बडे लागो के घोटाले सामने आ रहे ह तथा अनेक धम के लोगो को आपस मे खून की होली खलनी पडती है। आज जो शिक्षा है उसे निरथक नहीं कहा जा रहा है अपितु उसका अपूर्णताओ को भरने की आवश्यकता बताई जा रही है। इसीलिए अणुव्रत के आस-पास जीवन-विज्ञान का एक प्रारूप खड़ा किया गया है।

पुराने जमाने म शिक्षा प्राप्त करने का सौभाग्य बहुत कम लोगा को मिल पाता था। आचार्य के पास बहुत थोडे विद्यार्थी होते थे। वे निरतर उनकी देख रेख मे रहते थे। आज शिक्षा सर्व-सुलभ है। सुलभ

नहीं है तो उसे सुलभ बनाने का प्रयास किया जा रहा है। पर इसके साथ विद्यार्थी को सम्यग्ज्ञानी बनना भी आवश्यक है।

जीवन विज्ञान का एक पूरा का पूरा पाठ्यक्रम है। उसके अनुसार कायोत्सग अन्तर्यात्रा, श्वास, प्रेक्षा, चैतन्य केन्द्र प्रेक्षा, लश्या ध्यान तथा अनुप्रेक्षा स म्नुष्य की वृत्तियो मे परिष्कार किया जा सकता है। यह केवल कहन की बात नही है इस पर बहुत प्रयोग हुए है तथा अनक विधेयक बिन्दु सामन आये है। उससे मनुष्य के समृचे व्यक्तित्व का रूपातरण सभव माना जाता है।

मूढ़ और मूर्ख

आज आदमी स्वार्थ-केन्द्रित या स्व कन्द्रित हो रहा है। जीवन-विज्ञान उसे चेतन्य केन्द्रित बनाने की *शिक्षा-विधा है। मूख आर मूढ दो बात* हे। मूर्ख आदमी वह हे जिसे अक्षर-ज्ञान नही है, पर जो माह ग्रस्त, तनाव ग्रस्त हे वह अक्षर-ज्ञान प्राप्त कर लेने के बावजूद भी मूढ है। माह-ग्रस्त अक्षर-ज्ञान सचमुच बहुत खतरनाक है।

आदमी को अपनी चैतन्य शक्ति का पूरा भान नही है। वह समझता हे ज्ञान को ऊपर से आरोपित किया जा सकता है। पर ज्ञान तो वह आतरिक बीज है जिसमे से पूरा वृक्ष फूट सकता हे। ज्ञान हमारे चतन्य का अग हे। शिक्षा उसे फूटने म सहयोग कर सकती है, वृक्ष बनाने *म सहयोग कर सकती हे। जीवन विज्ञान इसीलिए शिक्षा के आन्तरिक* स्रोता को उघाडने का प्रयास हे। मनोविज्ञान तथा परामनोविज्ञान ने इस दिशा म अनेक साथक अन्वेपणाए की ह। जीवन-विज्ञान उस अक्षय खजाने से परिचित कराने की एक सुनियोजित शिक्षा-योजना हे। यदि *आदमी इस दिशा की ओर प्रस्थित हो जाए तो न केवल उसकी दक्षता मे ही अभिवृद्धि होती ह अपितु उसकी पात्रता मे भी अभिवृद्धि होती हे।*

परिवर्तन का सूत्र

शात जीवन की सभी चाह करते हे। पर शान्ति का किसी बाजार से खरीदा नही जा सकता। उसे तो अपने अन्दर से ही प्राप्त किया

जा सकता है। आज आत्म विश्वास की सभी चाह करते है, पर जब आत्मा पर ही विश्वास नही है तो उस ओर यात्रा कैसे की जा सकती है? जब तक मनुष्य का अपने पर विश्वास नहीं है तो दूसरा पर विश्वास का कोई प्रश्न ही खडा नही हो सकता। जीवन-विज्ञान कायोत्सर्ग के द्वारा न केवल शरीर और चेतना की भिन्नता का दर्शन कराता है अपितु अपने में छिपे हुए अक्षय खजाने से परिचित कराना चाहता है। शरीर विज्ञान के अनुसार शरीर मे ६०० अरब कोशिकाएं है। इन कोशिकाओ मे अनत सामर्थ्य छिपा पडा है। पर हम अपनी कोशिकाओ के एक प्रतिशत भाग का भी उपयोग नही कर पा रहे है। जीवन विज्ञान श्वासप्रेक्षा की प्रक्रिया से अधिक से अधिक कोशिकाओ का उपयोग करने की कला सिखाता है।

आदमी के शरीर मे चेतन्य केन्द्र है, ग्रन्थिया है। उनके स्रावो से अनेक लाभ ओर हानिया हो सकती है। उन्ही से मनुष्य की भावधारा का निर्माण होता है। जीवन-विज्ञान चेतन्य केन्द्र प्रेक्षा के माध्यम से उसमे सतुलन बना सकता है। वह उससे असत् का निरोध ओर सत् का प्रादुर्भाव कर सकता है।

लेश्या ध्यान तो आज रग-चिकित्सा के रूप मे काफी प्रचलित हो रहा है। रगो के ध्यान के द्वारा मनुष्य न केवल अपनी शारीरिक बीमारियो की ही चिकित्सा कर सकता है, अपितु अपने व्यक्तित्व का रूपातरण कर सकता है। इसी प्रकार अनुप्रेक्षा के द्वारा स्वभाव व आदतो मे परिवतन किया जा सकता है।

जीवन मे मूल्यो की स्थापना के लिए हर व्यक्ति के लिए जीवन-विज्ञान प्रेक्षा ध्यान उपयोगी बन सकते है, पर यदि इसे शिक्षा के साथ जोडा जा सके तो बालक के सतुलित विकास की सभावनाओ को बल मिल सकता है। जीवन-विज्ञान का एक सेद्धान्तिक पक्ष भी है, पर वह केवल प्रयोग-पक्ष को प्रबल बनाने के लिए है। प्रयोग के लिए दीर्घकाल नेरन्तर्य ओर श्रद्धा सेवन की आवश्यकता तो अवश्य है, पर इसके परिणामो मे कोई संदेह नही है।

शिक्षा मे नवाचार

जीवन मे ज्ञान की आवश्यकता को नकारा नहीं जा सकता। बहुत सारी समस्याए अज्ञान स ही पैदा होती ह। इसीलिए कहा गया है–'नाण पयासयर।' ज्ञान पकाश करता हे। सचमुच यह एक बहुत मूल्यवती अनुभव-वाणी हे। दुनिया मे यदि महान् कष्ट हे ता वह अज्ञान ही है। ज्ञान के बिना आदमी अधे के समान है। जेसे सब कुछ दृश्य होते हुए भी अधे के लिए कुछ भी नहीं ह। उसी प्रकार ज्ञान के बिना सब कुछ होते हुए भी नही होने के समान है। वेज्ञानिक अनुसधाना से हम बहुत कुछ ज्ञात हुआ हे, पर हमारे सामने अज्ञान की भी कोइ कमी नहीं ह। हमारे अपन शरीर मे भी न जाने कितना रहस्य छिपा पडा है? अपने अज्ञान के कारण हम उन सबका उपभोग नही कर सकते। अज्ञान के कारण ही आदमी अनत कठिनाइयो को भोग रहा हे। ज्ञान ही बदल सकता हे। इसीलिए साक्षरता से लेकर पी एच डी तथा उससे आगे भी अनेक प्रकार की उपाधिया बाटी जा रही ह। आदमी क पास ज्ञान का काफी बोझ हो गया हे।

ज्ञान आचरण बने

पर एक स्वर यह भी उभरता रहा हे–यथा खरा चदन भारवाही भारस्य वाही न तु चदनस्य।' गधा जसे अपने पर चदन के भार को ढोता है उसी प्रकार ज्ञान को आचरण मे नही लाने वाला व्यक्ति भी केवल उसके भार को ढोता हे, उससे लाभान्वित नही हो सकता। केवल ज्ञान ही पर्याप्त नही हे उसके साथ आचरण भी जरूरी है। समस्त के प्रति सवेदना जगाने वाला ज्ञान ही सच्चा ज्ञान हे। जो ज्ञान स्वार्थ केन्द्रित,

अन्य निरपेक्ष हे वह अज्ञान हे। यह एक वहुत महत्त्वपूर्ण वात हे कि ज्ञानी होते हुए भी आदमी अज्ञानी कहलाता हे। ज्ञान खराव नही हे, वह मनुष्य की अनुपम उपलब्धि हे, पर यदि वह सम्यग् नही ह तो उसके खतरे भी कम नहीं ह। एसे अज्ञानियो ने अर्थात् निरपेक्ष ज्ञानियो ने, सवेदन शून्य ज्ञानिया न दुनिया को अनेक वार तवाह किया है।

आज भी इस सत्य की उपेक्षा हो रही हे। आज ज्ञान का पक्ष तो उभर रहा हे पर आचार-पक्ष निर्वल हो रहा हे। उच्च, उच्चतर तथा उच्चतम शिक्षा का प्रसार तो हो रहा हे पर उसके साथ समस्त के सवेदना का भाव कम हो रहा हे। अनक लाग डॉक्टर, इजीनियर तथा मेनेजमेट शिक्षा से तो जुड रहे ह पर दूसरा की सवेदना से कट रहे हे। यही कारण हे कि वड से वडे डॉक्टर को केवल पेसे से सरोकार है। यदि पेसा नही मिलता ह तो वीमार मर भी जाए तो भी उसको दु ख नहीं होता। कवल डॉक्टर का ही सवाल नही हे। हर व्यवसाय, टेक्नोलोजी या विधिशास्त्र का अध्ययन करन वाला आदमी पेसे का ही अधिक महत्त्व देता हे। यद्यपि सभी लोग ऐसे ही हो यह जरूरी नही हे, पर अधिकाश लोग इसी दृष्टि वाले हो गए हे इसीलिए शिक्षा के लिए यह एक विचारणीय विपय वा गया हे।

यह एक वहुत महत्त्वपूण वात हे कि आदमी ज्ञानी होते हुए भी अज्ञानी कहलाये। ज्ञानकुत्सित नहीं हे, वह मनुष्य की अनुपम उपलब्धि हे, पर यदि वह सम्यग् नही हे ता उसके खतरे भी कम नही हे। ऐसे ज्ञानिया या अज्ञानियो अर्थात् मिथ्याज्ञानियो ने ही दुनिया को अनेक वार तवाह किया हे। परमाणु वम की खोज वहुत महत्त्वपूर्ण थी, आज भी हे, पर जव वह खोज अज्ञानिया के हाथो मे पहुच जाती हे तो उसक खतरों का अनुमा। भी रोमाच खडे कर देने वाला होता हे। अक्षर शिक्षा विद्या का जगा सके तभी उसकी सार्थकता हे। तभी वह सवेदनशील तथा सर्वक्षेमकरी वन सकती हे।

सम्यग् दृष्टि या विद्यावान् पुरुप वनने की कुछ पहचान हे। पहली पहचान ता ह अपन आवेगो तथा आवेशो पर अकुश लगाना। सचमुच यह वहुत वडी शर्त ह। आवेग ओर आवेश न जाने कहा-कहा से आदमी

का पीछा कर रहे हे। थोडा-सा मन के विपरीत हो जाते ही आदमी न जाने क्या-क्या नही कर लेता हे। वहुत वार तो वह आदमी नही राक्षस वन जाता हे। भगवान महावीर ने ठीक ही कहा हे—

अह पचहि ठाणोहि, जेहि सिक्खा न लब्भइ
थभा, कोहा, पमाएण, रोगेणालस्स एणए। उत्तरा ११-३

अहकार, क्रोध, प्रमाद, रोग ओर आलस्य ये पाच ऐसे कारण ह जिनसे आदमी शिक्षा प्राप्त नही कर सकता।

ठीक इसके विपरीत आठ ऐसे कारण भी उन्होने वताये ह जिनसे व्यक्ति शिक्षाशील वनता हे—

अह अट्ठहि ठाणेहि सिक्खासीलेत्ति वुच्चइ
अहस्सिरे सया दते न य मम्म मुदाहरे। उत्तरा ११-४

नासीले न विसील न सिया अहलोलुए
अकोहणो सच्चरए सिक्खासीलत्ति वुच्चइ। उत्तरा११-५

अथात् जो हास्य नही करता, जो सदा इन्द्रिय ओर मन का दमन करता हे जो मर्म का प्रकाशन नहीं करता, जो सच्चरित्र हाता ह, जिसका चरित्र दोपो से कलुपित नही होता, जो रसो मे लोलुप नही हाता, जो क्रोध नहीं करता तथा जा सत्य मे रत रहता हे उसे शिक्षाशील या विद्यार्थी कहा जाता हे।

उन्होने कहा ह—

ज यावि होइ निव्विज्जे, थद्ध लुद्धे अणिग्गह
अभिक्खण उल्लवइ अविणीए अवहुससुए। उत्तरा ११-२

वह वहुश्रुत होकर भी अविद्यावान् ... ानी, ... न्द्रिय
तथा असम्वद्ध वक्ता हे। एस लोगा क ... ा ...
सून म कहा ह—जा आचाय ओर
शिक्षा जल सिकना वृक्षा की तरह
असल म मूख ... मूढ य दा

तक है कि वह अज्ञानी है। पर मूढ तो वह व्यक्ति है जो मोहग्रस्त ह, दिग्भ्रात है आवग तथा आवेश से सग्रस्त ह। वह मूर्ख से भी ज्यादा खतरनाक है।

असम्यग् दृष्टि पुरुप की दूसरी पहचान यह है कि वह पदाथ मे आसक्त रहता है। ऐस व्यक्ति इच्छाओ के दास होते हे। आज की पूरी व्यवस्था मनुष्य को उसकी आवश्यकताए बढाने की वात कहती हे। इसी से उपभास्तावाद का जन्म होता है। शिक्षा भी सयम की वात नही करती। इसस यह परम्परा आगे स आगे वढती जा रही है। यह सही हे कि मनुष्य की कुछ अनिवार्य आवश्यकताए होती है, पर जव आवश्यकताए अनियंत्रित हा जाती ह तो व न केवल दूसरा के अधिकारो को छीनने लग जाती हे अपितु अतत व्यक्ति के स्वय के लिए भी दुखदायी वन जाती ह।

असम्यग् दृष्टि पुरुप की तीसरी पहचान हे उसम करुणा-अनुकम्पा नहीं होती। वह इतना असवेदनशील हो जाता हे कि न केवल दूसरा के कष्टा को देखकर द्रवित नही होता अपितु वह दूसरो को दुख देने मे भी सकोच नहीं करता। आज मनुष्य-मनुष्य के बीच जा आथिक वेपम्य वढ रहा हे उसका मुख्य कारण करुणा का अभाव ही हे। यह सही है कि अभावग्रस्त लाग दरिद्रता के लिए स्वय ही उत्तरदायी हे। पर यदि पढे लिखे लोगा मे करुणा का भाव जाग जाए तो न जान वाले दुनिया को कितनी सुखमय वना सकते ह।

असम्यग् दृष्टि पुरुप की पाचवी पहचान है--आत्मविश्वास की कमी। भला जा आत्मा को ही नही समझता उसका विश्वास क्या होगा। आवश्यकता यही हे कि शिक्षा शिक्षार्थी को अपनी आत्मा की पहचान करवाये। यही सम्यग् ज्ञान हे।

उपरोक्त सारी चर्चा का साराश यही हे कि शिक्षा आदमी को आत्मवान् वनाये। स्वार्थ केन्द्रित नहीं अपितु आत्म केन्द्रित वनाये। स्वार्थ केन्द्रता के परिणाम सवके सामने है। इसी दृष्टि से अणुव्रत के आसपास जीवन विज्ञान के रूप मे शिक्षा मे आत्मविज्ञान की वात उभरी हे। अणुव्रत सकल्प की व्रत की वात तो शुरू से ही करता था, पर सकल्प को

शिक्षा के माध्यम से उन्ह जगाया जा सकता हे। जव चतना जाग जाती हे तव आचरण तो अपने आप आ जाता हे। शिक्षा मूल्य की चतना को जगाये यह आवश्यक हे।

मूल्यो का आरोपण भी नही होना चाहिए। आवश्यकता इतनी ही हे कि वे छात्र को सहारा दे। हमारे यहा पर परिणाम के आधार पर ही अच्छे ओर वुरे का निणय किया जाता हे। इसे ही हम आपात-भद्रता कह सकते हे। कुचेले का फल खाने म वडा मीठा होता हे, पर उसका परिणाम मृत्यु होता हे। इसीलिए जीवन-विज्ञान मे परिणाम-चेतना पर वल दिया गया हे। हमारे यहा शिक्षा के वायोलोजिकल पहलू पर वहुत कम चितन हुआ हे। इसीलिए मस्तिष्क पर वहुत कम चचा हो पाई हे। यदि हम शिक्षा के इस पहलू पर चितन करगे तो मूल्यो की आकृति अपने आप स्पष्ट हो जायेगी।

शिक्षा के अपने पाक्षिक मूल्य हे। वे सामाजिक नहीं वेयक्तिक ह। फिर भी वे समाज म प्रतिविम्वित होते हे। व्यक्ति ओर समाज को अलग नही किया जा सकता। पर समाज वदले तव तक व्यक्ति के वदलने का इतजार भी नही किया जा सकता। यदि ऐसा हुआ तो वात अनत काल तक हल नही होगी। दीर्घकालीन नीति के रूप मे हमे छात्रो म नेतिक चेतना के वीज वोने पडेगे। वे जव वडे हागे तो समाज अपने आप वदल जायेगा। अल्पकालीन नीति के रूप म हम छात्र, शिक्षक एव अभिभावक इन तीनो म एक सवादिता वनानी पडेगी। यदि तीनो पक्षो पर जोर दिया गया तो सभव हे व्यक्ति के माध्यम से समाज म मूल्यो का अकुरण हो जायेगा।

मूल्य ओर धर्म यह केवल शब्द भिन्नता हे। हम चाहे धर्म शब्द का उपयोग न भी करे, पर हमे व्यक्ति की चेतना को तो जगाना ही पडेगा। चेतना ओर धम दो नही हो सकत।

शिक्षा के सदर्भ मे सवसे कठिन सवाल हे—क्रियान्विति का। पर हम इस भूत से डरे नही, अपितु सीधे खडे हा जाए। हमे उसके साथ लडना भी नही हे। यदि हमन लडन का प्रयास किया ता भूत की शक्ति वढेगी। क्रियान्विति के लिए हमे कुछ सिद्धान्त तय करने होगे। यह

निश्चित करना होगा कि छात्र अपने सवेगो को कैसे कट्रोल करे। इसके लिए हमे सिद्धान्त ओर प्रयोग दोनो का आश्रय लेना होगा। इसे ही पतजली वृत्तिया का विरोध कहते ह। यदि हमे नशे का विरोध करना है तो केवल उपदेश से काम नहीं चलेगा। हमे छात्र को कान पर, सवेदन केन्द्र पर ध्यान कराना होगा। इस निश्चित प्रक्रिया से उसका नशा अपने आप छूट जायेगा। क्रोध से मुक्त होन के लिए ज्योति-केन्द्र—ललाट के वीच मे ध्यान कराना होगा। वच्चे का परिवर्तित व्यवहार उसका अपने आप मानक वन जायेगा। आवश्यकता हे चेतना-जागरण के इस प्रयोग पर राष्ट्र के स्तर पर कार्य-योजना वने तथा उसकी क्रियान्विति के लिए अर्थपूर्ण पहल की जाए।

व्यक्ति ओर राज्य व्यवस्था

प्रश्न व्यक्ति एक इकाई हे। उपनिपदो मे कहा गया है--'स एकाकी न रेमे' इसीलिए उसके मन मे सकल्प पेदा हुआ कि एकोह वहु स्याम। मे अकेला हू वहु वनू। यही समाज की स्वाकृति हे। पर जहा समाज हाता हे वहा शासन भी आवश्यक हा जाता हे। अणुव्रत की दृष्टि मे कोन-सा शासन सर्वोत्तम हे।

उत्तर अणुव्रत की दृष्टि से आत्मानुशासन ही सर्वोत्कृष्ट हे। जब व्यक्ति मे अपना शासन जागता हे तभी वह अनेतिक कार्यो से बच सकता हे। एक जमाना था जव पूरी दुनिया मे, साम्राज्यवाद का वोलबाला था। एक प्रकार से डडे का शासन था। यद्यपि कुछ राजा भी ऐसे हुए हे जिन्होने 'राजा प्रकृति रजनात् की उक्ति के अनुसार प्रजा का मन जीता हे। राम राज्य इसका स्पष्ट उदाहरण हे। राम को हुए हजारो वर्प हो गए, पर भारतीय मानस मे राम आज भी उतने ही समादृत ह। यद्यपि राम भी एक राजा थे। पर उन्होने अपने-आप पर अनुशासन स्थापित किया। इसलिए वे एक आदर्श राजा वन गए। जब भी राजा उच्छृखल होता हे असयमी होता हे तो उसके प्रति बगावत भी होती हे। यद्यपि राजा बगावत को रोकने का भरसक प्रयत्न करता हे। इतिहास इस बात का साक्षी हे कि साम्राज्यवाद युगो-युगो तक मनुष्य के कधे पर खडा रहा। राजाओ के निरकुश व्यवहार से अनेक बार जनता आतकित हुई, पर उससे उवरने का काई उपाय नही था। राजाआ क अन्यायो की कहानी सुनते-सुनते रागट खडे हो

जात हे। एक राजा की सुविधा के लिए न जाने कितन लोगा को अपने प्राणों की आहुति देनी पडती थी। राजा अपनी सत्ता सिहासन के लिए लाखा लोगो को युद्ध मे धकेल देते थे। बिना ही मतलब हजारों-लाखो लोग पलक मे मोत क घाट उतार दिए जात। राजाओं के विलास की भी अपनी एक अलग कहानी ह। जनता को उसे सहन करना पडता था। उस समय एक तो प्रजा अशिक्षित थी, दूसरे उसमे विद्रोह का सामर्थ्य भी नहीं होता था। यदि कोई विद्राह करता तो उसे इस तरह कुचल दिया जाता था कि दूसरा आदमी उसका अनुगमन करने का साहस नही कर सकता था। पर धीरे-धीरे जनता मे जागृति आइ आर अब प्राय दुनिया भर मे जनतत्र प्रतिष्ठित हो चुका हे। पर जनतत्र की त्रासदी भी कम नही रही है। हिटलर और स्टालिन जेसे तानाशाह लोग जनतत्र का ही उत्पादन ह। उन्होने जितना क्रूर शासन किया हे वह भी निरकुश राजाओ से कोई कम नही था। एक व्यक्ति को नहीं जातियों की जातियो को ही समूल उन्मूलित कर देने म उन्होने कोई कसर नही छोडी।

जनतत्र की यह सुविधा है कि उसमे यदि शासक निरकुश भी होता तो उसके बदलने के अवसर रहते है। हिटलर ओर स्टालिन जसे लाग भी बदल गए। साम्राज्यवाद मे राजा का बेटा राजा होता है। राजा का बेटा चाहे योग्य हो चाहे अयोग्य वही उत्तराधिकारी बनता हे। जनतत्र मे सुविधा हे कि शासक यदि सही नही होता ह तो उसके बदलने के भी अवसर मिलते रहते ह। जनतत्र की सूत्रधारणा के कारण ही अनेक लोगो को सिहासन से नीचे उतरना पडा।

शासन अनुशासन

अत वास्तव मे बात शासन की नहीं हे बात अनुशासन की ह। अनुशासन जाग जाए तो अपने आप शासन ठीक हो जाता है। अणुव्रत

का तो प्रसिद्ध घोष है 'निज पर शासन फिर अनुशासन।' जो आदमी अपने पर शासन स्थापित करता है उसे ही दूसरो पर अनुशासन स्थापित करने का अधिकार है। तभी तन व्यवस्था मजबूत होती है।

प्रश्न क्या चुनावो की भी शासन व्यवस्था मे कोई भूमिका ह? यदि हा तो इसका अणुव्रत क्या समाधान दता है।

उत्तर निश्चय ही चुनाव जनतत्र का मेरुदड है। यदि चुनाव ही अस्वस्थ हो तो जनतत्र के स्वच्छ होने का कोई सवाल ही नही है। वल्कि चुनाव ही जनतत्र का मूलाधार है। चुनाव मे यदि वाहुवल, धनवल, जातिवल, भाई-भतीजावाद सामने आता है तो वह कभी भी स्वच्छ नहीं वन सकता। इस दृष्टि से अणुव्रत का यह आग्रह है कि चुनाव की अपनी एक प्रशिक्षण-विधि होनी चाहिए। न केवल जनता के लिए ही अपितु प्रत्याशियो को भी प्रशिक्षण के विना आगे नहीं आना चाहिए।

यह कितने आश्चर्य कि बात है कि देश मे हर पद पर प्रतिष्ठित होने के लिए प्रशिक्षण का एक मानदड होता है। पर विधायका, सासदा के लिए प्रशिक्षण की कोई कसोटी नही होती। अव जब उन्हे कोई प्रशिक्षण ही नही होता तो वे जनतत्र के प्रति अपने दायित्व का निर्वाह केसे कर पायेगे? यह सही है कि जनता उन्हे चुनती है। पर सवसे पहले तो जनता भी प्रशिक्षित नही है। अत चुनाव-पद्धति को यदि योग्य व्यक्तिया से जोडना है तो यह आवश्यक है कि जनता को भी चुनाव का प्रशिक्षण दिया जाए। हो सकता है इतने बडे देश मे इतने लोगो को प्रशिक्षण देना कठिन हो, पर यदि यह एक कठिन काम कर लिया जा सके तो अन्य अनेक कार्य सुगम हो सकते है। इसलिए चुनाव के लिए प्रशिक्षण की बहुत बडी आवश्यकता है।

अणुव्रत के अन्तर्गत चुनाव की एक स्वतत्र आचार-संहिता वनी हुई है। पहले चुनाव से लेकर आज तक उसका प्रचार-प्रसार हुआ है पर आवश्यकता तो यह है कि इसे एक राष्ट्रीय कार्यक्रम बनाया जाए।

प्रश्न प्रत्याशी की संहिता के वारे मे अणुव्रत का क्या विचार है?

उत्तर अणुव्रत की संहिता की बडी कसोटी सयम ही हे। यदि व्यक्ति मे अपने पर सयम हे तो वह हर समस्या का समाधान खोज लेना हे। यो सयम की अतिम सीमा महाव्रत हे। महाव्रती की भी अनेक विकास-कोटिया हे। पर प्रत्याशी के लिए चार वात तो आवश्यक होनी चाहिए।

१ विधायक के लिए निधारित प्रशिक्षण विधि से पशिक्षित
२ अपराध-मुक्त
३ नशामुक्त
४ जातीय एव साम्प्रदायिक उन्माद से मुक्त

यह सही हे कि बुराइया हर युग म अपना रूख बदलती रहती ह, अत प्रत्याशी की अर्हता का भी नया रग-रूप मिलता रहना हे। फिर भी कुछ वात एसी हे जो ध्रुव ह। सयम शब्द अपने आप म एक प्रतीक शब्द ह। प्रतीक का अपना एक स्थायित्व होता हे। सयम अणुव्रत का स्थायी प्रनीक हे। उमके व्याख्या-सूत्र वर्तमान से जुडे हुए हो सकते हें। उपरोक्त जो चार सून सुझाए गए हे वे आज की परिस्थिति म अनिवाय हे। यदि इतना ही नही होता हे जनतत्र जन आकाक्षाओ का परिपूरक नही बन मकेगा।

जनतत्र का सही अर्थ शासन नहीं हे अपितु शासन का विकेन्द्रीकरण हे। शासन जव जन-जन व्याप्त हो तभी वह उसके प्रति अपनी भागीदारी महसूस करेगा। कालमार्क्स न भी यही कहा था—साम्यवाद का अथ हे शासनविहीन शासन। ऐसे शासन मे शास्ता कोई दूसरा व्यक्ति नही रहेगा, अपितु व्यक्ति म्वय ही अपना शास्ता बन जायेगा। दूसरा कोई आदमी हर क्षण किसी पर चोकीदारी नही कर सकता। व्यक्ति स्वय ही स्वय पर हर समय चोकीदारी कर सकता हे। शासन चाहे कितने ही इन्स्पेक्टर नियुक्त कर दे पर यदि आदमी का अदर का निरीक्षक जागृत नही हुआ तो वह भरी दुपहरी मे भी दूसरो को धोखा दे सकता हे। यदि आदमी अपने आप को धोखा देना छोड दे तो वह अन्य किसी को धोखा नही दे सकता। जनतन्न मे भी ऐसी ही व्यवस्था की आवश्यकता ह। वही तन्न सफल हो सकता है जिसके केन्द्र मे आत्मानुशासन हो।

व्यापार और अणुव्रत

समाज-धारणा के लिए वस्तु का उत्पादन जितना महत्त्वपूर्ण हे, उसका वितरण भी कम महत्त्वपूर्ण नही हे। यह हर एक के वश की वात नहीं हे। वहुत वार सरकारे इस कार्य मे आगे आती ह, पर अनुभव वताता हे यह वडा जटिल कार्य हे। कुशल व्यापारी ही उसका सही हिसाव किताव रख सकता हे। इसीलिए प्राचीन काल मे भी असि ओर कृपि के साथ-साथ मसि अर्थात् व्यापार को भी एक सम्मान्य दर्जा प्राप्त था। आज व्यापार का क्षेत्र ओर उसकी प्रेरणा का रूप वदल गया हे। पुराने जमाने मे मनुष्य की आवश्यकताए कम थी ओर वे प्राय अपने गाव से ही पूरी हो जाती थी। यद्यपि कुछ वस्तुए वेलो पर लाद कर देश विदेश के भिन्न भिन्न भागो म पहुचाई जाती थी तथा नोकाओ द्वारा कुछ विदेशी व्यापार भी होता था, पर आज तो जेसे पूरी दुनिया ही एक हो गई हे। यातायात ओर सवहन के साधन इतने वढ गए हे कि पूरी दुनिया के बीच व्यापार की भोगोलिक दूरिया मिट गई हे। स्थिति यह हे कि कई वार तो देश की अपेक्षा विदेशी चीजे ज्यादा सस्ती मिलती हे। इसीलिए पूरी दुनिया की मंडिया एक दूसरे के साथ गहराई से जुड गई हे।

अथकेन्द्रित व्यवस्था

इसके साथ-साथ कुछ समस्याए भी पेदा हुई ह। सबसे वडी समस्या *तो यह हे कि पहले व्यापार आजीविका का साधन तो अवश्य था,* पर फिर भी उसके पीछे सेवा का एक दर्शन था। पर आज सेवा का वह दशन समाप्त प्राय हो गया हे। असल मे आज का युग पूरी तरह से 'अर्थ एव प्रधानम्' की धूरि पर घूमने लगा हे। इस प्रवृत्ति ने मनुष्य

के मन मे वहने वाले करुणा तथा पारस्परिकता के स्रोत को इस हद तक सुखा दिया हे कि आदमी व्यापार मे किसी प्रकार की बेईमानी करने से नहीं हिचकता। इस दृष्टि से तस्करी का धन्धा नम्वर एक हे। कुछ उद्दड लोग नेतिकता के सारे नियमा को ताक पर रखकर देश की अथव्यवस्था क साथ झूठा खिलवाड करने से बाज नही आ रहे ह। तस्करी आज पूरी दुनिया की समस्या हे। नशीले पदार्थों की तस्करी के सामने तो अन्य सारी वाते गोण हो गइ हे। इसके अतिरिक्त टेक्सो की चोरी भी देश की अर्थव्यवस्था पर एक करारा आघात हे। इसी से काला धन पेदा होता हे। वह कुछ आदमियो के हाथो मे पडकर शोपण का एक हथियार वन जाता हे।

शस्त्रो का व्यापार

व्यापार का एक रोमाचक रूप जो आज उभर रहा हे, वह ह शस्त्रो का व्यापार। सचमुच कुछ विकसित देश लोग अपनी वेज्ञानिक क्षमता का लाभ उठाकर तथा युद्ध का कृत्रिक व्यावसायिक वातावरण वनाकर सहारक शस्त्रो का इतना जवरदस्त धधा करते ह कि गरीव ओर अविकसित तथा अद्धविकसित देशो का ता कचूमर ही निकल जाता ह। उनके सामने अपने अस्तित्व का सवाल रहता हे, अत गरीवी को आढकर भी उन्ह शस्त्र खरीदने पडते हे। यह सही हे कि वडे देशो की वेज्ञानिक क्षमताओ ने उन्ह वह सामथ्य प्रदान किया हे, पर इसमे भी कोई सन्देह नहीं हे कि अविकसित राष्ट्र इससे बहुत तीव्रता से प्रभावित होते हे।

वहुराष्ट्रीय कम्पनिया

इसी प्रकार अनेक वहुराष्ट्रीय कम्पनिया भी मशीनो के द्वारा वडी मात्रा मे अपने माल का उत्पादन कर पूरी दुनिया मे अपना जाल फला रही ह। मशीन की उपयोगिता को नकारा नहीं जा सकता। पर जव मशीन मनुष्य को पीसने लगे तो उसे उचित केसे कहा जा सकता हे? इस आग मे घी डाल रही हे—आज की विज्ञापन-सस्कृति। रेडियो, टी वी तथा पत्र-पत्रिकाओ म इतने लुभावने विज्ञापन आते ह कि गरीव

लोग भी उनसे लुभा जाते हे ओर उपभोक्तावाद के चगुल म फस जाते हे। स्थिति तो यह हे कि विज्ञाप्नो मे जेसा दिखाया जाता हे वह सही नही होता। स्वास्थ्य क लिए भी वहुत मारी चीज अनुकूल नही होती, पर फिर भी कुछ लोग अपने स्वाथ के लिए वेसा विज्ञापन करते हे ओर प्रचार माध्यम (मीडिया) अपनी कमाई के लिए उन्ह प्रोत्साहन देते हे। जव आदमी वार-वार किसी चीज को देखता हे तो स्वाभाविक रूप से वह उससे प्रभावित होता है। कोमलमति वच्चा के मन पर ता उसका ओर भी अधिक प्रभाव होता हे। फिर सव कुछ भूलकर कर्ज लेकर भी आदमी उनमे फस जाता हे। इसीलिए आज की दुनिया का वहुत वडा भाग कर्जदार हे।

छलनापूर्ण व्यवहार

फिर मिलावट, कम तोल-माप अच्छी के स्थान पर वुरी चीज देना आदि अनेक वुराइया भी ह जा व्यापार की प्रेरणा को ही हल्के स्तर पर ला पटकती हे। जब तक आदमी मे प्रामाणिकना की भावना नही आती, तव तक वह जघन्य काम करन मे भी नही हिचकिचाता। इस दृष्टि से व्यापार शुद्धि के लिए अणुव्रत का महत्त्व असंदिग्ध है। अणुव्रत एक सयम का आन्दोलन हे। अत आवश्यकताआ का अल्पीकरण इसकी सहज स्वीकृति हे। कुछ लोगो का विचार हे--आवश्यकताए बढेगी तो उत्पादन भी वढेगा। उससे सहज रूप स मानव ज्यादा सुखी होगा। पर हम देखते हे कि आवश्यकताओ का कहीं अन्त नही होता। वे आगे से आगे वढती जाती हे। इससे प्रकृति का जबरदस्त दाहन होता ह आर प्रदूषण की समस्या खडी होती हे। यह ठीक हे कि आदमी पुन गुफा मानव नहीं वन सकता पर यह भी सत्य हे कि यदि उसने अपनी आवश्यकताओं पर अकुश नही लगाया तो एक दिन पकृति का सन्तुलन विगड जायेगा। अत यह वहुत जरूरी ह कि आदमी समय रहते चले। इसीलिए इसे उस अणुव्रत की आवश्यकता हे।

व्यापार के सन्दर्भ म सार्वजनिक क्षेत्र ओर निजी क्षेत्र की चर्चा भी वहुत वार चलती हे। निजी क्षत्रा की स्वाथपरता के कारण सावजनिक

ान, जीवनशैली मे परिवतन एव व्यवस्था परिवतन य चार
ः। अधिकाश लोग सारी वात को व्यवस्था के खूंटे वाध
के हिसाब से जव तक व्यवस्था का परिवतन नहीं होता,
हिसा का आचरण भी सम्भव नहीं वनता। यह राजनीति
ासे लोग राजनीति को ही समस्त अच्छाइयों-वुराइया की
इसम कोइ शक नहीं कि व्यवस्था आदमी का वाधित
सक वदलन मात्र से आदमी नहीं वदल जाता। एक
ः तो दूसरा आदमी सत्ता सिहासन पर वैठ जाता है।
क साथ थी वह 'व' के साथ शुरू हो जाती है। इससे
ो कवल परिस्थिति वदलती है।

ा परिवर्तन के साथ-साथ जीवन शैली म परिवतन
। जव तक जीवनशैली सादगी और सयम से भावित
वल व्यक्ति स्वय ही अहिसक वन सकता, अपितु
ो उससे प्रभावित हुए विना रह सकती। भोगवादी
न्याया को जन्म दिया है। इसलिए अणुव्रत
ीवनम'—सयम ही जीवन है।

क लिए दृष्टि परिवतन आवश्यक है।
त्त्व को नहीं समय लेता तव तक वह
व्यक्ति को समस्त के साय जुड़ने

समस्त क साथ जुड़ा हुआ है
आदमी अहिसक वनना ता
ो है

हिसा ओर अहिसा का फासला कैसे मिटे?

अहिसा जीवन का शुक्लपक्ष है। हिसा उसका कृष्णपक्ष ह। जीवन मे एक विन्दु ऐसा भी आता है जहा अहिसा का ही उजाला होता है। पर वह हर आदमी के लिए सम्भव नहीं है। साथ-माथ यह भी सही हे कि हिसा के अधेरे म भी जीवन नही चल सकता। ऐसी स्थिति म सामान्य आदमी का जीवन हिसा-अहिसा का एक समन्वित मार्ग होता है। आज जीवन म हिसा का पक्ष प्रवल ह। इससे अनक समस्याए खडी हा रही ह। अणुव्रत हिसा ओर अहिसा के इस फासले को कम करने का प्रयास हे।

अहिसा जीवन का अग वने

यो आज अहिमा पर चर्चाए खूव चलती है। राष्ट्रीय एव अन्तर्राष्ट्रीय सेमिनारो की भी कोई कमी नही हे। उनसे एक वातावरण भी वनता हे, पर मूल समस्या ता यही हे कि अहिंसा जीवन का अग केस बने। यह ठीक हे कि चर्चाओ से विचार वनता हे। पर विचार को आचार तक लाना अत्यन्त जरूरी हे। जव तक विचार आचार नही बनता है तो वह मात्र वागू-विलोडन होकर रह जाता हे। ऐसी स्थिति म धीरे धीरे विचार पर आस्था कम हो जाती है। आज सभा, समिनारा क प्रति जो अनास्था हो रही है उसका मूल कारण यही हे कि वे मनुप्य मे परिवर्तन के घटक नही बन पा रहे हे।

अहिसा का प्रशिक्षण

अणुव्रत आन्दोलन ने इस समस्या पर भी विचार किया है ओर अहिसा प्रशिभण ने केवल अन्तर्राप्ट्रीय सम्मेलन ही वुलाया अपितु उसकी एक प्रविधि भी वनाई। उसके अनुसार अहिसा प्रशिक्षण के हृदय परिवतन,

दृष्टि परिवतन, जीवनशली मे परिवतन एव व्यवस्था परिवर्तन ये चार सूत्र वनते है। अधिकाश लोग सारी वात को व्यवस्था के खूटे वाध देते हे। उनके हिसाव से जव तक व्यवस्था का परिवतन नही होता, तव तक अहिसा का आचरण भी सम्भव नही वनता। यह राजनीति का सूत्र है। ऐसे लोग राजनीति को ही समस्त अच्छाइयो-वुराइया की जड मानते हे। इसमे कोइ शक नही कि व्यवस्था आदमी को वाधित करती हे, पर उसके वदलने मात्र से आदमी नही वदल जाता। एक आदमी वदलता हे तो दूसरा आदमी सत्ता सिहासन पर वेठ जाता ह। जो समस्या 'अ' के साथ थी वह 'व' के साथ शुरू हो जाती ह। इससे समस्या नही मिटती केवल परिस्थिति वदलती हे।

इसलिए व्यवस्था परिवतन के साथ-साथ जीवन शेली म परिवतन की भी आवश्यकता हे। जब तक जीवनशेली सादगी ओर सयम से भावित नही होती तव तक न केवल व्यक्ति स्वय ही अहिसक वन सकता, अपितु पयावरण तथा अथनीति भी उससे प्रभावित हुए विना रह सकती। भागवादी जीवनशेली ने ही अनेक अन्यायो को जन्म दिया हे। इसलिए अणुव्रत का नारा हे—'सयम खलु जीवनम'—सयम ही जीवन है।

जीवन शली के परिवर्तन के लिए दृष्टि परिवतन आवश्यक हे। जव जक आदमी सापेक्षत्व के महत्त्व को नही समझ लेता तव तक वह अहिसा की ओर नही वढ सकता। व्यक्ति को समस्त के साथ जुडने वाली दृष्टि ही अहिसा हें।

दृष्टि-परिवतन का एक सिरा जहा समस्त के साथ जुडा हुआ ह वहा दूसरा सिरा अपने साथ जुडा हुआ हे। आदमी अहिसक वनना तो चाहता ह पर उसके अन्दर से कुछ सस्कार एसे उभरत हे जो न केवल उसके मन को ही प्रभावित करते हे अपितु शरीर को भी प्रभावित करते ह। इसलिय हृदय परिवर्तन की आवश्यकता हे। कानून तो वहुत वने हुए हे। आदमी उनके उल्लघन के परिणामा को भी जानता हे, पर अन्दर जव सस्कारा की माग उठती हे तो वह उन सवको भूल जाता ह। अणुव्रत के अन्तर्गत प्रेक्षाध्यान के माध्यम से भाव परिवतन या हृदय-परिवर्तन की इस विधा पर वहुत विस्तार से विचार किया गया हे।

नया प्रयोग

अहिंसा के प्रशिक्षण की दृष्टि से अपनी तरह का यह एक अलबेला प्रयोग है। आज जबकि पूरी दुनिया हिंसा के आतंकित/शंकित है, अहिंसा के इस प्रशिक्षण से आशा का एक नया द्वीप दिखाइ देता है। आवश्यकता यही हे कि गहराई एव पूर्ण निष्ठा के साथ आचार की दिशाओं को उद्घाटित किया जाए। बहुत सारे लोगा का यह आक्षेप रहा ह कि केवल उपदेश से क्या हो सकता है? अणुव्रत की ओर से यह एक प्रयोग उपस्थित किया गया है। आशा है, इसके परिणामो से देश विदेश के सभी लोग भावित प्रभावित होगे।

हिसा सबसे बडी समस्या

अहिसा एक जीवन-मल्य है। यो इसका अपना शाश्वतिक मूल्य हे, पर आज हिसा की प्रवनता ने इस मूल्य को ओर भी अधिक प्रबल वना दिया हे। हिसा केवल किसी को मार देना मात्र नही हे। मारना तो उसकी अंतिम परिणति हे। वास्तव मे तो अहिसा का अर्थ हे आत्म-चेतना का जागरण। जव मनुष्य की आत्म-चतना जाग जाती हे तव उसका व्यवहार अपने आप करुणामय वन जाता हे। उसमे हत्या तो अपने आप मिट जाती हे। महात्मा गाधी से एक वार पूछा गया कि आपकी दृष्टि से आज के युग की सबसे वडी समस्या क्या हे? उन्होने कहा—आज की सबसे वडी समस्या हे मनुष्य के मन के करुणा के स्रोत का सूख जाना। जव आदमी की सवेदना समाप्त हो जाती हे तो वह कितनी भी वडी हिसा करन मे नही हिचकिचाता। विस्मय की वात तो यह हे कि हिसा के प्रशिक्षण के लिए आज अनेक प्रयत्न हो रहे हे। हिसा आज इतनी प्रवल हे तथा उसकी प्रबलता को ओर अधिक गहरा किया जा रहा हे, इसके क्या परिणाम होग इसकी कल्पना सहज ही की जा सकती हे।

अहिसा पर परिसवाद

पर एसी परिस्थिति मे भी अहिसा की कुछ शक्तिया काम कर रही हे। अणुव्रत का भी इस दिशा मे अपना विनम्र प्रयास हे। २६, २७ नवम्बर, १९९२ को लाडनू म इस सम्बन्ध म एक अन्तराष्ट्रीय परिसवाद आयाजित किया गया था, उसमे अणुव्रत अनुशास्ता आचार्यश्री तुलसी, युवाचाय महाप्रज्ञ के अतिरिक्त नार्वे के सुप्रसिद्ध अहिसावादी

एव चिन्तक डॉ जोहान गेल्टूग, स्वर्गीय मार्टिन लूथर किग क अनन्य सहयोगी एव मार्टिन लूथर किग अहिसा सस्थान अल्वेनी (अमेरिका) के परामर्शक अहिसा प्रेमी डॉ वनाड लफाये, जोजिया के किग सेन्टर के कायक्रम सहायक केप्टिन चाल्स एलफिन, सयुक्त गष्ट्र की प्रतिनिधि सुश्री रोविन लुडविग, गुजरात विद्यापीठ के कुलपति डॉ रामलाल पारीख आदि सुप्रसिद्ध व्यक्तिया के भाग लिया। हवाइ विश्वविद्यालय के प्रोफेसर अमेरिटस तथा अहिसा के प्रवल समर्थक डॉ ग्लेन डी पेज ने इस परिसवाद का सयोजन किया।

परिसवाद मे मुख्य रूप स तीन प्रश्ना पर विस्तृत चचा की गई। वे तीन प्रश्न थे—१ क्या अहिसा का प्रशिक्षण सभव हे? २ यदि हा तो उसके प्रशिक्षण का स्वरूप क्या हो? तथा ३ उसकी प्रक्रिया क्या हो?

डॉ ग्लेन डी पेज ने इस परिसवाद का इतनी दक्षता से सचालन किया कि एक के वाद एक परत उघडती गइ। सभी सभागियो ने भी अपने-अपने प्रयोगो तथा अनुभवो के आधार पर अत्यत सटीक जवाव दिए।

इस परिसवाद से जो तत्त्व उभर कर आये उनमे से चार बाते प्रमुख रही। सवसे पहली बात थी दृष्टि-परिवतन। जव तक आदमी की दृष्टि ही नही वदलती तव तक आगे का प्रस्थान असभव हे। आज जो युद्ध ओर हिसा मे समाधान की धारणा जमी हुई हे उसे अहिसा मे प्रतिष्ठित करना सबसे पहला कदम हे।

उसके बाद नम्वर आता हे सवेगा पर विजय प्राप्त करने का। हिसा का हमारे सवगा से वहुत वडा सम्वन्ध हे। थोडी-सी प्रिय-अप्रिय वात होती हे ओर आदमी सवगा से भर जाता ह। उस क्षण वह क्या कर गुजरता हे इसका भी उसे पता नही रहता। अत आवश्यकता यह हे कि हर आदमी को अपने सवेगो पर नियत्रण स्थापित करने का प्रशिक्षण दिया जाए। खास कर सेना एव पुलिस जेसे विभागो म तो इस प्रशिक्षण की ओर भी अधिक अपक्षित ह। कभी-कभी पुलिस का थोडा-सा सवेग स्वरूप इतना वडा हगामा पेदा कर देता हे जिमस न केवल करोडो रुपये खच हो जाते हे, अपितु अनेक वेगुनाह जान भी चली जाती हैं। युद्ध के

मामले मे तो सवेग एक महत्त्वपूण पहलू है। जितने भी युद्ध भडकते हे वे सवेगो के अनियत्रण के कारण ही भडकते ह। इस दृष्टि स ध्यान-कायोत्सर्ग आदि विधिया का अपना असंदिग्ध एव अचूक प्रभाव हाता हे। अहिसा प्रशिक्षण के वे प्रभावी अग हे।

परिसवाद मे यह भी चचा आइ कि अभी इस प्रशिक्षण का एक सीमित कायक्षेत्र म प्रयोग किया जाए। यह जरूरी हे कि दुनिया भर म अहिसा की प्रतिष्ठा हो, यह एक साथ सभव नही ह। आवश्यकता हे कुछ व्यक्ति एव परिवारो को अहिसा के प्रशिक्षण से विशेप रूप से जोडा जाए। क्योंकि युद्ध तो कभी-कभार ही भडकता है। व्यक्ति ओर परिवार ता निरतर आन्तरिक सघर्प से आक्रीण रहते हे। अत इस दृष्टि से कुछ सीमित क्षेत्रो म प्रयोग विशेप प्रयोग किए गए। व्यक्ति की शांति ही ससार की शांति हे।

यह भी अनुभव किया गया कि इस प्रशिक्षण को शिक्षा-क्षेत्र म योजनाबद्ध तरीके से लागू किया जाये। इस दृष्टि से जीवन-विज्ञान को एक सशक्त माध्यम के रूप मे स्वीकार किया गया।

परिसवाद अपने आप मे इतना प्रभावकारी था कि डॉ लफाये ने कहा--मेने आज तक दुनिया भर के अनेको परिसवादा मे भाग लिया हे, पर यह परिसवाद जितना प्रभावी रहा, उतना कोइ नही रहा। मे चाहता हू ऐसे सवाद निरतर जुडते रहे।

नशे का जहर

दुनिया मे अनत रहस्य हे। आदमी अनत को क्या समझे, अपन रहस्य को भी समझ ले तो भी काफी हे। यह आदमी अपने आपको भी नहीं समझ पा रहा हे। कहते ह दुनिया मे अमृत होता हे। अमृत का अथ ऐसे पदार्थ से जुडा हुआ हे, जिसके खाने से आदमी मरे नही, अमर वन जाए। अमृत-फल, अमृत-वल जेरे अनेक शव्द प्रयोग मे चलत ह। पर हमारी जानकारी म ऐसा कोइ पदार्थ नही आया जा आदमी को अमर वना दे। ऐसे अनेक पदार्थ ह जो मनुष्य के लिए स्वास्थ्यकारी ह। वे मनुष्य के तन मन को स्वस्थ एव सक्रिय रख सकते हे। पर ऐसा कोई पदार्थ देखने मे नही आया जो आदमी को अमरता प्रदान कर दे।

हा, ऐसे अनेक पदार्थ हमारी जानकारी मे हे जो तत्काल आदमी को मोत के घाट उतार द। ऐसा तालपुट विप सुनने मे आया हे जो ताली बजने जितने समय मे हाथी जेसे भीमकाय प्राणी को भी मोत के मुख मे धकेल देता हे। ऐसे अनेक जहर हे कि उन्हे खाने के बाद आदमी उनके स्वाद के बारे मे बताने तक के लिए भी जिन्दा नही रह सका। तत्काल उसकी मोत हो जाती।

कुछ जहर इतने तीव्र तो नही होते पर धीरे-धीर आदमी को मात के कगार तक पहुचा देते ह। वे जीवन के लिए आवश्यक नही है, बल्कि हानिकारक ह। फिर भी आदमी उनका सेवन करता हे। हा, अज्ञानी प्राणी ऐसा करे तो समझ मे आ सकता ह। अज्ञानी प्राणी भी यह जानते हे जो चीज उनके स्वास्थ्य के अनुकूल नही होती वे उसे नही खाते। विवशता म खाना पडे वह अलग बात हे। फिर भी पशु अज्ञानी हे।

आदमी के पास अपना भला-बुरा साचने का मस्तिष्क है। इसके बावजूद वह यदि अज्ञानी बनता है, जहर खाता है तो उससे बढकर नादान कोन हो सकता है?

नशे की शुरूआत

जहर के अनेक रूप ह। पर नशा ता उसका स्पष्ट दिखता हुआ रूप है। नशे की शुरूआत कुसगति, कौतूहल या फेशन के रूप मे होती हे। *धूमपा उस मंजिल की आर उठा हुआ पहला कदम है।* धूम्रपान करना बच्चा या तो अपने परिवार स सीखता है या पास पडोस और दोस्तो से। शुरू-शुरू म इसस थोडी स्फूर्ति महसूस होती हे। पर धीरे-धीरे वह स्फूर्ति आदत बन जाती है फिर आगे चलकर गाडी धूम्रपान तक ही नहीं रूकती अपितु शराब या नशीली दवाइयो तक पहुच जाती हे। शरीर की थकावट तथा मानसिक परेशानिया भी इसका कारण बनती हे। पर नशा करन वाले परिवारा की हालत हम हर जगह हमेशा देख सकते हे। भले कितनी ही विवशता क्या न हो पर जिस घर मे नशे का प्रवेश हो जाता हे उस घर स शान्ति कूच कर जाती है। फिर भी आश्चर्य यही ह कि लाखा-करोडो लोग मोत के इस कूच म शामिल हो रहे हैं।

मज की बात यह है कि बहुत सारे समझदार लोग भी इसके चगुल म फस हुए ह। नशे से होने वाले नुकसाना के बारे म अब कोई संदेह नहीं रह गया हे। विद्वान् अनेक चतावनिया दे चुके हे पर कितने आश्चर्य की बात है कि मोत से जुझने वाले डॉक्टर भी नशे के आत्मघाती जाल मे फसे हुए हैं।

यह सही हे कि नशा विविध रूपो म आदमी को नुकसान पहुचाता हे। *यही वह सडक हे जो आदमी को अपराध-जगलो मे ल जाकर छोडती हे।*

नये लोगों को तो बचाए

अब जा नशे के आदी बन जाते ह उनके समझा पाना बहुत मुश्किल हे। इसका यह अथ नही हे कि उनको नही समझना चाहिए। पर यह

स्पष्ट है कि आदत के चुगल स मुक्त हाने का साहस करा वाल शूरवार कम ही हाते है। एसी स्थिति म यही उचित लगता है कि कम-स-कम उन लागा को ता वचाया जाए जा अभी तक इसकी गिरफ्त म नहीं आय। एसी स्थिति म दृष्टि यच्चा तक पहुचती है। यदि उन्ह सन्माग दिखाया जाए ता सभव है कि उनका व्यसन म पड़न स राका जा सक।

इसके लिए विद्यालय ही सर्वोत्तम साधन है। यच्चे न केवल सवदनशील होते ह अपितु ग्रहणशील भी होते है। अत मवस पहले विद्यालया को भी नशामुक्ति की इकाई के रूप म स्वीकार किया जाना चाहिए। विद्यालय का अथ केवल छात्र ही नहीं है। शिक्षका का भी इसक साथ जोडना चाहिए। जा शिक्षक नशा करते है वे न केवल अपना ही विनाश करत ह अपितु वे एक सामाजिक अपराध के दोषी ह। उन लोगा को विद्यालया म प्रवेश करन का अधिकार नहीं होना चाहिए। फिर भी उनका वहिष्कार करन से काम नही चल सकता। आवश्यकता यही है कि उन लागा के अन्दर वेठे हुए भगवान को जगाया जाए। यद्यपि वहुत सारे शिक्षक व्यसनमुक्त ही होते हे, ये जो थोडे लोग व्यसनग्रस्त ह, उनके विवेक को जगाया जा सकता हे।

यह तर्क सही ह कि वच्चे केवल स्कूल मे ही केद नही रहते। उन पर वाहर के परिवेश का भी प्रभाव पडता हे। सव लोग अपने आथिक लाभ-लोभ के लिए जान से खेलने वाले इस धधे स जुड रहते ह। वे ऐसे-ऐसे भडकीले विज्ञापन छापते-छपवाते ह जो वच्चो के कोमल मन पर अनजाने मे ही उसकी छाप छोड जाते ह।

सरकार की भूमिका

दु ख की वात तो यह ह कि सरकार भी इस वहती गगा मे अपने हाथ धोना चाहती हे। अव वहाने चाहे कुछ भी वनाये जाए पर क्या वह देश कभी ऊपर उठ सकता हे, जिसकी सरकार स्वय अपने नागरिका को नशा मुहेया करवाने मे मदद करती ह? निश्चय ही लाभ के पथ पर चलने वाली सरकार ऐसा काय नही कर सकती। जिस सरकार के दुल्हे क मुह म ही लार टपकती हे वह भला वारातियो के मुह की क्या सफाइ कर सकेगी?

पर सरकार को जगाने के लिए अतत अभियान जनता से ही शुरू करना होगा। उसके पहले कदम के रूप मे देश के छात्रो-शिक्षका को मनाया जाना आवश्यक हे अणुव्रत अभियान के अन्तगत इस पहलू पर काफी सोचा-विचारा गया हे। पिछले वर्ष अणुव्रत शिक्षक ससद एव अणुव्रत छात्र ससद के माध्यम से ७० लाख छात्रो को नशामुक्ति के सकल्प से जोडा गया हे। इस क्रम को अभी स्थगित नही किया गया ह अपितु ओर अधिक गतिशील वनाने हेतु २ करोड छात्रा को जोडने का सकल्प है।

सकल्प वल को जगाए

अव कहने को यह कहा जा सकता हे कि केवल सकल्प करवाने से क्या हागा? एक वार तो सकल्प काइ भी कर सकता है। जाने-अनजाने वहुत वार उस सकल्प के टूट जाने की ही सम्भावना हे। इस तक मे सत्याश नहीं है, ऐसा नही है, पर आदमी के सकल्प वल को जगाने क सिवाय और कोइ विकल्प भी क्या हो सकता हे। केवल कानून से यदि काई वुराई मिट जाती तो कानूना से तो पोथे भरे हुए हे। आज आवश्यकता यही है कि आदमी के अन्दर सोये हुए भगवान को जगाया जाए। शायद इस दृष्टि से वच्चो के अन्दर सोये भगवान को जगाने स ओर कोई भी सरल मार्ग नही हो सकता।

विद्यालयों से पहल करें

इसीलिए अणुव्रत इस वात पर जोर दे रहा है कि विद्यालया की प्राथमिक दृष्टि से व्यसन मुक्ति से जोडा जाए। हम केवल सकल्प नही करवाना हे, अपितु इस वात की प्रतिलेखना करते रहने की भी आवश्यकता हे। निश्चय ही इसमे शिक्षका की भूमिका अत्यन्त महत्त्वपूर्ण हे। हम दुनिया के अनत रहस्यो का समझ या समझा सके या नहीं। पर नशे की वुराइयों को तो अवश्य समझे-समझाये, यह आवश्यक है। हम वहुत वडी वाते करे यदि एक भी अच्छा काम कर सकें तो जीवन की सार्थकता हे।

गरीवी का कारण

गरीवी एक अभिशाप है। पर सवाल तो यह हे कि आदमी गरीब होता क्यो हे? क्या दूसरा कोइ किसी पर गरीवी लाद सकता हे? नहीं, दूसरा कोई किसी पर गरीवी या अमीरी नही लाद सकता। आदमी स्वय ही गरीब ओर अमीर वनता हे। गरीवी के अनेक घटक ह, पर व्यसन उसका एक प्रमुख घटक हे। आदमी वडी मेहनत से अमीर बनता हे, पर जब वह व्यसन मे चला जाता हे तो धीरे-धीरे उसकी अमीरी गरीवी म तब्दील हो जाती हे। व्यसन के कारण ही अनेक राजाआ को अपने राज्य से हाथ धोना पडा। अनेक उन्नत सस्कृतियो का व्यसन के कारण नामोनिशान मिट गया। आदमी स्वय ही उन्नत होता हे स्वय ही अवनत होता हे। वह स्वय ही अपने प्रति दायित्वशील हे। इसीलिए अणुव्रत के अन्तगत व्यसन मुक्ति को एक विशेप लक्ष्य बनाया गया हे। यद्यपि आज व्यसनो का दायरा विस्तृत हो रहा हे पर उसके परिणाम भी किसी से छिपे नही हे। आज व्यसनो ने न केवल पूरी अर्थनीति को झकझोर दिया हे अपितु स्वास्थ्य के लिए भी एक चुनोती वन गया हे। इसीलिए अणुव्रत अनुशास्ता के सामने इस पर विस्तृत रूप से चिनन किया गया। इसी दृष्टि से विद्यालयो को केन्द्र मानकर नशा-मुक्ति का एक विशेप अभियान चलाया गया।

इस दृष्टि से छात्र वर्ग विशेष रूप से सामने आया। यह सही हे कि बच्चो के शारीरिक, मानसिक, सवेगात्मक ओर सामाजिक विकास पर भोतिक वातावरण के साथ-साथ परिवार तथा अभिभावका के व्यवहार का भी प्रभाव पडता हे, पर इसमे कोई सदेश नही हे कि छात्रो क जीवन पर विद्यालय का एक विशेप प्रभाव होता हे। इस अवस्था म बच्चो की मनोवृत्ति न केवल स्वीकारात्मक ही होती हे अपितु उसमे परिवर्तन भी बहुत सभव/सुलभ हे। इसीलिए अणुव्रत शिक्षक ससद ने यह बीडा उठाया ओर पूरे देश म नशा-मुक्ति का एक सशक्त अभियान चलाया। एक ओर यह नारा हिमालय की उत्तुग चोटियो पर नेपाल म गूजा ता दूसरी ओर अरब सागर के किनारे तमिलनाडु मे भी गूजा। एक ओर

जहा यह स्वर कलकत्ता, वम्वइ जसे महानगरो म मुखरित हुआ तो दूसरी ओर कासण ओर कुचेरा जसे छाटे-छोटे गावो म भी इसका पसार हुआ। माध्यमिक कक्षाआ से लेकर विश्वविद्यालयो तक इस अभियान की दस्तक हुइ।

इस काय म अणुव्रत समितियो, अणुव्रत छात्र ससद, युवक परिषद् एव महिला मण्डल का भी व्यापक सहयोग मिला। साधु-साध्विया, शिक्षको एव कायकर्ताओ ने स्कूल-स्कूल मे पहुच कर छात्रो को व्यसन से मुक्त होने की प्रेरणा दी। उन्हे प्रतिज्ञात किया एव स्मृति स्वरूप नशा मुक्ति सकल्प-काड दिये। इससे यह संदेश न केवल स्कूलो एव छात्रो मे ही पहुचा अपितु घर-परिवार तक भी पहुचा।

घर-घर मे प्रचार हो

कुछ लोगो का यह विचार भी सामने आया के केवल वच्चा से प्रतिज्ञा करवाने से काम नही चल सकता। इसीलिए सकल्प के इस संदेश को घर-परिवार मे पहुचाने का प्रयास किया गया। आज विद्या सस्थान किस तरह से नशा के कन्द्र वन गए इसे वताने की विशेप आवश्यकता नही हे। अखवारो मे निरतर ऐसे सर्वेक्षण प्रकाशित होते रहते हे जो इस बुराइ के ग्राफ की निरतर ऊपर उठने के सकेत दे रहे है। एक सर्वेक्षण के अनुसार काशी-हिन्दु विश्वविद्यालय के छात्रो मे एल एस डी, अफीम, गाजे ओर भाग का प्रचलन सर्वाधिक हे, जवकि वम्वइ के छात्र शराव प्रयोग म सवस आगे हे। मद्रास विश्वविद्यालय के छात्र तम्वाकू सेवन मे सर्वोपरि हे। जयपुर के छात्र कोकीन लेने मे सवको पीछे छोड देते हे तो दिल्ली के छात्र नींद की गोलियो के सेवन के आदी हे। आज छात्राए भी इस दिशा म तीव्रता से विकास कर रही हे। दिल्ली विश्वविद्यालय की १४ ३ प्रतिशत लडकिया नशीली दवाओ के सेवन की आदी ह, जवकि इलाहावाद विश्वविद्यालय के सर्वेक्षण म छात्र जहा एक चोथाई मादक पदार्थो के व्यसना के व्यसनी पाए गए, वहा लडकियो की सख्या लडका स अधिक पाई गई। वाराणसी विश्वविद्यालयो मे १५ ५६ प्रतिशत छात्राए विभिन्न मादक पदार्थो का स्वाद चख चुकी हे। बम्वइ मे इन मादक

पदार्थो का उपयोग खुले रूप म किया जाता है। जिनम छात्राए ५५ प्रतिशत हे। इसीलिए अणुव्रत नशामुक्ति अभियान म छात्रा के साथ-साथ छात्राओ को भी विशेष सावधानी से प्रतिज्ञात/प्रतिवोधित किया गया।

इस अभियान को जनता स जाडने के लिए कलकत्ता, वम्वइ, मद्रास आदि अनको महानगरो मे नशामुक्ति रेलिया निकाली गइ। अखवारा, आकाशवाणी तथा दूरदर्शन पर भी उनका प्रचार-प्रसार किया गया। पास्टस, भाषण, निवन्ध आदि विविध प्रतियागिताए आयोजित की गइ।

यद्यपि अणुव्रत एक व्यापक आदोलन हे। शिक्षा मे भी जीवन विज्ञान के रूप मे मूल्यपरक शिक्षा के समावेश पर जोर दिया जा रहा ह। नशामुक्ति अभियान भी उसी मूल्यपरकता की ही एक प्रतिध्वति से, अणुव्रत क सभी कायकर्ताआ से तथा अन्य लोगा से भी यही अनुरोध हे कि राष्ट्र की समृद्धि के लिए ऐसे अभियानो को सहयोग/सहभागिता पदान कर।

अखवारो मे समाचार पढ रहे ह कि हरियाणा सरकार शराव वन्दी का कानून वापस ले रही है। ऐसा एक वार नही हुआ हे अनेक वार हुआ हे। राजस्थान, आन्ध्र, तमिल आदि अनेक प्रदेशा की सरकारा ने शराब वन्दी का प्रयास किया था, पर वह सफल नही हो सका। वल्कि दिनो-दिन शराव की खपत वढती ही जा रही हे। पहले सभ्य लोग शराव पीते थे तो अलवत्ता छुप कर पीते थे। पर आज तो शराव पीना ही सभ्यता का अग वनाता जा रहा हे। शराव वन्दी के भी कभी-कभी आन्दोलन उठते हे, उससे कुछ वातावरण भी वनता हे, पर आज आसुरी शक्तिया इतनी प्रवल हो गई ह कि देवीय शक्तियो को उनके सामन घुटने टेकने पड रहे हे।

केवल कानून पर्याप्त नहीं

कुछ लोगो का विचार हे कि सरकार कानून वना दे तो यह वुराई मिट सकती हे। इसमे कुछ सच्चाइ नही हे, ऐसा नही *कहा जा सकता*, पर हरियाणा म कानून का जो हश्र हुआ उसको भी हमने दखा। वहा की सरकार ने चुनाव मे जीत हासिल की उसमे शराव वन्दी का ही हाथ था। महिलाओ का इसमे वहुत वडा योगदान रहा। पर लगता ह

आसुरी शक्तिया इतनी प्रवल है कि चाधरी वशीलाल आदि के नेक इरादे भी सफल नहीं हो सके। जव कुए म ही भाग पड जाए तो काई प्याउ नशे स मुक्त कैसे रह।

कितन आश्चय की वात है कि कुछ ऐसे समाज जो शराव से वहुत दूरी वनाये हुए थे, धीरे-धीरे शराव की वोतल उनके घर तक पहुचने लगी है। यह वहुत वडी चुनोती ह। वास्तव मे जन-जन की चेतना जगाये विना यह कार्य नहीं हो सकता। पर खुशी की वात है कि इस वप तेरापथ युवक परिपद् भी नशा मुक्ति के लिए अणुव्रत का सहयोग कर रही हे। यह वहुत कठिन कार्य ह इसके लिए सवल मोचा वनाना पडेगा।

आचार से पहले विचार

कुछ लोगो का विचार है कि प्रचार से नशा मुक्ति केसे सफल होगी। कौन सुनता हे आज उपदशो को? पर हमे समझना चाहिए कि आज दुनिया म जा कुछ भी सदाचार जीवित हे वह पहले विचार से ही अवतरित हुआ था। इसलिए विचार के प्रचार को शिथिल नही किया जा सकना। जव-जव प्रचार शिथिल हुआ हे, आचार भी शिथिल हुआ है। आज यदि कुलीन घरान भी नशे की गिरफ्त म आ रहे हे तो उसका कारण भी प्रचार है। नशे के पक्ष मे प्रचार जितना वढ रहा हे इस अनुपात मे इसका विरोध दुवल हुआ है।

ध्यान के प्रयोग

नशा छुडान के लिए सकल्प शक्ति के साथ-साथ मनोवल को मजवूत वनाने के लिए शिविरा का आयोजन भी करना पडेगा। इसके लिए युवक परिपद् ने कुछ याजनाए भी वनाई ह। प्रक्षा-ध्यान का इसमे वहुत वडा सहयोग हा सकता हे। फिर भी यह सच हे कि जन चेतना को जगाने के लिए तीव्र प्रयास करने पडेगे। निराश होकर बेठने वाले लोग कुछ भी नही कर सक्ते। वे निराशा ही फेला सकते हे। आज अनेक युवका तथा महिलाआ के कदम एसे क्लवो की ओर वढने लगे हे जहा नशे को योजनावद्ध तरीके से वढावा मिलता हे। ऐसी अवस्था मे अणुव्रत

समितिया एव युवक परिपदा तथा अन्य सस्थाआ का भी सावधान एव तीव्र प्रयत्न करने होगे। सदाचार के प्रचार क लिए आर अधिक सवल एव साथक प्रयास करन हागे। अपन प्रचार को आकपक एव सकारात्मक परिणाम वाला वनाना होगा।

नशे से जुड़ती नई पीढ़ी

वहुत सारे लोग गरीव ह, वे कहत ह हमारे साथ अन्याय हो रहा है। कुछ वडे लोग हमारा शोपण करत ह। पीढिया से हमे ठग रहे हे, हम ऊपर नहीं आने दत। पर वास्तव म दखा जाए तो अन्याय आदमी स्वय अपने साथ कर रहा ह। इसम काइ सन्देह नही कि जव तक आदमी स्वय कमजोर रहगा तव तक उस पर लदन वाले वहुत लाग रहेगे। दूसरा पर अपना वोझ लादना उचित नहीं ह। कमजोर आदमी स्वय दूसरो का यह अवसर देते हे कि वे उनके ऊपर अपना वोझ लादे।

अपने साथ अन्याय होन की वहुत सारी वात ह। अपने आपका नहीं समझ पाना ही एक वहुत वडा अन्याय हे। आजकल नशा का जोर वहुत तीव्रता स वढता जा रहा हे। नशा पहले भी कम नही था वहुत सार लोग उसस अपने जीवन के साथ खिलवाड करते थे, पर आज तो नशे के एम विनाशकारी रूप सामने आ रह ह कि उसे सुनते ही रोगटे खडे हा जाते ह। दुनिया म प्राकृतिक जहरा की भी कमी नहीं ह पर आज तो यह धधा इतना फल-फूल रहा ह कि कमाइ का सर्वोत्तम साधन वन गया ह। नशा केवल वीडी-सिगरेट ओर दारु-शराव का ही नहीं रह गया है स्मेक हैरोइन आदि न जाने कितने प्रकार की दवाइया विपुल मात्रा म वन-विक रही हे। क्यो वन रही हे आर वन भी रही है तो क्यो विक रही ह? निश्चय ही कुछ लोग अपने स्वार्थ के लिए यह धधा करते हे। उन्हे धिक्कारा जाना चाहिए, उन्हे कानून से रोकना चाहिए पर जो लोग इनका सेवन कर रहे ह वे अपने साथ

क्या कर रहे हे? कोई दूसरा उन्हे नशे मे नही ले जा रहा ह। वे स्वय उस दिशा मे आगे वढ रहे हे। अन्याय कोई दूसरा नही कर रहा ह आदमी स्वय अपने साथ अन्याय कर रहा हे।

आर आज तो मजा यह हे कि इस एक फेशन माना जाता हे। बहुत सारे वच्च केवल इसलिए इस अन्यास से जुड जाते हे कि व अपने आपको आधुनिक वनाना चाहते ह। आज अखवारो टी वी आदि पर जा नशे के विज्ञापन आते हे वे निश्चित रूप से कोमलमति किशोरो के लिए वडे खतरनाक ह। 'पनामा', 'रेड एण्ड व्हाइट पीने वालो की क्या वात हे' विज्ञापन शहरो से लेकर कस्वा तक दिखाई दे जाते ह। शराव के ढेरो, साइनबोर्डो ओर विज्ञापनो की कोइ कमी नही हे। सचमुच यह कुछ बेसमझ लोगो की एक स्वार्थभरी साजिश हे जिसकी गिरफ्त म अनायास अनेक जिदगिया मिटती जा रही हे।

खड्डे-खाइया खोदने वाला की दुनिया मे कोई कमी नही हे, कभी कमी नही रहेगी पर जो लोग जान बूझकर उनमे गिरकर आत्म हत्या करते हे उन्हे बुद्धिमान नही कहा जा सकता।

बुराइयो से लाग केमे-केसे आकपक रास्ता निकाल लेते ह, यह भी एक बडा चितन का विपय हे। सचमुच आज उपभोक्तावाद इतना अधा हो गया हे कि उसे केवल अपने पेसे से मतलब हे। ठडे पेय के नाम से आज जो चीजे धडलले से विक रही हे वह वडी चिता की वात हे। उन्हे नाम स्वास्थ्य का दिया जा रहा ह पर वास्तव म हे वह नशे का ही आदि रूप। चॉकलेट ओर टॉफी के नाम पर भी भोले लोगा को ही नही वडे वड समझदार लोगो को भरमाया जा रहा हे। जदा तो खर नशीला हे ही पर उसे ऐसे आकपक रूप मे परोसा जा रहा हे कि सयाने-सयान लोग उसमे फस जाते ह। ओर आज तो सुपारी को *गुटका-मसाले का नाम देकर ऐसा नशीला बनाकर वेचा जा रहा हे कि* अनेक लोग अनायास उसके चगुल म फस जाते ह। चमकीले पाउचा की चमक-दमक वच्चो को इतनी लुभा दती हे कि अभिभावका को न चाहते हुए उनकी माग को पूरा करना पडता ह। ओर जो अभिभावक स्वय ऐसे नशे म फसे रहते ह उनके वच्चा को तो कोई कहने-सुनने

तुलसी सगत टी वी की वढे कोटि अपराध

लगता हे आज घर की दीवार ही नही टूट रही ह, छत भी छिद्रित होने लगी हे। शहरा-नगरो की वहुमंजिली विल्डिगो मे भले ही परिवार अपने-अपने फ्लेटो मे केद ह, पर टेलीफोन इतने सक्रिय हो गए हैं कि पर्दे जेसी कोई वात रह ही नही गइ हे। हम अक्सर देखते हे मारवाडी परिवारा मे दाल राटी की जगह जुजराती खामण, महाराष्ट्रीयन पूरणपोली तमिलनाडु का इडली डोसा, कर्णाटक का उक्कीट्ठ-पोणम, पजाव का छोला पुलाव ओर तदुर भी घुस गया हे। आलू गोभी की ता वात ही क्या, प्याज-लहसुन भी आम हो गया हे। देश ही नही विदश भी भांति-भाति के पेकजा म घरो मे समाहृत हो चुका ह। डवल रोटी, विस्किट, केक तो सामान्य वात हे। आज तो चीज जेसी चीजे भी हर डाइनिग टेवल पर दर्शन दे जाती हे।

वदलते मूल्य

निश्चय ही परिवार की दीवारा मे आज सध लग चुकी ह। घाघरा-ओढना, साडी तथा सलवार कुता मे ही नहीं वदलता जा रहा हे, अपितु टोपलेस ड्रेस भी सामान्य श्रेणी मे प्रवेश कर चुकी हे। भले ही एयर इंडिया के होस्टेसो के लिये घाघरा-ओरणा मान्य वन गया हे पर फेशन की सीढियो पर वढते चरणो को उनमे वुजुआपन की गध आती हे। एक चुभने वाला अग प्रदशन चारो ओर घिर गया हे।

पर वात यही तक सीमित नही हे। आज केवल टी वी जिस तरह डिस एटीना से उतर कर ड्राइग रूम म पहुच गया हे वह अत्यन्त चिता की वात हे। छोटे वच्चे आज फाइटिग-रायफल के विना वात नही

करते, तो किशोर मारधाड वाले विडियोगेम्स के विना नही रहते। नोजवान सक्सी उपन्यासा के आदि वन कर स्कूल-कॉलेजा के वातावरण मे गदा वनाते है, तो युवक व्लूप्रिंट फिल्मे देखने म नही हिचकते।

चिता का सवसे खतरनाक पहलू तो यह हे कि लडकिया-युवतिया भी अपनी कुलीनता के प्रति सजग नही है। वनाव श्रृगार पहले भी होता हागा पर आज व्यूटी पार्लरो की जिस तरह की वाढ आ गइ हे। वह एक विस्मय का विपय है। नख से शिख तक के इतने महगे ओर हानिकारक प्रसाधना से न केवल स्नानघर अपितु वेडरूम भी ठसाठस भर गए हे। वल्कि आश्चर्य की वात यह ह कि उनका वाकायदा दिखावा किया जाता है। वह घर ज्यादा सम्पन्न ओर आधुनिक माना जाता हे जहा प्रसाधनो की प्रदशनी लगी हुई हो।

सास्कृतिक प्रदूपण

यह सही हे कि सास्कृतिक वनावट म महिलाआ ओर पुरुपो की समान भागीदारी हे, पर उसकी रक्षा का भाव जितना महिलाओ मे हे उतना शायद पुरुपो म नही हे। आज लगता हे, परिवार का वह पक्ष भी रुग्ण/दुर्वल वन गया हे। कभी-कभी तो धर्म स्थाना मे जिस तरह का पहनावा प्रवेश कर जाता है उसे देखकर आख झुक जाना चाहनी है। पर लडकिया ओर युवतिया ह कि वेधडक हर जगह इठलाती/इतराती घूमती रहती है। सचमुच टी वी के माध्यम से पश्चिम भाग पूर्व पर सवार होता जा रहा है। कहा नही जा सकता अगले दस वर्पो मे समाज मे कैसे मूल्य प्रतिष्ठित होने वाले है। कुछ वर्पो पहले तक जो नगापन सिनेमा घरो तथा क्लवो तक सीमित था वह आज हर घर वल्कि हर कमरे मे उतर आया हे। महावीर ओर चन्दनवाला की जगह माइकल ओर मेडेना युवकों के प्राण देवता वनते जा रहे हे। ढलान का माग सुगम तो है पर आधुनिकता की अधी दोड कहा जाकर खत्म होगी, कहा नहीं जा सकता।

हम लोग टी वी नही देखते ह अत एक प्रवुद्ध श्रावक ने मुझसे कहा—महाराज! म आपको वन्द कमरे मे कुछ टी वी प्रोग्राम दिखाना

चाहता हू ताकि आपको पता लगे कि आज समाज कहा तक पहुच गया हे। मेने कहा—भाई। माफ करो, मैं तो आजकल कभी-कभी अखवार भी हाथ म लेता हू तो ऐसी वाते देखकर शर्माता हू। सचमुच। जीवन इतना भोग प्रधान वन गया है कि त्याग का स्वर ही नहीं सुनाई देता।

अय से जुड़े सवाल

भोग का यह सारा कारवा अर्थ की गलियो से होकर गुजर रहा हे। सचमुच। जीवन इतना अर्थ-प्रधान वन गया हे कि नतिक व्यक्ति तो दयनीय समझा जाता हे। समाज तो असहाय हे ही, सरकार भी असहाय हे। वडी-वडी कम्पनिया, वडे-वडे लोग इस तरह से यह सारा जाल फला रहे हे कि कुछ समझ मे नही आता। आज तो अध्यात्म की एजेंसिया भी मोन हे। वल्कि वे भी पेसे के प्रवाह म इस तरह वहती जा रही ह कि कुछ कहा नही जा सकता। भले ही कुछ धर्मगुरुओ के वडे वडे नेताओ से सम्पर्क हे, पर वे केवल तान्त्रिक आशीर्वाद तक सीमित रह गए हे। वे उन्हे भावी खतरे के लिए सावधान ही नही कर पा रहे हे, या नही करना चाहते है, कहा नही जा सकता।

धर्मगुरुओं का दायित्व

धर्मगुरुआ का यह दायित्व ह कि आगे आकर समाज का, राजनीति का मागदशन करे। यदि ऐसे नही हुआ तो एक दिन सुसस्कार न केवल हवा हो जायेगे अपितु धमस्थान भी उजड जायेग। हो सकता हे ऐसा करने के लिए धमगुरुओ को अपनी सुख-सुविधाओ का त्याग करना पडे समाज स सघर्ष भी करना पडे। पर यदि मोका चूक गया तो हो सकता हे प्रकाश भी अधेरा बखेरने लगे। आज तो समाज म भी इसका प्रतिकार करने वाले कुछ तत्त्व ह। यदि उनका मार्गदर्शन किया जाये तो एक आवाज बुलन्द हो सकती ह, पर यदि यह समय निकल *गया* तो शायद वे बीज भी नष्ट हो जाए। सवाल टेढा जरूर ह पर यदि इच्छाशक्ति प्रवल हो तो वीमारी का कुछ इलाज किया जा सकता हे। आज की तारीख मे यही सवसे वडा धर्म हे।

घर को बुहारे

ऐसी स्थिति मे घर को बचाने का एक ही उपाय ह कि अभिभावक बच्चो को पूण वात्सल्य प्रदान कर उन्हे सच्चिन्तन एव सत्सगति मे लाने का प्रयत्न करे। अपने घर को बचाने का यही उपाय सभव हे कि अभिभावक स्वय बर्हिमुखता से बचे। यदि वे स्वय अन्तर्मुख हागे तो बच्चो पर भी प्रभाव पडेगा। सही हे कि बच्चे अपने आस-पास से भी सस्कार ग्रहण करत ह पर घर के सस्कार पुष्ट हा तो जाहर के सस्कारो से मुकाबला किया जा सकता हे। घर को सुधारने के लिए गृहपति का सुधार नितात अपेक्षित हे। जो लोग अपनी सस्कृति का मूल्य समझते हे ओर तदनरूप आचरण करते है वे ही लोग युगधारा के प्रतिस्रोत्र मे खडे रह सकते है। जो अनुस्रोन मे बहते हे, एक दिन उन्हे स्वय अनुभव होगा कि वे कहा पहुच गये हे।

बहुत पुराने जमाने मे सत तुलसीदासजी ने लिखा था—

> एक घडी-आधी घडी, आधी मे पुनि आध
> तुलसी सगत साधु की, कटे कोटि अपराध।

पर आज यदि वे जीवित होते तो शायद इस पद्य को इस तरह बदल देते—

> एक घडी-आधी घडी आधी मे पुनि आध
> तुलसी सगत टी वी की बढे कोटि अपराध।

हो सकता हे हमारे कुछ तथाकथित वाद्धिक लोगो को ये दोनो ही बात अतियुक्तिया लगे, पर यदि रत्नाकर, अगुलीमाल तथा अर्जुनमाली जेसे डाकू थाडी देर की सगति से पूण रूप से बदल सकते हे तो दिन भर चलने वाले टी वी का असर क्यो नही पडेगा, यह एक सोचने का विषय हे।

सगत का प्रभाव

यह सच हे कि दुनिया म साधु अनेक हे, जो सच्चे साधु होते

हे, उनके आभामण्डल म एक ऐसा आकपण होता हे कि उसम प्रवेश करते ही आदमी के भाव वदल जाते ह। कभी-कभी व वहुत पहुचे हुए न हो, वल्कि नामधारी भी हो तो भी आदमी पर उसके वेप का प्रभाव पडता है। अत इसमे कोई भी दो राय नही हो सकती कि उनकी सगति मनुष्य को प्रभावित करती हे। सत सगत से यदि कोइ अपराध कट सकते हे तो टी वी के कारण उनको वढने स कोन रोक सकता ह? सचमुच आज एक पूरा सास्कृतिक खतरा देश पर मडरा रहा ह। टी वी पर जो कार्यक्रम दिखाए जा रहे हे उनसे यदि मन मे गलत सस्कार न पडे तो वलिहारी हे। खुलेपन के नाम से आदमी जिस दिशा मे आगे वढ रहा हे, समय ही उसे उसके अर्थ समझायेगा। यह सही हे कि मनुष्य जीवन आनद के लिए हे पर जो आनद सीमातीत हो जाता है, उसकी प्रतिक्रियाए भी उभरे विना नहीं रह सकती है। मनुष्य ने अनेक वार ठोकरे खाकर कुछ सास्कृतिक मूल्यो का सृजन किया हे। वे यदि ध्वस्त होते हे उनकी प्रतिक्रिया अस्वाभाविक नही मानी जा सकती। पर शायद ठोकरे खाना भी मनुष्य की नियति हे। यदि आदमी की नियति ही खराव हे तो उससे वचने का कोइ उपाय नही हे।

वुराई का प्रभाव ज्यादा

कुछ लोगो का यह भी कहना हे कि टी वी म वहुत सारे अच्छे कायक्रत आते ह। उनका अच्छा प्रभाव भी ज्यादा पडना चाहिए। यह तर्क भी अनुचित नही हे। पर वुराइ मे जितना आकपण होता ह उतना अच्छाई मे नही होता। वुराई का एक काम जीवन भर भी अच्छाइ की कमाई को नष्ट कर सकता हे। आज तत्काल वह असर न भी दिखाइ दे, पर वच्चो के सस्कारो मे जो भाव गहरा रहा ह, वह वहुत चितनीय हे। वच्चो मे आज टी वी इनाउसमेट इतने प्रिय हो रहे हे कि उनके स्वर हमे धम स्थानो म भी सुनाइ देते हे। खाना-पहनावा तथा आदतो मे इतना तीव्र वदलाव आ रहा हे कि वह आज चुभने भी लगा ह।

नइ पीढी को पश्चिम आज जिस तरह से प्रभावित कर रहा हे, वह वहुत चितन का विपय ह। पहली वात तो यह हे कि पश्चिम का

पूरा दशन भाग पर टिका हुआ है। आज वहा जीवन मे जा विसगतिया स्पष्ट दिखाइ देन लगी है वे तो पूरी दुनिया के लिए ही खतरा पदा कर सकती है। यह किसी भारतीय ओर अभारतीय सहमति का सवाल नहीं ह पूरी दुनिया के सोच का सवाल हे।

दिल्ली के एक सहादय नामक विद्यालय म पढन वाले बच्चा का सर्वेक्षण करने पर पाया गया कि सो म स चौराणव बच्चे टी वी देखना पसद करते है जबकि केवल छ बच्चे पढना पसद करते ह। मलेशिया में किए गए एक अध्ययन मे यह तथ्य सामने आया हे कि बच्चा स्कूल मे १०४० घण्टे बिताता है जबकि वह टी वी देखने मे १२०० घण्टे व्यतीत करता है।

अनेक अलाभ

यह केवल पढाइ का ही नुकसान नही हे अपितु उनके स्वास्थ्य के लिए भी खतरनाक होता है। उससे आखो म दर्द, जलन, सिरदर्द, चिडचिडापन, गुस्सा, तनाव आदि शिकायत हाती हे। नेत्र रागो की वृद्धि म तो टेलीविजन की अहम् भूमिका हे। साधारणतया आठ फुट की दूरी के बिना टेलीविजन देखना तो आखो को खराब करने का सरल तरीका है। अब जब घरो म इतनी जगह ही नहीं होती तो बच्चे केसे इतनी दूरी रख सकते है। फिर बच्चो म उत्सुकता भी कम नहीं रहती। बडा के देखा-देख नादान बच्चे भी इस उत्सुकता से बच नहीं पाते। भले ही वे टी वी का अथ समझते हो या नही पर उसका बटन दबाना तो अवश्य सीख जाने हे। बडे बच्चे भी रोमाचक तथा मनोरजक कार्यक्रम का इतना एकटक देखते है कि उससे आखो पर अतिरिक्त तनाव आता है। दुबलता व अत्यधिक दबाव के कारण नेत्र गोलका का आकार बिगड जाता है।

दिल्ली में सक्रिय आजादी बचाओ आन्दोलन एव फोरम ऑफ पब्लिक स्कूल के कई शिक्षक-शिक्षिकाआ के अनुभव है कि टेलीविजन पर अश्लील एव बतुक कार्यक्रम दिखाए जाने से बच्चे पहले की अपेक्षा अब ज्यादा शिथिल एव थके हुए लगते ह। देर तक फिल्म देखने के कारण वे देरी

से सोते हे अत स्कूल मे सिरदद तथा नीद उन्ह सताने लगती हे। वीभत्स दृश्यो के कारण वच्चे सहज ही एक दहशत से भर जाते हे। उन्ह स्वप्न भी वेसे ही सपने आने लगत हे। इससे अपच, कब्ज तथा एसीडीटी आदि वीमारिया भी उन्हे घेर लेती हे।

सवस वडी वात तो मानसिक स्वास्थ्य की ह। आज जिस तरह आतकपूर्ण, हिसक तथा अश्लील दृश्य दिखाए जाते ह उससे उनका पूरा चरित्र ही विघटित हो जाता हे। ऐस उदाहरणा की कोइ कमी नही हे कि जिनसे टी वी सिरीयल या फिल्मी दृश्य दखकर गभीर अपराध किए जा रहे ह।

सोन्दर्य आक्रामक न वने

नग्न तो भगवान महावीर भी थे। उनका शरीर सोन्दय भी कम नही था। उनके अग-अग से सोन्दर्य टपकता था। पर उनकी नग्नता म भी सयम का संदेश था। आज आधुनिकता के नाम पर अर्धनग्नता का जो दोर दिखाई दे रहा हे उसमे वासना का जहर घुला हुआ हे। कपडो से भी नग्नता टपकती दिखाई देती हे। यह सही हे कि वासना दृश्य म नही दृष्टा मे होती हे। पर आज जेसा पहनावा आम होता जा रहा हे, उसमे सहजता, सयम ओर सुरुचिता नही दिखाई देती। यह सस्ती लोकप्रियता एव रुग्ण मानसिकता का परिचायक हे। आज आम शिकायत है कि अभद्रता की घटनाओ मे बेतहाशा वृद्धि हो रही हे। पर क्या इसमे अर्धनग्नता तथा अग प्रदर्शन का कोइ हाथ नहीं हे? क्लवो, डिस्को तथा ऐसे न जाने केसे-कसे स्थाना की वात छोड भी दें धम स्थानो की शालीनता को भी चुनोती मिल जाती ह।

विज्ञापन की वीमारी

यह सही ह कि प्रचार-तत्र आज जितना नशीला हो गया हे वह वहुत चितनीय वात हे। देह चर्चा वाली सिनेमाओ, पत्र पत्रिकाओ को जाने भी दे, आज ता सामान्य पत्र-पत्रिकाओ मे भी जो सामग्री परोसी जा रही हे उसे देखकर सभ्य आदमी को सकोच हाता ह। दूरदशन की तो खेर माया ही अलग है। पेसे के खातिर वह कहा-कहा तक पहुच

जाता हे इसकी कल्पना चोकाने वाली हे। अच्छी-अच्छी कम्पनिया भी अपने विज्ञापनो के लिए जिस तरह भोगवाद को तर्क ओर तरजीह दे रही हे उसका परिणाम समूची पीढी को भोगना पड रहा हे। सचमुच आजादी के नाम पर जिस तरह की अपसस्कृति पनप रही हे वह वहुत घातक हे।

सोन्दर्य प्रतियोगिताए

सोन्दय प्रतियोगिताओ को आज जिस तरह वाजार वनाया जा रहा ह तथा उसमे रूपगर्विता ओरत जिस तरह विक रही ह उसका सबसे ज्यादा नुकसान ओरतो को उठाना पड रहा हे। फेन्सी ड्रेस तथा सास्कृतिक मेलो के नाम पर भी आज जिस तरह मीठा जहर वयस्क-अवयस्क वच्चो के हलक के नीचे उतारा जा रहा है उसस लगता हे सयम ओर शर्म के वाध तडातड टूट रहे हे। आज तो आम सडके ही जेसे प्रदर्शन मच वन गइ हे। व शोरूम वन गइ हे।

कुछ लोगो का तर्क हे हमारे पास सोन्दर्य हे ता हम क्यो न उसका इजहार करे। पर सवाल एक व्यक्ति का नही हे। कुछ लोगो की सोन्दर्य लिप्सा पूरी समाज-व्यवस्था को चुनोती वना रही हे। सोन्दय तो अपने आप छलकता ह। यह चुभने वाला नही होता। जो सोन्दय दिखावा वनता हे वह सकटा का आमत्रण हे। फेशन ओर कला के नाम पर न केवल आथिक कठिनाइया ही वढती ह अपितु उससे सास्कृतिक प्रदूषण भी वढता हे। वहुत वार ता कपडा क कारण चलने फिरने की स्वतत्रता ही छिन्न जाती हे। कभी-कभी तो कपडे शरीर को काटने वाले भी वन जाते ह। कभी-कभी तो इतने कपडे पहने जाते हे जेसे वस्त्रो का कोई पिरामिड ही सामने खडा हो गया ह। कभी-कभी इतने तग कपडे पहने जाते हे जेसे काइ मीनार ही खडी है। ऐसी पोशाक मे चलना-फिरना भी सुविधाजनक कसे रह सकता हे।

फेशल का भूत

यह फेशल का ही कमाल हे कि नये कपडो को फाड-फाडकर उन्ह जोड-जोडकर पहना जाता हे। फेशन के मारे लोग अपन शरीर की

फिटनेस को भी ताक पर रख देते है। भला! वह क्या गहना जो कान को भी काटे? वह क्या कपडा जा व्यक्ति के शरीर क लिए तकलीफ-देह हो। आज एक फेशन है तो कल दूसरा फेशन हे। इस तरह कपडा तथा अन्य चीजा का इतना ढेर लग जाता हे कि पूरा घर ही कबाडखाना वन जाता हे।

हो सकता हे कुछ वच्चे अपने अज्ञान के कारण ऐसी राहा पर चल पडते हो जो उनको भटका देती ह। पर जव अभिभावक ही भटके हुए हा ता वच्चा का मार्ग दशक कोन होगा? वहुत वार अभिभावक *अपनी असमर्थता जताते हे कि वे क्या कर? हजार बार कहो तो भी* बच्चे मानते ही नही। आजकल वातावरण ही ऐसा हो गया हे कि ज्यादा कहे तो वच्चे विफर जाते हे। कही-कहीं तो वच्चे घ‌र से ही भाग खडे होते हे। पर यह नोवत तभी आती हे जव अभिभावक प्रारभ से ही सजग नही होते। सजग एव शालीन परिवारो के वच्चे ओछी हरकते नही करत। अभिभावक ही अपने आप पर कावू न रख पाये तो वच्चो का क्या दोप?

परिणाम तो आयेगे ही

कइ वार विवाह शादी का तक भी परिवार के लोगो को अपने वच्चो को आकर्पक रूप म प्रस्तुत करन का अपना आधार वना लेता हे। ओर उनको नुमायशी परेड के रूप मे उतार देता ह। पर इसका खामियाजा भी आखिर उन्ह ही भुगतना पडता ह। प्रदर्शन प्रिय वच्चे कभी भी शालीन एव जिम्मेदार परिवार की इकाइ नही वन सकते। भले ही एक वार वे अपने आपको अलग रूप मे दिखा सकते हो, पर वे सास्कृतिक मूल्यो को परम्परित नहीं बना सकते। वे अपन पर इतन केन्द्रित हो जाते हे *कि न कवल परिवार की आर्थिक स्थिति को ही* रुग्ण वनाते ह अपितु आचार-विचार म भी सद्‌गुणा को प्राथमिकता नही दे सकते। जहा गुणो का आकलन न होकर केवल देह दृष्टि ही सम्वन्धो का आधार बन जाती हे वहा किसी शुभ परिणाम की कल्पना ही कसे की जा सकती है?

यह ठीक हे कि आदमी समाज मे रहता हे तो उसे सलीके के कपडे भी पहनने पडते हे। पर कपडे आदमी के व्यक्तित्व एव उसकी सुरुचि को उद्दीपन करने वाले होने चाहिए न कि तडक-भडक वाले। अधिक कीमती कपडे भी समाज मे एक प्रकार का असतुलन पेदा करत है। ऐसे लोगो को कभी-कभी चोरा-डकेता से भी आमना-सामना करना पड सकता हे।

अपनी क्षमताओ को पहचाने

मनुष्य महान् है। उसकी महत्ता उसमे स्वय म ही छिपी हुई है। कोई दूसरा आदमी किसी को महान् नही वना सकता। वह स्वय ही अपने अन्दर सोई हुई महत्ता को जगा सकता है। यह ठीक हे दूसरे भी हमारा सहयोग कर सकते है, पर वीज मे फलदान की अपनी ही क्षमता होती है। कोई भी वीज से अपनी महत्ता को नही छीन सकता। परिस्थितियो का निर्माता तो मनुष्य स्वय ही होता हे। जिस मनुष्य मे पोरुप होता है वह कठिन से कठिन परिस्थिति को भी अपने अनुरूप ढाल लेता है।

फेनी हर्स्ट दुनिया की सफलतम लेखिका मानी जाती हे। पर उसे यह सफलता यकायक नहीं मिली। अपनी पहली रचना छपवाने के लिए उसे वडा परिश्रम करना पडा। आजीविका तथा प्रसिद्धि प्राप्त करने के लिए लेखन को अपना पेशा वनाकर जव वह न्यूयार्क मे आई तो अपना पहला लेख छपवाने के लिए उसे उसको छत्तीस वार लिखना पडा। पर उसने हार नही मानी। जव भी रचना लोट कर आती तो वह उसे ओर अधिक सवारने मे लग जाती। आखिर सेंतीसवी वार उसे सफलता मिली ओर वह सफलता ऐसी सफलता थी कि उसे फिर कभी लोट कर नहीं देखना पडा।

फेनी हर्स्ट की ही तरह दुनिया मे हर आदमी म असख्य सभावनाए छिपी पडी है। पर उन सभावनाओ को समझ पाना ओर तद्नुरूप पुरुपार्थ करने वाला व्यक्ति ही अपना गौरव वढा सकता हे। कोई भी सफलता सामने चल कर नही आती। आदमी को ही चलकर उस तक पहुचना पडता है।

सभल कर चलने के कुछ सूत्र इस प्रकार हो सकते हे--

सौहार्द

सबके प्रति मित्रता के भाव। वास्तव मे तो सौहार्द दूसरे के प्रति नही अपितु अपने प्रति ही होता है। सुहृद् व्यक्ति हमेशा प्रसन्नचित्त रहता है। प्रसन्नचित्तता म ही अन्य गुणो का अवतरण होता है। जो आदमी दूसरो के प्रति अहित चिन्तन करता है, उससे दूसरो का अनिष्ट तो हो या न हो पर अपना अनिष्ट तो हो ही जाता है। सुहृद व्यक्ति स्वय म सतुष्ट रहता है। ऐसे व्यक्ति ही वास्तव मे समाज और राष्ट्र के श्रृगार होते है। उनका निश्छल व्यवहार सबको अपने प्रति आकृष्ट कर लेता है।

सहिष्णुता

प्रतिकूल परिस्थितियो मे भी अविचल भाव। यह सभव नहीं है कि जीवन मे मधुरता ही मधुरता हो। नही चाहते हुए भी बहुत बार आदमी को कटुता से पाला पड ही जाता है। ऐसे क्षणो म यदि आदमी की सहिष्णुता का बाध टूट जाता हे तो बहुत बडा अनर्थ घटित हो जाता है। असहिष्णु आदमी बहुत बार प्रियता को भी आक्रमण मान लेता हे। दूसरा को सहना सचमुच मे बहुत बडी साधना हे। थोडी-सी असहिष्णुता से भी कई बार बहुत बड़े साम्प्रदायिक दगे भडक उठते हे।

सन्तुलन

जीवन एक बहुत पतली डोर है। हर आदमी को उस पर से बहुत सभल कर गुजरना पडता है। थोड़ा,सा सतुलन बिगडते ही न केवल वह स्वय ही धडाम से गिर पडता हे अपितु दूसरो को भी नुकसान पहुचा सकता है। कभी-कभी आविष्ट होकर आदमी अपनी सीमा को भूल जाता है। उसका एक असतुलित नारा ही सारे वातावरण मे इतना जहर घोल देता हे कि उसका प्रतिफल पूरे समाज को भोगना पडता है।

समन्वय

सत्य एक और अखण्ड है, पर उस तक पहुचने के माग अनेक हो सकते है। प्रस्थान का भेद ही पथ भेद है। एसी स्थिति म उनकी सापेक्षता को समझना वहुत जरूरी है। यही समन्वय है। समन्वय का अर्थ यह नहीं है कि आदमी अपनी मौलिकता को खो दे। अपनी मौलिकता को समझते हुए दूसरो की मौलिकता का आदर ही समन्वय हे। सापेक्षता की समझ ही सत्य की सही समझ है। इससे आग्रह अपने आप क्षीण पड जाते है। जिस व्यक्ति के विचार मे सापेक्षता का सूरज उग जाता है उसका स्वय का अधकार तो नष्ट हो ही जाता है पर वह जहा भी जाता है वहा प्रकाश-रश्मिया विखेर देता है।

सहयोग

आदमी एक सामाजिक प्राणी है। उसे अपना अस्तित्व वनाये रखने के लिए दूसरो का सहयोग नितान्त अपेक्षित ह। जव वह दूसरो से सहयोग चाहता हे तो उसे दूसरो का सहयोग भी करना आवश्यक हे। परस्परता का यह सूत्र ही आदमी को आगे वढाता हे। जो आदमी स्वार्थ से ऊपर उठता है वही परमार्थ की ओर प्रयाण कर सकता हे। परमार्थ एक चरम विन्दु हे। वहा तक पहुचने के लिए परस्परार्थता को एक साधन वनाया जा सकता है।

परिस्थितिया तो हर आदमी के सामने होती ह। पर जो विकट परिस्थितियो मे भी अपना सतुलन नही खोता वह आदमी अपने जीवन मे सफल हा जाता है।

कलेक्टर अपने कार्यालय मे वेठे हुए थे। इतने मे वायरलेस वुदवुदाया। एक पुलिस अधिकारी वोल रहा था—सर' वाजार से एक जुलुस गुजर रहा हे। वडी भारी भीड हे। वह कलेक्ट्रीयेट की ओर वढ रही हे। लोगो मे भारी आक्रोश उत्तेजना हे। जोर-जोर से नारे लगाये जा रहे हे। इस वात का अंदेशा है कि वे हिंसा पर उतारु हो जाए। अत आप आदेश दे कि क्या हम इनको यही रोक ले?

यो कलेक्टर के लिए ऐसी घटनाए नई नही होती। आये दिन

ऐसा होता रहता हे। पर पुलिस अधिकारी इतनी व्यग्रता से बोल रहा था कि कलेक्टर को थोडा सोचना पडा। फिर उत्तर दिया--मे जब तक नया आदेश न दू तब तक जुलूस को रोको मत आने दो।

पुलिस अधिकारी हेरान था, पर कर भी क्या सकता था। जुलूस धीरे-धीरे आगे सरकता गया। कुछ नये लोग ओर उसके साथ जुडते गए। आक्रोश-उत्तेजना भी बढती जा रही थी।

उसी समय कलेक्टर ने अपने एक विश्वस्त आदमी को बुलाया ओर स्थिति का जायजा लेने के लिए उसे मोके पर भेजा। वह तत्काल वहा पहुचा ओर सारी स्थिति का अध्ययन कर लोटा। वह शात भाव से बोला--पुलिस अफसर ने जो बात कही हे वह सही हे। भीड बडी उग्र हे। जोर-जोर से नारे लगा रही हे तथा कलेक्ट्रीयोट की ओर बढ रही हे।

ओर कोई विशेष बात? कलेक्टर ने खोद कर पूछा। उसने कहा--ओर तो कोई बात नही है, पर गर्मी बहुत बड रही हे। लोग पसीने से लथपथ हो रहे ह। जोर-जोर से चिल्लाने के कारण सब के गले सूख रहे हे।

इस नई बात ने कलेक्टर को एक नया सूत्र थमा दिया। उसने तत्काल अपने कर्मचारियो को आदेश दिया कि फटाफट कलेक्ट्रीयोट के पास ठडे पानी का बन्दोबस्त किया जाए, ऐसा ही हुआ। थोडी देर मे उफनती हुई भीड आइ। ठडे पानी को देख कर लोग उस पर पिल पडे। ठड पानी ने उनके विरोध को शात कर दिया ओर विरोध करने आया जुलूस कलेक्टर को धन्यवाद करता हुआ लोट गया।

इसी जगह यदि कलेक्टर सख्ती से काम लेता तो शायद भीड बेकाबू हो जाती। पर उसकी सूझबूझ पूण शात वृत्ति न तत्काल विरोध को खत्म कर दिया।

हर मनुष्य के जीवन मे अनेक बार ऐसे क्षण आते हे। यदि वह सूझबूझ से काम ले तो वह हर परिस्थिति को अपने अनुकूल बनाकर अपने जीवन को सार्थक बना सकता है।

सत शिरोमणि अणुव्रत प्रवर्तक आचार्यश्री तुलसी

देश के आध्यात्मिक क्षितिज पर जो सत शिरोमणि नर-नखत अपनी तेजोमय आभा से दमके उनमे अणुव्रत प्रवर्तक श्री तुलसी भी एक महान् सत थे। यद्यपि श्री तुलसी जेन धर्म-तेरापथ के शीर्ष-सत थे पर अपने व्यापक दृष्टिकोण के कारण आपने अणुव्रत अनुशास्ता के रूप मे अपना एक असाम्प्रदायिक आभावलय वनाया। वे ऐसे सत नही थे जो गिरी-कन्दराओ मे वेठकर एकातवास का लाभ उठाय, अपितु वे ऐसे सत थे जो जनना मे रहकर एकान्त का आनद ले सकते थे। वे ऐसे सत थे जिनका कर्म अकर्म से प्रसूत होता था। वे ऐसे सत थे जो महान यायावर होते हुए भी आत्मस्थ थे। वे एक ऐसे अकिचन सत थे जिनके चरणा मे वेभव लुटा करता था।

आज अध्यात्म जहा साम्प्रदायिक घेरो मे वद होकर निस्तेज हो रहा हे वहा सत तुलसी ने उसे अणुव्रत रूप मे मानव धम बनाकर एक नया आयाम प्रदान किया। आज हर आदमी धामिक तो हे पर उसकी धामिकता नेतिकता से प्रतिवद्ध नही हे। इसी को लक्ष्य कर उन्होने कहा था—

धार्मिक है पर नही कि नैतिक वहुत वडा विस्मय हे,
नेतिकता से शून्य धर्म का यह केसा अभिनय हे ।
इस उलझन का धर्म-क्रान्ति ही हे कमनीय किनारा,
वदले युग की धारा ॥

सचमुच अणुव्रत ने देश मे एक नया वातावरण वनाया। यद्यपि श्री तुलसी जेन धर्म के ऊर्जा सम्पन्न सम्प्रदाय तेरापथ के नवम आचार्य थ, पर अणुव्रत के रूप मे एक निर्विशेषित आन्दोलन के विस्तार

के लिये उन्होने अपने आचार्य पद का भी विसजन कर दिया।

जैन विश्व भारती मान्य विश्वविद्यालय के रूप मे श्री तुलसी ने जन धम ओर तेरापथ को तो अनेक अगम ऊचाईया प्रदान की, पर उन्होने मानव-जाति की भलाई के लिए भी महत्त्वपूर्ण कार्य किया। आपन न केवल साठ हजार किलोमीटर की पूरे भारत की पद-परिक्रमा ही की अपितु पजाव समस्या को सुलझाने के लिए राजीव लोगोवाल समझोते के लिए भी विशेप भूमिका निभाई। राप्ट्रीय एकता को मजवूत वनाने के लिए ही उन्हे इन्दिरा गाधी राप्ट्रीय एकता पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

सत श्री तुलसी एक महान साधक थे। उनकी साधना से ही प्रेक्षाध्यान का उद्भव हुआ, जिससे आज राप्ट्र ही नही विदेशी लोग भी लाभान्वित हो रहे ह।

शिक्षा के क्षेत्र म जीवन विज्ञान के रूप मे उन्होने एक नया मील का पत्थर रोपा। आज जवकि शिक्षा मात्र वाद्धिक विकास की वाहक वनकर रह गयी हे श्री तुलसी ने उसमे जीवन विज्ञान की कलम लगाकर उसे भावात्मक विकास की दिशा मे पस्थित किया।

श्री तुलसी एक महान साहित्यकार भी थे। राजस्थानी के तो वे एक माहिर कवि थे ही, सस्कृत तथा हिन्दी की भी कुल मिलाकर उनकी सो से अधिक पुस्तक प्रकाशित हो गई है। सचमुच श्री तुलसी एक एसा व्यक्तित्व था जिसम अनेक सस्थाए समाहित हो सकती हे। सात सो से अधिक प्रतिभा-सम्पन्न सत-साध्वियो तथा लाखो-लाखो लोगो के आराध्य श्री तुलसी मानवता क मसीहा के रूप मे जन-जन के अभिवन्द्य वन गए हे।

आज देश म ऐस आदमी की तीव्र आवश्यकता महसूस की जा रही हे जिसकी वात पर सब लोग ध्यान दे सके। गाधी एक ऐसा आदमी था जिसकी वात पर सभी लोग ध्यान देते थे। भल ही अतिम दिनो मे वे अपने आपको निर्वल महसूस करने लगे थे। आज भी कुछ लोग अपने तुच्छ स्वार्थो के लिए गाधी को अस्वीकार करते ह, पर गाधी ने जिस तरह का अविभक्त जीवन जीया था

उसे अस्वीकार नही किया जा सकता। एक ओर उसने पिछड लोगो तथा श्रम को प्रतिष्ठित करने के लिए अपने आपको दरिद्रनारायण ओर श्रमशील वना लिया था तो दूसरी ओर अहिसा के लिए अपने आपको समर्पित कर दिया था। साम्प्रदायिक सद्भाव के लिए तो उन्होने अनेक वार अपने प्राणो की वाजी लगा दी थी। यद्यपि गाधी के रोम-रोम मे हिन्दुत्व वसा हुआ था, उनका अन्तिम शव्द-स्मरण भी 'राम' ही था, पर उन्होने मुसलमानो को भी पूण आदर दिया। भले ही हिन्दु और मुसलमान दोनो ही गाधी को सही रूप मे न समझे हो पर साम्प्रदायिकता की खाई को पाटने के लिए उन्होने जो पुरुपार्थ किया था वह अपूर्व था। उन्होने अग्रेजो के साथ सद्व्यवहार कर न केवल देश को आजाद कराने मे मुख्य भूमिका निभाई अपितु विरोधी हिता मे समन्वय साधने का नया गुर भी दिया। राजनीति को धम की मोलिकता से जोडकर उन्होने एक नया समीकरण वनाया।

गाधी के वाद विनोवा आय, कुछ ओर लोग भी आये जिन्होने न केवल गाधी को अपने मे जीया अपितु उस पृष्ठभूमि पर कुछ नये अकुर भी खडे किये। पर धीरे-धीरे सभी महारथी चले गए।

ऐसी स्थिति मे अणुव्रत अनुशास्ता श्री तुलसी का चेहरा हमारे सामने आता हे। गाधी पर महात्मापन कव सवार हो गया इसका पता शायद उनको भी न लगा। यदि रवीन्द्रनाथ इस ओर इगित नही करते तो न जाने गाधी महात्मा वनता या नही। विनोवा ने भी शायद विधिवत सन्यास नही लिया। श्री तुलसी ने विधिवत् सन्यास लिया। न केवल सन्यास ही लिया अपितु एक सम्प्रदाय के आचार्य भी रहे। यद्यपि उन्हाने अपना आचार्यत्व महाप्रज्ञ को ओढा कर स्वय को उस पद से मुक्त कर लिया, पर तुलसी यह नही कहते थे कि सम्प्रदाय नहीं रहने चाहिए। उनका कहना था सम्प्रदाय तो रहेगे, पर हम अनेकात, सापेक्ष दृष्टि से सम्प्रदायो के सत्य को समझना हे। हर शव्द एक सम्प्रदाय है। यदि उसे सापेक्ष दृष्टि से नही देखा समझा गया तो वह लडाई का हथियार वने विना नही रह सकता। उन्होने सम्प्रदाय से ऊपर उठकर मानवता की सेवा के लिए अणुव्रत

का सस्कार दिया। अभी थोडे दिनो पहले अणुव्रत की वात सुनकर मोलाना वाहिदुदीन ने कहा था—'खुदा आप मे गाधी को बुलवा रहा हे।' उनके जीवन-माना को समझकर जयप्रकाश नारायण ने एक प्रसग पर कहा था—'अहिसा मे विनिमय नही होता। ऐसा या तो महात्मा गाधी कर सकने थे, या आप कर सकते हे।' मे यह वाते किसी व्यक्ति को महिमा मडित करने के लिए नही कर रहा हू पर अहिसा की दृष्टि से आधी शताब्दी मे अणुव्रत के रूप मे जो कार्य किया गया उसका मूल्याकन अवश्य होना चाहिए। भारत मे धर्मगुरुओ की कमी नही हे। पर ऐसा व्यक्ति दूसरा कोन हे जिसकी वात पर लोगो का ध्यान टिकता है। धर्म या तो क्रियाकाण्ड मे उलझ गए हे या फिर मन्दिर, मस्जिद, स्थानक, सभा-भवनो मे। असल मे मनुष्य पर विचार की सकीर्णता इस तरह सवार हो गई है कि वह किसी न किसी विचारधारा मे उलझा हुआ हे। कोई धर्म सम्प्रदाय मे उलझा हुआ हे तो काइ पार्टीवाद के दलदल मे फसा हुआ हे। यह सभव नही हे कि मनुष्य विचार मुक्त हो जाए। आचार्य तुलसी भी एक धम विशेप के अनुयायी थे, पर उनकी जो विशेपता थी वह यही कि उनकी दृष्टि अनेकात पर टिकी हुई थी। अनेकात का अर्थ हे विरोधी दृष्टि का भी स्वीकार। हर विचार मे सत्य का अश हे। जव दृष्टि की यह सापेक्षता मिट जाती हे तो अनेकात दृष्टि भी खो जाती हे। उसी से व्यक्ति आग्रही वन जाता है। आचार्य तुलसी ने इस अनेकात दृष्टि को अपन जीवन मे उतारा। इसीलिए वे साम्पदायिकता से बच कर सभी धामिको के साथ मेत्री साध सके। वे राजनैतिक पार्टीवाद को भी नही मानते थे। इसीलिए सभी पार्टियो के लोग उनके पास आते थे। उनकी बात सुनते थे व मानते थे।

अणुव्रत अनुशास्ता आचार्यश्री महाप्रज्ञ

अणुव्रत को प्रारभ हुए पचास वर्ष हो गए। पचास वर्षों का समय वहुत कम नहीं है, तो वहुत ज्यादा भी नहीं है। सस्कारो क निर्माण मे शताब्दियो का जोड-तोड़ रहता है। कुछ लोग कहेगे अणुव्रत ने वहुत काम किया है। कुछ लोग कहेगे कुछ भी नहीं किया है। दोनो ही अपेक्षा—वचन है, सत्य हे। ५० वर्षो तक नैतिकता की आवाज को मुखर रखना भी अपने आप म एक उपलब्धि है। पर जो कार्य होना चाहिये उस अपेक्षा म बहुत करना शेप हे, इसमे भी दो मत नही हो सकते। सन्तोष केवल इसी वात का हे कि अणुव्रत के आलोक-स्तम्भ अनुशास्ता आचाय तुलसी के वाद उनके उत्तराधिकारी श्री महाप्रज्ञजी का आत्म विश्वास भी अकम्प हे। आजादी के वाद इन पिछले ५० वर्षो मे नैतिकता की अपेक्षा को वहुत तीव्रता से अनुभव किया जाता रहा हे। वल्कि हर क्षण उसकी सम्भावनाओ को नये क्षितिज प्राप्त होते रहे ह। अणुव्रत अनुशास्ता स्वय एक सन्त पुरुप है, अत आशा-निराशा उन्हे नही व्यापती। ऐसा नही हे कि आन्दोलन मे उतार-चढाव क कोई क्षण नही आये हो, पर उन क्षणो मे भी आत्म विश्वास की एक ऐसी एकसूत्रता रही हे जिससे राष्ट्र के सभी लोगो का इस पर विश्वास जमा रहा।

अणुव्रत की ओर देखने का एक महत्त्वपूर्ण कारण यह भी हे कि आज राजनीति जीवन पर इतनी हावी हो गई हे कि उससे न केवल वर्तमान मे ही पग-पग पर परेशानिया अनुभव हो रही हे अपितु राष्ट्र का भविष्य भी धुधला गया ह। आजादी के समय महात्मा गाधी थे, विनोबा भावे थे, आचार्य तुलसी थे ओर भी न जाने कितने

त्यागी-बलिदानी लोग थे, पर धीरे-धीरे वे सारे नक्षत्र अस्त हो गये। आज आचाय महाप्रज्ञ पर लागा की नजर टिकती है। कारण इसका यही ह कि आचायश्री तुलसी क समान महाप्रज्ञ भी एक सन्त पुरुप ह। सामान्य सासारिक आदमी का आपसी रिश्ते बाधते है, पर आचायश्री न सार रिश्ता के सूत्रा का काटकर सन्यास का पथ अपना लिया है। यद्यपि देश मे आज सन्यासिया की कमी नही है। पर जव सन्यास मन्दिर-मस्जिद म उलझ जाता हे ता वही राग-द्वेप उसे घेर लेता हे जो एक सामान्य गृहस्थ को अपने परिवार क लिए घेरता रहता ह। आचायश्री ने सन्यासी के लिए 'वसुधेव कुटुम्बकम्' के रूप को उजागर किया है। इसीलिए लागा को उनम कुछ सम्भावनाए नजर आती है।

यह सही है कि वहुत लोग अणुव्रत क साथ नही आयग। अणुव्रत के साथ ता व ही आयेगे जिनकी नतिकता स प्रतिवद्धता ह। पर आवश्यकता तो इस वात की है कि जो भी लोग आये व इस प्रतिवद्धता से जुडकर आय। अणुव्रत कोई दिखावा नही ह। यह सही ह कि कुछ भावुकताआ का भी वहा जमाव हागा। पर अणुव्रत कायकताआ को अत्यन्त कौशल से भी भावुकताआ को माग दिखाना हे। राष्ट्र ओर जगत के सामने आज समस्याआ क अनेक अलघ्य पर्वत खडे हे। उन्ह लाघना वहुत कठिन है। ऐसा नही है कि अणुव्रत आन्दोलन एक जादू हे और वह राष्ट्र की नया को भवर जाल से मुक्त करा लेगा। हालांकि यह भावना गलत नही ह। पर आज जेसी परिस्थितिया हे उनम अणुव्रत तो क्या भगवान स्वय भी आ जाये तो भी कहा तक सफल होगे यह नही कहा जा सकता। स्वार्थ ने लोगा का इतना अन्धा वना दिया ह कि व सत्य को देखना ही नही चाहते। पर यही वह क्षण ह जव अणुव्रत अपने पुरुपार्थ को उदीप्त करता हे। समस्याए जव आदमी के पुरुपार्थ की आच को मद कर देती ह तव अन्धेरा आर भी अधिक गहरा जाता हे। इसीलिए अणुव्रत उन लोगा को अपनी ओर आकर्पित करता हे जो वास्तव मे समस्याओ का समाधान के प्रकाश की राह दिखाना चाहते हें।

अणुव्रत उन सव निष्ठाशील कायकताओ को भी आमन्त्रित करता हे जो एक नये सवेरे को धरती पर उतारने के लिए उत्सुक है। इसम कोई शक नही हे कि—

मोसम खराव हे ओर हम दूर जाना हे,
रास्ता विकट हे ओर साथी दल भी अजाना हे
पर हमे डर किस वात का जव कि
हमारे पास विश्वास का अटूट खजाना हे

उन सव लोगो को अणुव्रत का आह्वान हे। इस यज्ञ मे अपनी ओर से जो भी आहुति दी जा सके देने की तेयारी कर। आचार्यश्री महाप्रज्ञ जेसा मागद्रष्टा हमारे साथ हे। हम उस नेतृत्व को मजवूत करे ओर निमाण की दिशा मे आगे वढे। आज ऐसे लोगा की वहुत वडी आवश्यकता हे जो न केवल इस सम्यग्-दर्शन को ही प्राप्त करे अपितु सम्यग्-चरित्र से भी अपने आपको भावित कर।

अणुव्रत वतमान की समस्याओ का सटीक उत्तर हे। सम्प्रदाय के लोगो को सम्प्रदाय से ऊपर उठकर सोचने की आवश्यकता हे। सम्प्रदाय से घवराने वाले लागा को सम्प्रदाय की धारणा को समझने की आवश्यकता हे। वास्तव म सम्प्रदाय मे असम्प्रदाय की धारणा ही अणुव्रत हे। आवश्यकता हे एक सहगामित्व की। यह आवाज अशेष लोगो तक पहुचे यही अपेक्षा हे।

अपराधो का उपचार–प्रेक्षाध्यान

आजपूरी दुनिया म अपराध वढ रहे ह। इसके कइ कारण हो सकत ह, पर एक वडा कारण हे अध्यात्म से अपरिचय। यद्यपि सम्प्रदायो की सख्या कम नही ह, पर आदमी आध्यात्मिक नहीं हे। जेले अपराधियो से भरी पडी हे। अणुव्रत इस तथ्य से सदा जागरूक रहा हे, इसलिए यह निरतर अपना असाम्प्रदायिक अध्यात्मिक संदेश कारागृहा तक भी पहुचाता रहा हे। हर वप अनेक जेलो मे अणुव्रत तथा प्रेक्षाध्यान का कायक्रम होता रहता ह। उसके वहुत अच्छे परिणाम सामने आते रहे है।

अभी समणी परमप्रज्ञाजी ने शहीद खुदीराम वोस केन्द्रीय कारागृह मुजफ्फरपुर म कदिया के वीच एक कार्यक्रम दिया। केदियो पर उनका इतना गहरा प्रभाव पडा उसका एक विस्तृत विवेचन हे। केवल चुने हुए कैदियो क कुछ अनुभवो को यहा प्रस्तुत किया जा रहा हे।

एक वर्प से सजा भुगत रहे श्री जगतनाथ पंडित कहते हे–मै आपके द्वारा कायान्वित ध्यान सत्र म प्राप्त किया गया विचार का वणन कर रहा हू। इस साधना से जो उपलब्धि होने वाली हे वह अकथनीय हे। मानव प्रकृति प्रदत्त पच इन्द्रिय प्राणी हे। जगत का निर्माण मानव के सुकर्मो एव विनाश मानव के दुप्कर्मो से ही होता हे ओर हम मानव के सत्व गुणो का विकास आपके सत सगत से ही हो सकता हे।

कायक्रम क शुरू मे जो ध्यान किया हे, उससे शारीरिक व

मानसिक शान्ति को प्राप्त किया हे। हमने विभिन्न लेश्याओ की ज्योति को आज्ञा-चक्र या भू-मध्य पर अवलोकण करने का प्रयास किया। मे अणुव्रत के ग्यारह नियमो मे कुछ का तो पूर्ण रूप से पालन करता हू। वचे कुछ की प्रेरणा आपसे मिली जो कल्याणकारी हे। कायोत्सग को कर हमने सुख का अनुभव किया ह। मेने कायोत्सर्ग को शान्ति, निश्चितता ओर रोग मुक्ति की उत्तम अनुभूति पाया। आपके सगीत तो हृदय को छूते हे। उससे धेय वधता हे। सासारिक को पहचानता हू। जन्म मृत्यु रूपी इश्वरीय लीला का पूर्ण ज्ञान प्राप्त होता हे। उसे याद कर मे मोह के वन्धन को तोड सकता हू। आपका ज्ञान सात्विक भावना को प्रेरित कर श्रेष्ठ मानव वनाने वाला हे।

अपने अनुभव क्रम मे श्री अवधेशकुमार—म करीवन १२ महीनो से इस कारागृह मे वन्द हू। इस १२ मास की अवधि मे काफी तनाव एव चिन्ता ग्रस्त था। लेकिन आपके द्वारा दी गयी शिक्षा से काफी लाभान्वित हुआ हू। आपके द्वारा दी गई शिक्षा एव उपदेश से म समझ गया हू कि यह मेरा असली आश्रय नही हे। इसमे मुझे लिप्त नही होना चाहिए। मेरा असली घर वही हे जहा से मे आया हू। यहा मुझे कुछ करने के लिए भेजा हे। आपके द्वारा जो मुझे ज्ञान मिला उसका वर्णन नही किया जा सकता। आपने जो प्रेक्षाध्यान एव महाप्राण ध्वनि करवायी वह भी अपने आप म मिसाल हे। इससे मुझे काफी लाभ मिला ह। महाप्राण ध्वनि करन स मन मे जा विकार उत्पन्न होता था वह दूर हो गया एव चिता मुक्त हो रहा हू। महाप्राण ध्वनि करने से तनाव एव चिता मुक्त हो जाती हे। इसके साथ-साथ शरीर के कुछ 'ओरगस का व्यायाम भी हा जाता ह। इन जजीरो से हटने के लिए आपने मुझ अच्छा ओजार दिया हे, इस ओजार के द्वारा म सफल सयमी बन सकता हू यह ओजार हे—प्रेक्षाध्यान पद्धति। शारीरिक मानसिक एव भावनात्मक तनाव केसे दूर कर सकता हू, इसकी भी जानकारी आपके द्वारा मिली।

श्री रामचन्द्र यादव का अनुभव ह—हम जोर देकर माग करेगे कि सर्वोपरिस्थान जेन साध्वी का प्रवचन स्थायी किया जाए तो स्वास्थ्य

एव त्याग क लिय अकाट्य तक प्रस्तुत करती हे। जो समस्त जन को स्वाम्थ्य हो या अस्वस्थ सवके लिए ततृवछन लाभदायक सिद्ध सावित हाता हे।

श्री सजयकुमार वताते हे—तकरीवन ३० महीना हो गया ओग म जल के अन्दर ३० मास की अवधि को तनाव से ग्रसित एव चिन्तनीय अवस्थ्ग म व्यतीत किया हू। मगर जब आपने हम लोगा को शिक्षा दी, जा जानकारी दी उसका मे वर्णन नही कर सकता हू। आपने जो प्रक्षाध्यान एव महाप्राण ध्वनि करवायी वह अपने आप मे एक मिशाल हे। इससे काफी हमे जानकारी मिली ओर इसे करने पर हमारे मन के विकार जो उत्पन्न होते हे उस पर एव राग द्वेप पर कावू पाने का तरीका सहज ढग से मिला हे।

प्रेक्षाध्यान जो सुख-दु ख से मुक्त होने का साधन हे एव एकात साधना हे। इस जेल मे रहकर के भी अगर हम अपने को सुख की ही प्राप्ति करने का साधन वना लिया तो वह सव आप लोगो की देन हे। ओर म स्वय को पहचानने का हर वक्त अभ्यास करता हू। अपन पर स्वय को अनुशासन करने का भी ढग हमने आप लागा के शिक्षा द्वारा सीखा। क्योकि आत्मा के द्वारा प्रेम इच्छा जो गहराइ से देखने वाला एव भीतर को देखने के वाद ही उसके विकार को दूर करने मे सहायक सिद्ध होने वाला यह मत्र प्रेक्षाध्यान हे। कायात्सग के अभ्यासो से भी अच्छी जानकारी मिली—शारीरिक, मानसिक एव भावनात्मक तनाव से केसे दूर रह सकूगा वह भी हम लोगो को आपके द्वारा शिक्षा मिली। आपने श्वास प्रेक्षा पर भी काफी जोर दिया। क्योकि यह श्वास जव चलती हे या गति ज्यादा होती हे तो वह व्यक्ति म्वाभाविक तोर पर ज्यादा उत्तेजित हो जाते ह। इससे वचने के लिए आपने विस्तारपूर्वक समझाया उसकी जानकारी पूरी हमे मिली। मेरा मन काफी चचल था वह अव नही ह। मेने अपने को अव काफी अनुशासित कर दिया ओर होने की कोशिश जारी हे।

उपरोक्त कुछ अनुभव यह स्पष्ट वताते हे कि दु ख को भी सुख मे वदला जा सकता हे। गल्ती होना कोई वडी वात नही हे

करना अत्यत आवश्यक ह। इस दृष्टि स यदि कही स भी कोइ आवाज उठती हे तो वह स्वागताह ह।

अणुव्रत ने इस दिशा मे आगे वढने का एक निश्चित क्रम वनाया हे। एक असाम्प्रदायिक आचार सहिता क रूप म सकल्प शक्ति को सघन वनाने की एक प्रयाजना सामने आइ ह। काइ भी प्रयोजना तभी सफल हो सकती हे, जव उसे जन समथन प्राप्त हा। जन समर्थन प्राप्त करने के लिए जनता का जानकारी दी जानी आवश्यक हे। इसी दृष्टि से आन्दोलन के अन्तगत हर वप अनका आयोजन किये जाते हे। सामाजिक जीवन की विविधताओ को समटने के लिए हर पक्ष को प्रवोधित करना इसका उद्दश्य हे। यह सही ह कि एक दिन विशेष उत्सव मना लेने से समाज नही सुधर सकता। पर यह भी सही हे कि किस मनुष्य क मन स कव कोई वात छू जाती हे, इसका भी कोइ निश्चित गणित नही हो सकता। यदि एक व्यक्ति क मन पर भी कोइ चोट होती ह, तो वह भी प्रशस्य ही हे। असल मे मूल्या क निर्माण का यही तरीक़ा हे। झूठी वात को भी सो दफा दोहराने से वह सत्य वन जाती हे ता सच्ची वात वार-वार दोहराने से क्यो नहीं प्रतिष्ठित हो सकेगी? यही अणुव्रत का पक्ष ह।

यह सही हे कि केवल कुछ लोग नेतिकता के जगन्नाथ-रथ को वहुत आगे नही खिच सकते। अणुव्रत आन्दोलन को आचायश्री महाप्रज्ञ जेस राष्ट्र सत का साधना तजस् उपलव्ध हे। उनके पास तप पूत साधुजना की एक फोज भी हे, यह ओर भी महत्त्वपूण वात हे। पर फिर भी इस महान् कार्य के लिए जन-जन का सहयाग तो अपेक्षित हे ही। एक ओर जहा प्रवुद्ध लोगो के विचार वल की आवश्यकता हे, वहा दूसरी आर कमशील लागो का उपयुक्त उद्यम भी अपेक्षित हे। नि संदेह वतमान वातावरण चारित्रिक उन्नयन के वहुत अनुकूल नही हे। पर यही हमारे कर्म की प्रेरणा वने यह आवश्यक हे। आज नैतिक मूल्या पर आधुनिक प्रचार साधनो से जा तीव्र आक्रमण हो रहा हे, उसका सामना करने के लिए नेतिक शक्तिया को भी अपना मोर्चा वनाना आवश्यक हे। यह तभी सभव हो सकता

है, जब जन-जन जागे तथा उपयुक्त रूप से सयोजित कदम उठाया जाए। अणुव्रत उसी यात्रा का ताना-वाना बुनने के लिए जनता को एक आह्वान है।

'सुधर व्यक्ति, समाज व्यक्ति स राष्ट्र सयम सुधरेगा' यही अणुव्रत का नारा है।

अणुव्रत शिक्षक ससद

नेतिकता सामाजिक जीवन का प्राण-तत्त्व हे। इसके विना समाज की कितनी दुरवस्था हो सकती है उसे खोजने के लिए चिराग की आवश्यकता नही होगी। आज तो पूरा राष्ट्र ही इस सकट से गुजर रहा हे।

आज स्थितिया इतनी पेचीदा हे कि वहुत सघन प्रयास स ही इन्ह सुलझाया जा सकता हे। अणुव्रत ने इस दृष्टि से भी विचार किया। यह अनुभव हुआ कि इस दिशा म वढने के लिए शिक्षा क्षेत्र ही उपयुक्त हो सकता हे। इसीलिए अणुव्रत-शिक्षक ससद का गठन किया गया। इसमे कोई भी संदेह नहीं हे कि शिक्षक न केवल बुद्धि का प्रतिनिधि हे अपितु वह शिक्षा-व्यवस्था ओर छात्र को जोडने वाली महत्त्वपूर्ण कडी भी हे। इस दृष्टि से अभिभावक ओर छात्रो के वीच भी वह एक सेतु हे। वह मिट्टी से घडा वनाने वाला एक कुभकार हे। आवश्यकता हे कि उसमे कुशलता जागे। यदि शिक्षक सजग हे तो वह समाज ओर राष्ट्र को भी जगा सकता हे।

राष्ट्रीय अभियान

यद्यपि सख्या को वहुत वडा महत्त्व दिया जाना चाहिए, फिर भी दो लाख शिक्षको तक अणुव्रत के संदेश को पहुचाना, उनमे अणुव्रत के प्रति आस्था जगाना, सदस्यता से जोडना भी कम वात नही ह। अणुव्रत आन्दोलन के जन-भावना जागृति मूलक कार्यो मे इसे सर्वाधिक महत्त्व दिया जाना चाहिए। पूरे भारत मे उत्तर से दक्षिण ओर पूर्व से पश्चिम तथा प्रत्येक प्रान्त प्रदश म अणुव्रत शिक्षक ससद ने अपने पख फेलाये हे। अनेक निष्ठावान शिक्षक इस अभियान से जुडे हे। सभवत यह अणुव्रत इतिहास का एक श्रेष्ठ सुनहरा पृष्ठ है।

अणुव्रत शिक्षक ससद के कइ राष्ट्रीय अधिवेशन हा चुके ह। उनसे एक अच्छा वातावरण वना हे। इस वात पर गहराइ से सोचना हे कि इस नवोदित शक्ति का केसे समुचित उपयोग जन-जागरण के लिए किया जा सकता हे। असल मे आवश्यकता तो इस वात की हे कि इस शक्ति को एक रचनात्मक नियाजन के रूप मे ढाला जाए। जव तक शिक्षक स्वय ही एक अभियान के रूप मे नही ढल जाते तव तक वे छात्रो को केसे अपने साथ जोड सकते ह? शिक्षको का यह सगठन हर कदम पर सवेदनशील होना चाहिए। इसकी हर अपेक्षा के प्रति सजगता एव सहानुभूति का रुख अपनाना चाहिए।

कर्तव्य ओर अधिकार

आज राष्ट्र मे शिक्षको के अपने अनेक राष्ट्रीय एव प्रादेशिक सगठन ह। पर वे सगठन अपने कर्तव्यो के प्रति कितने जागरूक हे, यह सोचना पडेगा। अधिकारो के लिए हर मोके पर लडाइ लडी जा रही हे, पर कर्तव्या के प्रति कितनी जागरूकता ह, इसे वहुत आसानी से समझा जा सकता हे। ऐसा लगता हे जेसे शिक्षको का शिक्षा एव छात्रा के प्रति कोइ लगाव ही नही हे। राजनीति का दश भी उन्हे रुग्ण वना रहा हे। ऐसी हालत मे अणुव्रत शिक्षक ससद् यदि कर्तव्य की वात को सामने लाती ह तो निश्चय ही यह एक स्वागतार्ह कदम हे। अणुव्रत के पति उनकी प्रतिबद्धता कोई कानूनी वात नही हे, यह उनकी अपनी स्वय की स्वीकृति हे। हो सकता हे कुछ अवसरवादी तत्त्व भी इसके साथ जुडे हो, पर वे तो इसके साथ निभ ही नही सकेगे। वे अपने आप छिटक कर दूर हो जावेग। आवश्यकता ह निष्ठावान् तत्त्वा को सहेजने की। यदि कुछ ही प्रतिशताक निष्ठा वाले निकल जाए, जो कि निकलना असभव नही ह, तो वे अनिष्ठावानो को भी निष्ठावान वना सकते हे।

अणुव्रत के साथ जीवन-विज्ञान तथा अहिसा-प्रशिक्षण का एक नया आयाम ओर जुड रहा हे। इस आयाम को यदि सफलता के

शिखर पर चढाना हे तो निश्चय ही शिक्षका से वढ कर ओर कोई भी ताकत कारगर नही हो सकती।

छात्रो पर प्रभाव

छात्रो मे सामाजिक दायित्व को जगाने के अनेक प्रयास आज चल रहे ह। पर लगता हे वे सव थक गए ह। ऐसी स्थिति मे यदि अणुव्रत शिक्षक ससद जीवन-विज्ञान के आशा भरे अभियान को अपने हाथ म ले लेती हे तो इसके दूरगामी परिणाम हो सकते ह।

अणुव्रत शिक्षक ससद सगठन तथा काय पक्ष दोनो पर नियोजित कदम उठा सका तो निश्चय ही यह अणुव्रत का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण कार्य होगा। हमारे सारे तत्र तथा साधना को खुले मन-मस्तिष्क से इस शक्ति का अभिनदन करने के लिए तेयार रहना चाहिए। शिक्षको को भी त्याग की भावना को सामने रखकर ही इस ओर मुह करना चाहिए।

अब तो यह ओर भी प्रसन्नता की बात हे अणुव्रत छात्र ससद भी इस दिशा मे आगे कदम उठाने लगा हे। आवश्यकता हे, शिक्षक, छात्र एव अभिभावको का यह त्रिकोणात्मक अभियान देश मे नये मूल्यो की स्थापना के लिए आगे आये।

अणुव्रत परिवार योजना

परिवार मनुष्य का सुरक्षा कवच है। मनुष्य हजार परेशानिया सहकर भी जब अपने परिवार म आता है तो एक राहत अनुभव करता है। मनुष्य वाहर से लड़कर नही हारता। वह बड़े से बड़ा सघर्ष भी झल लता है, पर यदि परिवार म दरार पडती है तो आदमी टूट जाता है। दुनिया मे जितनी आत्म हत्याए होती है, उनमे पारिवारिक कलह का सबसे बड़ा हाथ हे। कोइ भी मनुष्य मरना नही चाहता, पर जब परिवार कलह ग्रस्त हो जाता हे तो आदमी मौत से भी खेल जाता है।

जो आदमी अध्यात्म म जीता हे वह अकेले मे जी सकता है। पर सब आदमी अध्यात्म मे नही जी सकते। ज्यादातर आदमी तो परिवार म ही जीते ह। कुछ जानवर भी परिवार म जीते ह। पर उनका परिवार-भाव एक सज्ञा मात्र है। एक सत्ता के वश मे होकर वे साथ-साथ जीते ह, पर वे एक-दूसरे के लिए बलिदान नही कर सकते। आदमी ही एक ऐसा प्राणी ह जो परिवार म एक-दूसरे के लिए बलिदान कर सकता ह। असल म वे परिवार ही सुखी रह सकते ह जो एक-दूसरे क लिए कुछ बलिदान करना/सहना जानते हा। जिन परिवारा म सहिष्णुता नही होती व कभी भी आनदमय जीवन नहीं जी सकते। व कलह म ही जीते हे आर कलह म ही मरते ह।

व्यक्ति हे ता उसम कमिया भी हे। कोइ भी आदमी परिपूर्ण नही हा सकता। हर आदमी म कुछ न कुछ कमी रहती ही ह। पर जिस परिवार म एक-दूसरे का सहने की क्षमता जाग जाती हे वह कभी दु खी नहीं हो सकता।

सहने का मतलव यह नही ह कि परिवार म कुछ लोग अपनी मनमानी कर ओर कुछ लोग उनके नाज-नखरा का सहन करत रहे हे। देखा जाता हे कि परिवारो म पुरुपा म आक्रामक मनोवृत्ति होती हे। प्राय ओरता का वहुत सहना पडता हे। एसा नहीं हे कि आरता मे अपना स्वत्व नही होता। उनकी भी अपनी एक अस्मिता होती हे। जव उनक धेय का वाध टूट जाता है तव परिवार के विखरने मे देरी नही लगती। सहिष्णुता की वात औरत या पुरुप क लिय नही अपितु सवके लिए ह। जव सव अपनी सीमाआ म रहते ह तो गाडी पटरी पर चलती रहती है। जव सीमा टूट जाती हे तो दुघटना को रोका नहीं जा सकता।

परिवार मे कुछ व्यक्ति ऐसे अवश्य होते है जो सहिष्णु होते हे। वास्तव मे वे ही परिवार की धुरी होते है। वहुत वार उनको परवशता स भी सहन करना पडता हे। पर इसमे कोइ सदह नही हे कि परिवार म वे ही व्यक्ति कीमती होते है। परवशता से सहन करना एक वात हे तथा स्ववशता से सहन करना दूसरी वात हे। जहा परवशता से सहना पडता ह उस परिवार को स्वस्थ परिवार नहीं कहा जा सकता। सहना वहुत वडा धम हे, पर सहने के लिये विवेक जरूरी हे। जिस किसी भी व्यक्ति म वह विवेक जागृत होता हे वह परिवार को स्वग वना देता हे। वह स्वय भी आनदित नहीं रहता अपितु दूसरे को भी आनदित वना देता है। आक्रमणकारी बनने की अपेक्षा सहिष्णु वनना ज्यादा वेहतर हे। सहिष्णु व्यक्ति को एक वार सहना भी पडता हे तो कभी वह दूसरा का हृदय परिवर्तन भी कर सकता हे।

आदमी मे जेसे कमिया सभव ह वहा कुछ मजवूरिया भी सभव हे। पर मजवूरिया ओर कमिया कभी आदर्श नही वन सकती। जो लोग अपने परिवार मे कुछ लोगो की मजवूरियो का फायदा उठाते ह वे आदर्श नही वन सकत। मजवूर बना रहना भी एक कमजोरी हे, पर उसका फायदा उठान की कमजोरी उससे भी वडी ह।

मनुष्य से वहुत कुछ अनुभव कर परिवार मे रहना सीखा। कइ

लोग स्वतन्तता या स्वच्छदता के कारण परिवार नहीं बनाते या परिवारो के प्रति प्रतिवद्धता निभाने म रुचि नही लेते, पर इसके परिणाम भी अकल्पित नही ह। जिन देशो म परिवार-प्रतिवद्धता शिथिल पडी हे वहा वुढापा भार वन जाता हे। ऐसे लोग जीवन के सघर्ष मे वहुत जल्दी हार जाते हे। जहा जीवन मे स्नेह ओर वात्सल्य नही होता हे वहा सघप ही शेप रह जाते हे। कहते हे कि एक वार एक युवक कवीर के पास गया ओर पूछा—आपकी पारिवारिक शाति का रहस्य क्या हे? कवीर ने कहा—थोडी देर ठहरो, मे तुम्हारे प्रश्न का उत्तर दूगा। दोपहर का समय था। अचानक कवीर ने अपनी पत्नी को पुकारा—जरा चिराग लाना तो, मेरी सूई नीचे गिर गई हे दिखाई नही पडती। तत्काल पत्नी चिराग लेकर हाजिर हो गई आगन्तुक को वडा आश्चर्य हुआ। वह समझ ही नही सका कि भरी दुपहरी मे चिराग की आवश्यकता क्यो हुई?

थोडी देर वाद कवीर की पत्नी दो प्यालो मे दूध लेकर आई। एक प्याला कवीर ने ले लिया दूसरा प्याला आगतुक को पकडा दिया। दोनो दूध पीने लगे। कवीर कहने लगा—आज दूध बहुत अच्छा हे। वडा मजा आ रहा हे। पर आगन्तुक वडी परेशानी अनुभव कर रहा था। उसे दूध खारा-नमकमय लग रहा था। वह कवीर की वात समझ नहीं पा रहा था। उसे असमजस मे पडा देख कवीर वोला—क्यो? कुछ वात समझ मे आई? आगन्तुक ने कहा—मुझे समझ मे नही आ रहा हे, आप क्या कह रहे है, केसे जीते ह? भला भरी दुपहरी मे भी चिराग की आवश्यकता थी? आपकी पत्नी भी केसी अधभक्त हे कि चिराग जला कर ले आई ओर आप भी केसे अजीव व्यक्ति हे, दूध मे नमक डाल रखा हे आप उसे वहुत अच्छा वता रहे हे। मे समझ नही पाया कि यह सव क्या हो रहा हे?

कवीर ने हसते हुए कहा—वधु! मे तुम्हारे प्रश्न का ही उत्तर दे रहा हू। यदि तुम्हे परिवार मे शाति प्राप्त करनी हे तो पत्नी ऐसी होनी चाहिए कि वह अपने पति के हर इशारे को समझे। यह ठीक हे कि पति को भी समझ स काम लना चाहिए पर पारिवारिक

शाति के लिए यह आवश्यक है पत्नी का पति को सहन करना चाहिए। यह समझ का एक सिरा है। उसका दूसरा सिरा ह कि पति को पत्नी को समझना चाहिए। अव पत्नी विचारी भूल से दूध मे नमक डाल लाई तो उस पर गुस्सा हाने की जरूरत नहीं है। वह तो सदा मेरी सेवा करती है। एक दिन यदि काइ गलती हो गई तो वह क्षमा कर देना चाहिए। एक दिन ही नहीं गलती को हमेशा ही क्षमा कर देना चाहिए। जो पति-पत्नी परस्पर की गलतिया को सह सकते है, वे ही सुखी जीवन जी सकते है।

अणुव्रत के अन्तर्गत अणुव्रत परिवार की एक योजना हे। उसका उद्देश्य यही हे कि व्यक्ति अपने परिवार मे सुखी जीवन जी सके। अणुव्रत परिवार की सदस्यता स्वीकार करने वाले व्यक्तिया के लिए निम्न पाच व्रत आवश्यक हे—

१ किसी निरपराध प्राणी की हत्या नही करना।
२ खान-पान की शुद्धि रखना एव व्यसन मुक्त जीवन जीना।
३ परस्पर पारिवारिक साहाद रखना।
४ मानवीय एकता मे विश्वास रखना। किसी को अस्पृश्य नहीं मानना।
५ सव सम्प्रदायो के प्रति सद्भाव रखना।

अणुव्रत परिवार योजना के उद्देश्य हे—

अणुव्रत दशन के प्रति आस्थाशील, जनशक्ति का सकल्प, परिवार म अणुव्रत का वीज-वपन कर पूरे परिवार को अणुव्रत के सस्कारो मे ढालना। अणुव्रत से जुडे हुए लोगा मे भ्रातृभाव का विकास करना।

प्रारम्भ म परिवार का एक अणुव्रती व्यक्ति अणुव्रत परिवार का सदस्य वन सकता हे। धीरे धीरे परिवार के सभी सदस्या को अणुव्रत आदश के अनुरूप ढालना उसका उद्देश्य होता हे।

आज सयुक्त परिवार प्रथा ता प्राय नि शेष ही हो गई हे। पर एकल परिवार म भी सामजस्य काफूर हाता दिखाई दे रहा ह। ऐसी परिस्थिति मे अणुव्रत परिवार याजना न कवल परिवार के लिए अपितु समाज एव राष्ट्र के लिए भी एक वरदान वन सकती है।

अणुव्रत लेखक मच

जीवन म दो प्रकार की प्ररणाए होती हे। एक उर्ध्वमुखता की दूसरी अधोमुखता की। मनुष्य जीवन बहुत बडी उपलब्धि हे, पर यदि वह उर्ध्वमुखता की अर्थात् मुक्ति की ओर नही बढती हे तो अधोमुखता की ओर पशुता की ओर ढल जाती हे। आज साहित्य मुक्ति की राह नही दिखा रहा हे, वधन की ओर ढकेल रहा हे। इसी से वह काम से प्रेरणा ले रहा हे। काम आज दृश्य साधनो से ही भयकर आक्रमण नही कर रहा हे, अपितु साहित्य पर भी काविज हा रहा हे। बहुत सारे नवोदित नामधारी लेखको ने साहित्य को भी आविल-अपाठ्य बना दिया ह। वे लोग यह तर्क भी देते ह कि पौष्टिक साहित्य मे लोगो की अभिरुचि नहीं हे। वल्कि कुछ लोगो ने काम को ही सत्य मान लिया हे। वे कहते ह जव लोगा की रुचि ही इस सत्य की ओर हे तो माहित्यकाг क्या करे? वह यदि कुछ आदर्शवादी साहित्य लिखता तो भी ह तो उसे प्रकाशक, पाठक, प्रशसक नही मिलते।

जव तक साहित्यकार केवल परिस्थिति प्रेरित होकर लिखता रहेगा तव तक वह सच्चा साहित्य नही लिख सकेगा। परिस्थितियो का चित्रण भी जरुरी हो सकता हे पर जव तक उसका स्रोत अन्दर से नही फूटेगा, अर्न्तदृष्टि जागृत नही होगी तो वह अपनी ओर से क्या देगा? यदि साहित्यकार के पास स्वय देने के लिए नही ह ता वह केवल शव्दा का व्यापारी हे। केवल शव्द निर्जीव होते ह। भावधारा ही उनम प्राण भरती ह। साहित्यकार को अपनी भावधारा का अमल विमल वनाना होगा। यदि उसकी भावधारा तमसावृत हे ता उससे अधेरा ही प्रवाहित होगा। अधेरा तो चारा आर हे ही।

यदि उसे ही दिखाना हे तव चिराग की आवश्यकता नही ह। चिराग की आवश्यकता तभी हे जव वह अधेरे म छिपे हुए सत्य को आभापित कर सके।

सचमुच यह लेखक की चिन्मयता को एक आमन्त्रण हे कि वह स्वय चिनगारी तो वने। यदि वह कवल अधेरे का शोर करता हे तो उसका कोइ अथ नही हे। वह इस डर को छाड दे कि अधेरा उसे लील लेगा। निश्चय ही अधेग प्रकाश को नही लील सकता।

अणुव्रत का ही उदाहरण ले। आज भोगवाद की भयकर आधी हे। इस आधी के सामने टिकना वहुत मुश्किल हे। दह सही हे कि अणुव्रत आधी नही वन सका। पर यह भी सही ह कि वह इस भयकर आधी मे खडा हे। आजादी के वाद सुधार/शुद्धि के कई अभियान/आन्दोलन सामने आये। पर वे धीरे-धीरे मद या शात हो गए। अणुव्रत लगभग आधी शताब्दी से अनवरत गतिशील हे। अनुभव किया गया कि आज देश की सस्कृति पर जो भयकर आक्रमण हो रहे हे उनका साथक एव सघटित तरीके से उत्तर दिया जाए। इसी भावना से अणुव्रत लखक मच का उद्‌भव हुआ।

यह खुशी की वात हे कि काफी लेखक अणुव्रत के अभियान से जुडे हुए हे। जव हम अणुव्रत पाक्षिक के पिछले अको को देखते ह तो अणुव्रत लेखका का एक वडा परिवार हमारे सामने फल जाता हे। उनमे अनेक प्राणवान प्रकाशदीप लेखको के नाम जगमगा रहे ह। आवश्यकता यही हे कि उन्हे सजोया जाए, पहचान प्रदान की जाए। लेखक स्वय इसके लिए आगे आये यह भी अपक्षा हे।

यह स्पष्ट आभासित हा रहा था कि यह कूच निरतर चलते रहना चाहिए। न केवल पुराने लेखको को ही एकहृदय करना हे अपितु जेसा कि आचायश्री महाप्रज्ञजी ने कहा—नये लेखका को प्रशिक्षण भी देना चाहिए। सचमुच यह वसा ही कार्य हे जेसा गाधीजी ने नागरी प्रचारिणी सभा आदि के कार्यो को प्रोत्साहित किया था। अणुव्रत अनुशास्ता म भी वही उत्कठा दिखाई दी। यह खुशी की वात हे कि उनकी उत्कठा ने अनेक लोगो को अपनी ओर खीचा। उससे

प्रेरित होकर कई अणुव्रत लेखको ने स्वत स्फूर्त होकर उस प्रशिक्षण की रूपरेखा भी भेजनी शुरू कर दी हे जो भविष्य म अच्छे साहित्यकारा के लिए एक प्रेरणास्रोत वन सकेगी। अनेक साहित्यकार सभागियो के उन्साह भरे पत्र निरतर मिल रहे हे कि कव प्रशिक्षण क्रम शुरू हो रहा हे। सचमुच यह वहुत शुभ लक्षण हे। यह अणुव्रत काय दिशा की एक नई उपलब्धि हे। यदि लेखक जग जाए, यदि उनके लेखन मे नवोदय का स्वर फूट जाए तो भोग की आधी को भी शात होना ही होगा। आधियो को स्वभावत ही शात होना पडता हे। वे वहुत लम्बी नही चल सकती। या तो वे इतना विनाश कर चुकी होती हे कि अपन पीछे शमशान की शाति का दृश्य छोड जाती हे या उससे वहुत सारा कूडा-कर्कट उडकर स्वच्छता का वातावरण वन जाता हे। अणुव्रत को आधी के महारक स्वरूप को निखार-पखार कर रचनात्मक रूप मे मजाना-मवारना हे।

निश्चय ही अणुव्रत को श्री तुलसी एव श्री महाप्रज्ञ जसी साधक विभूतियो का पृष्ठवल हे। उनके पास शाति का सफेद ध्वज हे। इसम लाल, हरा, केसरिया ओर भगवा सभी रग समा सकने ह। राजनीति के निर्मल तत्त्वा को भी आहूत किया जा सकता हे। अणुव्रत लेखक मच ऐसा विश्वास जगाता हे। उम दिन की प्रतीक्षा है जव अणुव्रत का पूरा लेखक परिवार एकत्र हो सकेगा तथा नव सृजन एव नवोदय अपनी मजुल आभा के साथ प्रकट होगा।

आज देश ओर दुनिया मे जो कुछ हो रहा हे उससे कोई अपरिचित नही हे। चारो ओर चारित्र का स्खलन दिखाइ दे रहा ह। यह सही हे कि पानी ढलान की ओर बढता हे। मनुष्य भी भोग के प्रति सहज रूप से आकृष्ट होता ह पर पानी ओर मनुष्य मे अतर ह। पानी की द्रवता उसे ढलने से रोक नहीं सकती। मनुष्य अपनी वृत्तिया पर अकुश लगा सकता ह। मनुष्य न पानी को ढलने से रोक कर वडे-वडे वाध वनाये, उनसे धरती का वडा भाग हरा-भरा हो गया, पर जव वह अपनी ही वृत्तिया पर अकुश नहीं लगा सकता हे तव विनाश को कान रोक सकता हे?

महपि पतजलि ने इसीलिए योग का प्रतिपादन किया था। उन्होंने कहा था—योगश्चित्तवृत्ति निरोध।' पर आज वृत्तियो को खुली छुट देना ही विकास का मानदड मान लिया गया हे। एक जमाना था जब एक बूद पानी का भी दुरुपयोग उचित नही माना जाता था, पर आज टेक के टेक मिनटो म खाली हो रहे हे। यदि ऐसा ही होता रहा तो एक दिन पीने का पानी भी मुश्किल हो जाएगा। एक जमाना था जब एक फूल तो ताडना भी गुनाह समझा जाता था, पर आज शादी की एक रात मे लाखा-करोडो फूल कूडा कचरा बन जाते हे। एक जमाना था जब बच्चे मा-बाप, समाज परिवार की शर्म मानते थे, आज लडके-लडकिया जिस प्रकार उन्मुक्त ह उसस परिवार की शालीनता भग हो तो आश्चर्य की बात क्या है? जब माताए ही अपने पर अकुश नही लगा सकती तो वे अपनी सतान को केसे भडकीलेपन से रोक सकेगी।

ओर रही-सही बात तो विज्ञापन बाजी ने बिगाड दी हे। विज्ञापनो को लुभावने बनाने का पहले भी प्रयत्न किया जाता रहा हे, आज भी किया जा रहा है, पर आज विज्ञापन-मनोविज्ञान बच्चा-किशारो को जिस तरह से अपनी गिरफ्त मे ले रहा हे वह तो ओर भी घातक हे। सचमुच आज मीडिया जिस प्रवाह म बह रहा वह बहुत ही चितनीय ह। पहले तो साहित्य मे भी शिष्टता की एक सीमा थी। पर अब टेलीविजन तथा अन्य प्रचार माध्यमो ने जिस तरह का भोगवादी रुख अपना लिया हे वह बहुत ही अभद्र-सा लगता है।

ऐसे क्षणो मे अणुव्रत अनुशास्ता श्री तुलसी के सानिध्य म अणुव्रत लेखक मच की कल्पना एक ताजा प्राणवायु का झोका प्रतीत होती हे। यद्यपि अणुव्रत लेखक मच अभी तक अणुव्रत मे लिखने वाले लेखको का एक समुदित स्वरमात्र हे। अणुव्रत पाक्षिक का लेखन प्राय सयम की सीमाओ से जुडा हुआ होता है। अणुव्रत का तो घोष ही 'सयम खलु जीवनम्' ह। अत सयम इसके हर ताने-बाने मे बना रहे यह स्वाभाविक ही हे। पर अब अणुव्रत के लेखको ने लेखन-विज्ञापन को सयमित करने के लिए जो कदम उठाने का

विचार किया है, वह बहुत मूल्यवान है। हो सकता है अणुव्रत का लेखक-परिवार सीमित है पर उसकी क्षमता अपार है। आज तो मीडिया बिल्कुल अच्छृंखल हो गया है। अच्छे-अच्छे पत्रों में न केवल नंगे वदन और कामुक भाव-भंगिमाओं को प्रस्तुत किया जाता है अपितु मादक पदार्थों के विज्ञापन भी खुलकर सामने आ रहे हैं। गांधीजी की जन्मजयन्ति के अवसर पर नशीले पदार्थों के विज्ञापन छपने-छपवाये जाते हैं यह कितनी लज्जा की बात है। पर यह रोग इतना ही नहीं है। आज विद्युत संचार से जिस तरह की संस्कृति घरों में जान-अनजान में उतर रही है, वह बहुत चिंता का विषय है। स्वतंत्रता के नाम पर जिस तरह का भद्दा प्रदर्शन हो रहा है उस पर चिंता व्यक्त करना अणुव्रत लेखक मंच की एक सही प्रतिक्रिया है। अणुव्रत लेखक मंच के उद्देश्य इस प्रकार हैं–

१ देश के विभिन्न भाषाओं में विविध विधाओं में लिखने वाले लेखकों को संगठित करना।
२ राष्ट्रीय, राज्यीय एवं जिला स्तर पर लेखक सम्मेलन आयोजित कर नये लेखकों को अपने साथ जोड़ना और अपने लक्ष्य को पाने के लिए रणनीतियां बनाना।
३ अणुव्रत के मूल्यों को अपनी रचनाओं के माध्यम से लोगों तक पहुंचाने के लिये लेखकों को प्रोत्साहित-प्रेरित करना।
४ विभिन्न विधाओं में लिखी रचनाओं के श्रेष्ठ लेखकों को प्रतिवर्ष सम्मानित व पुरस्कृत करना।
५ अणुव्रत पाक्षिक को अधिक समृद्ध व सुपाठ्य बनाने के लिए अच्छे लेखकों को अपनी उत्तम रचनाएं इसमें प्रकाशित करवाने के लिए आकर्षित करना।

मैं नहीं जानता अणुव्रत का नेतृत्व इसके प्रति कितना प्रोत्साहक बन सकेगा, अणुव्रत की संस्थाएं इसे किस तरह अंजाम दे सकेंगी, पर यह एक आवश्यक कार्य जरूर लगता है। तर्क के लिए तर्क दिया जा सकता है कि अणुव्रत के सामने कार्य के अनेक आयाम हैं व ही सब सही तरीके से स्पष्ट नहीं हो रहे हैं तो नयी बातों

को केसे शुरू किया जा सकता हे? उसका लाभ कितना मिल सकता हे? कहा से कार्यकर्ता आएगे? कहा से ससाधन जुटाए जायेंगे? आदि-आदि। पर समाधान भी प्रश्नो मे से ही निकलता है। यदि क्रान्ति की इस लहर को आग वढाना हे ता नये-नय उन्मेपो पर चितन करना ही पडेगा। जो लोग हमारे साथ हमसफर वनना चाहत ह उनका स्वागत करके ही हम अपने काफिले को समृद्ध वना सकते ह, अपने सवाद को सही तरीके से प्रेपित कर सकते ह। निश्चय ही मीडिया आज जिस दिशा म अग्रसर हो रहा हे उस पर अकुश नही लगाया गया तो सयम की सस्कृति को अपूरणीय क्षति सहन करनी पड सकती ह।

यह सही हे कि इस दिशा मे काम करने वाली कुछ सस्थाए अपना काम कर रही हे तथा नहीं सुनने वाले अणुव्रत की आवाज को भी नही सुनेंगे, पर फिर भी यदि अणुव्रत को सशक्त और कारगर ढग से काम करना हे तो इस वात पर विचार करना ही होगा। लोगा को अणुव्रत से जो अपेक्षा ह उसे पूरी करके ही वह अपनी तीर्थ-यात्रा को आगे बढा सकता हे। हम एकदम शिखर पर नही भी पहुच सके पर उस ओर कदम उठाए यह तो आवश्यक ह।

गावो की ओर–अणुव्रत

जीवन एक साधना हे। उन्ही लोगो की साधना सिद्ध होती ह जो जीने की कला को जानते ह। गुरुदेव श्री तुलसी ने उस कला को जाना तथा उसे अपने जीवन मे प्रतिबिम्बित किया। इसी से आपका जीवन पोरुप का प्रतीक बन गया। आचार्य श्री महाप्रज्ञजी उसी दिशा मे आगे वढ रहे हे।

अभी अणुव्रत के सदर्भ म गावा मे काम करने की वात सामने आइ। आचायश्री ने उसे वहुत वडा महत्त्व दिया। तत्काल इस पर नियोजित तरीके से विचार हुआ। रूपरेखा तय हुई। कार्यकर्ताओ को सजग किया गया ओर एक वातावरण वन गया। यद्यपि यह कार्य वहुत सूझवूझ, साधन ओर श्रम मागता हे, फिर भी जिस आदोलन के पीछे सजग नेतृत्व हो वह अपने आप अपना रास्ता वना लेता हे।

अणुव्रत एक व्यापक आदालन हे। अनेक स्तरो पर इसका काय चल रहा हे। गावो म भी इसका प्रसार हे। पर उसे नियोजित करने का सकल्प व्यक्त हुआ हे वह नया प्रतीत हो रहा हे। सचमुच थका हुआ आदमी वहुत लम्वी यात्रा की वात नही सोच सकता।

हर आदोलन का काम करने का अपना एक तरीका होता हे। अणुव्रत का भी आध्यात्मिक रूप से काम करने का एक अलग तरीका हे। अणुव्रत यह नही सोचता कि वह पूरी दुनिया को वदल देगा। अनेक लोगो की सोच तो अत्यत सूक्ष्म होती हे, पर उसे मूर्तिमान वना देना उनके वश की वात नही हाती। अणुव्रत का चितन भी वहु आयामी ओर वहुदूरगामी हे। यह किसी समाज, सम्प्रदाय या देश की सीमा मे आवद्ध नही हे। यह पूरी मानवता का भविष्य

चितन है। इसकी सफरातता का कारण भी यही ह कि यह अपनी कम सीमा क्षमता को पहचानता है। चितन और कम म यदि सतुलन नही तो वह विघटित हो जाता है। अणुव्रत न अपनी शक्ति का सही समाकलन किया। अपन ऊपर उसन वहुत सारा वोझ नहीं उठाया। इसीलिए यह अपनी अर्धशताब्दी के निकट पहुच रहा है। सन्यस्त श्रमण-श्रमणियो की एक टीम ने इसके हर कदम का सम्यग् अनुगमन किया। यही कारण है एक ओर यह आदोलन प्रवुद्ध लागा म फैला/पसरा तो दूसकी आर जन सामान्य तक को झकझोरता रहा। इसके विचार आर प्रचार-प्रसार म एक सघड सतुलन वना रहा। यह केवल अखवारी न वनकर एक जमीनी आदालन के सकल्प की भावभूमि वना रहा।

यह सही हे कि हर आदोलन की अपनी एक काय सीमा होती हे। जव तक जीवन दानी कायकर्ता किसी कार्य का पृष्ठवल नही वनते तव तक वही सफल नही हो सकता। आज क जमाने म नेताओ की कमी नहीं हे। हर जगह उनकी भीड हे। युग ही एसा हो गया हे कि हर व्यक्ति महत्त्वाकाक्षी वन गया हे। वह जल्दी से जल्दी सत्ताशीर्प पर आरूढ होना चाहता हे। यदि कोई सत्ता के लिए उत्सुक नही भी हे तो आर्थिक दोड म शामिल है। वह अधिक से अधिक ससाधन वटोरने मे व्यस्त हे। ऐसे युग मे अणुव्रत जेसे रचनात्मक कार्यो की ओर मुह करना भी वडी कठिन वात प्रतीत होती हे। पर अपना भविष्य वनाने वाले आदोलनो से निष्ठाशील कार्यकर्ताओ को चुन चुनकर सहेजना होगा। उनके मान सम्मान को सुरक्षित रखना होगा। अणुव्रत की गति-प्रगति म ऐसे ही लोगा का वहुमूल्य योगदान रहा हे। पर गावो की ओर मुख करने के लिए भी सोचने/समझने की आवश्यकता हे। नारे लगाने वाले लोग वहुत होते ह, पर काम के लिए खपने-जूझन वाले लोग वडी मुश्किल से मिलते हे। लेकिन यह भी सही हे कि भविष्य उन्ही लोगो का वनता हे जो निष्ठा से कार्य करते हे। गुरुदव की अन्त प्रेरणा को समझ कर अणुव्रत के लोगो को अपना एक नया इतिहास वनाने का अवसर प्राप्त हुआ हे। इस उत्स्फूर्त प्रेरणा से जीवन को आलोकित करना जरूरी हे।

इस दृष्टि से अणुव्रत का गावो की ओर मुख होना एक महत्त्वपूण बात हे। अणुव्रत ग्राम-निमाण के मुख्य पाच सून ह–शिक्षा, स्वास्थ्य, नशामुक्ति, साहाद एव श्रम-स्वावलम्बन। पयावरण एव स्वच्छता आदि सभी बाते इन पाच सूत्रो मे समाविष्ट हो जाती ह।

अणुव्रत को भी स्वीकारो

जन धर्म की यह वहुत वडी विशेपता हे कि इसने महाव्रत ओर अणुव्रत इन दोना क अस्तित्व को स्वीकार किया। कोइ भी धम मनुष्य की क्षमता का ऐसा श्रेणि-विभाजन नही कर सका। जन धर्म ने ही—'दुविहे धम्मे पन्नत्ते, आगारे चेव अणगारे चेव' कहकर आगार धम ओर अणगार धर्म के रूप मे द्विविध धम को स्वीकार किया। इसमे काई शक नही कि महाव्रतत्व ही पूण धम हे। वह तीन कारण ओर तीन योग से सावद्य कम का प्रत्याख्यान हे। यद्यपि मुनि धम की भी जिनकल्पी, स्थविरकल्पी आदि अनेक श्रेणिया हे। पर सावद्य की पूर्ण-विरति इन सवको जोडे हुए हे।

सव आदमी महाव्रती नही वन सकते। महाव्रतत्व दुरुह चढाई ह। कमजोर आदमी उसे नही चढ सकता। तो क्या वह अपनी यात्रा को समाप्त कर दे? नही, महावीर ऐसा नही कहते। वे ही एक महापुरुप ह जिन्हाने कहा—जो महाव्रती नही वन सके, वह अणुव्रती वन सकता हे। वह अव्रती से श्रेष्ठ हे।

यद्यपि इस वात पर भी तर्क-वितर्क होता रहा हे कि महाव्रती को अणुव्रतित्व का उपदेश करना चाहिए या नही? पर इस वात का उत्तर भी दिया जाता रहा ह कि यह कायरता या कमजोरी का अनुमोदन नही हे अपितु मनुष्य की क्षमता का उचित अकन/आकलन हे। यदि मनुष्य की क्षमता को पहचाने विना उस पर महाव्रत लाद दिया गया तो—हाथ्या रो वोझ गधा लदियो' हाथिया का वोझ गधो पर लाद दिया वाली वात सच हो जायेगी। महाव्रत का वोझ वहुत गुरुतर हे। उसे सव लोग नही उठा सकते। एक पुराने गीत मे

महाव्रत की ओर वढते पुत्र जम्बू को भद्रा का मातृत्व कहता हे—'पाच महाव्रत पालना रे जम्बू! पाचू ही मेरू समान' पाच महाव्रतो को पालना पाच मेरू-पवतो को उठाने जेसा प्रयास हे। मेरू पवत वहुत वडा हे। जिसे आज हिमालय कहा जाता हे मेरू पर्वत को उससे भी वडा कहा गया हे। लेकिन मराव्रत का साधक कहता हे—मे एक मेरू पवत को नही पाचा मेरू पर्वता को हाथा पर उठाऊगा। सचमुच यह वात जम्बू जेसा व्यक्ति ही कह सकता हे। साधारण व्यक्ति तो एक ढेला भी उठा ले यह भी वहुत हे।

पर भगवान महावीर ने उस उत्थान, कम, वल, वीर्य पुरस्कार का भी निरादर नही किया। इसीलिए उन्हाने—'अहासुह देवाणुप्पिया'—कहकर अणुव्रत तत्त्व का भी अनुमोदन किया ह। अणुव्रत का क्षेत्र-विस्तार वहुत वडा हे। एक करण एक योग स भी अणुव्रत को स्वीकार किया जा सकता हे तथा तीन कारण दो योग से भी अणुव्रत को स्वीकार किया जा सकता हे। श्रावक के वारह व्रतो पर देश-काल एव सामर्थ्य का स्पष्ट प्रतिविम्व हाता हे।

वतमान मे अणुव्रत का एक सस्करण अणुव्रत अनुशास्ता श्री तुलसी ने प्रस्तुत किया हे। भले ही उसके लिए परम्परा से जेन होना आवश्यक न हो। पर फिर भी जीवनशुद्धि का यह विशेप उपक्रम हे। जेनत्व को भी सही अर्थो मे जन्म से नही पाया जा सकता। परम्परा से पाया हुआ जेनत्व ओढा हुआ होता हे। सच्चे जेनत्व को कर्म से ही पाना होता हे। अणुव्रत को भी कम से पाना होता हे।

जेन धर्म आर तेरापथ की एक परम्परा ह। अणुव्रत परम्परा नही हे। पर इसके विना जेनत्व ओर तेरापथत्व तेजस्वी नही वन सकता। यह ठीक हे कि सच्चा धामिक अपने-आप अणुव्रती वन जाता हे। पर यह भी सही हे कि अणुव्रती बने विना आदमी सच्चा धार्मिक नही वन सकता। आज का धामिक धार्मिक तो हे। दुनिया मे अरवो आदमी ह, सब किसी न किसी धर्म से जुडे हुए हे। पर यह नही कहा जा सकता उनमे नेतिक लोग कितने हे। नेतिकता करुणा के विना नहीं उपज सकती। जिस आदमी के मन मे करुणा

होती हे उसके मन मे नेतिकता का प्रवाह अपने-आप वहने लग जाता हे। अणुव्रत आदोलन मनुष्य के अदर सूखे हुए करुणा के स्रोत को वढाने का प्रयास हे। ऐसा आदमी न तो किसी को धोखा देगा ओर न किसी की हिसा करेगा। एक शातिपूर्ण समाज/ससार के निमाण के लिए अणुव्रत एक अमोघ अस्त्र हे। यह किसी सम्प्रदाय से जुडा हुआ नही हे। किसी भी सम्प्रदाय को मानने वाला व्यक्ति अणुव्रती वन सकता हे। पर चूकि अणुव्रत आन्दोलन के प्रवर्तक आचार्यश्री तुलसी हे, अत जेन धम एव तेरापथ के लोगो का दोहरा दायित्व हो जाता हे कि वे स्वय अणुव्रती बने तथा अन्य लोगो को भी अणुव्रती बनने की प्रेरणा दे।

कैसे रोके बुराइयो का प्रवेश?

मनुष्य एक चतन सत्ता हे। यो तो चेतना सभी प्राणियो म होती हे पर मनुष्य की चेतना मे ही यह क्षमता हे कि नह बुराइयो के प्रवेश को रोक सकती हे। वही एक ऐसा प्राणी है जो सम्यग् ओर मिथ्या मे भद कर सकता हे। बाकी के प्राणियो मे यह भेदज्ञान नही होता। इसीलिए वे अज्ञानी हे। पर मनुष्य का ज्ञान भी तव अज्ञान वन जाता हे जव वह आग्रह वन जाता हे। यो सत्य अनन्त हे। उसे परिपूण रूप मे केवल केवलज्ञानी ही जानता हे। सव मनुष्यो के पास केवलज्ञान नही होता। उनके पास ज्यादा तो अज्ञान ही होता है। पर आग्रह के कारण उनके पास जो ज्ञान होता हे वह भी अज्ञान अर्थात् मिथ्याज्ञान वन जाता हे। आग्रह मनुष्य का सवसे वडा शत्रु ह। वही अनेक वडे-वडे विवाद खडा कर देता हे। जिसकी दृष्टि सम्यक् वन जाती हे वह सत्य को उसकी सापेक्षता मे ही समझता हे। ज्ञान नही होना एक वात है पर मिथ्याज्ञान होना दूसरी वात हे। आग्रह मनुष्य के ज्ञान को मिथ्या बनाता हे।

अनाग्रह

बुराइयो को राकने का एक रास्ता हे—अनाग्रह। इसका यह मतलव नही हे कि मनुष्य का अपना कोई विचार ही न हो। इसका यह अर्थ भी नही हे कि आदमी सदेहशील हो। इसका अर्थ ता यही ह कि आदमी सापेक्षदृष्टि से सोचे। सापेक्षता के विना हम किसी घटना का सही अर्थ नही समझ सकते। गाधीजी ने एक शब्द दिया था सत्याग्रह। विनोवाजी ने इस पर विचार करते हुए सत्याग्रह

की अपेक्षा सत्याग्रहिता पर ज्यादा वल दिया। सचमुच' यह वहुत कीमती वात ह। सत्याग्रही व्यक्ति अपनी वात पर अड जाता है। वह दूसरो पर एक प्रकार का दवाव हे। सत्याग्रही व्यक्ति कभी किसी पर दवाव नही डालता। वह तो सत्य को उसकी सापेक्षता म ही समझता ह। उसकी जिज्ञासा के द्वार सदा खुले रहते ह। अच्छे गिचारा को अपने मे प्रवेश देना ही वुरे विचारा को अपने स वाहर धकेलना हे। यही वुराइया के प्रवेश-निपेध का पहला सूत्र ह।

दृढ सकल्प

वुराइयो को रोकने का दूसरा सून ह—दृढ-सकल्प। सकल्प की दृढता के विना कोइ भी व्यक्ति अपने लक्ष्य तक नही पहुच पाता। उसकी ऊजा इधर-उधर विखर जाती ह। दुनिया म पदार्थो का कोइ पार नही हे। इसी तरह आकाक्षाओ का भी कोइ पार नही ह। ऐसी स्थिति मे यदि व्यक्ति अपने मन को सयम-सकल्प से नही वाध पाता हे तो उसका मार्गच्युत होना सहज सभाव्य ह। जिनका सकल्प मजवूत होता हे वे ही दुनियावी आकषणा से वच पाते हे। जो अपन मन के भी स्वामी नही वन सकते, वे दूसरो के स्वामी केसे वन सकत हे?

अप्रमाद

वुराइयो को रोकने का तीसरा उपाय हे—अप्रमाद। अप्रमाद का अथ है जागरूकता। अजागरूक व्यक्ति पर वुराइया अनेक मार्गो से आक्रमण कर सकती हे। वडी-वडी सडको पर यह ठीक ही लिखा रहता हे कि—'सावधानी हटी, दुर्घटना घटी'। दुर्घटना केवल सडको पर ही नही होती। जीवन के हर क्षेत्र मे दुघटना की सम्भावना है। आदमी जरा-सा भी प्रमाद करता हे तो न जाने कितने अनथ घटित हो जाते हे। ड्राइवर के एक क्षण के प्रमाद से ता न जान कितने लोगो को जीवन से हाथ धोना पडता हे। विजली, पखे, गेस के चूल्हे आदि जितने भी उपकरण ह उनक प्रति सजगता न रहे तो न जाने कितना नुकसान हो जाता हे।

वस्तुत जीवन एक स्वण अवसर हे। हर क्षण हमारे दरवाजे पर कोई महत्त्वपूण दस्तक देता रहता हे। जव आदमी प्रमत्त रहता हे तो वह उस दस्तक को नही सुन सकता। यह ठीक हे कि आदमी भोतिक सुविधाओ का सवथा त्याग नही कर सकता, पर जो सुविधाओ मे आसक्त हो जाता हे, वह अवसर के चेहरे को नही पहचान सकता हे ओर जव आदमी अवसर को चूक जाता हे तो उसकी सफलताओ का दरवाजा वन्द हो जाता हे। हर क्षण सजग ओर सावधान व्यक्ति ही प्रगति की दोड मे अग्रसर रह सकते हे। अप्रमत्त व्यक्ति ही बुराइयो ओर अच्छाइयो मे भेद कर सकते हे तथा सार्थक जीवन जी सकते ह।

अनावेग

बुराइयो मे वचने का चोथा रास्ता हे—अनावेग। आवेग के अनेक रग-रूप हे—क्रोध, मान, माया, लोभ, काम आदि। जो मनुष्य को वेहोश वना देते ह। जव आवेग आता हे तो आदमी को भला-बुरा कुछ नहीं दीखता। उस समय वह अपने आपको ही भूल जाता हे। आवेग का क्षण वीतता हे आर जव आदमी होश मे आता हे तो उस लगता ह उसकी चादर पर कोई धब्बा रह गया हे जिसे मिटाना सहज नही हे। जीवन को सहजता से स्वीकार करने वाला व्यक्ति ही उतार-चढावा मे समतापूण रह सकता हे। जीवन मे उतार-चढावा का रोका नही जा सकता। कभी आदमी को ऐसा लगता हे कि वह सफलताआ क सर्वोच्च शिखर पर हे, तो कभी ऐसे क्षण भी आते ह, जव उसे लगता हे कि वह असहाय और अकेला हे। ऐसे क्षणो मे जो व्यक्ति अपने सतुलन को खो देता हे, वह जीवन की वाजी हार जाता हे। हर उच्चावचता को सहजता से स्वीकारना ही सफलता की कुजी हे। ऐसे व्यक्ति को कभी निराशा नहीं घेर सकती। उसका चेहरा हमेशा प्रसन्नता से प्रफुल्ल रहता हे। वह केवल स्वय ही प्रफुल्ल रहता हे, अपितु आस-पास के परिवेश को भी प्रसन्नता से भर देता हे। वह जहा भी जाता हे उसके व्यक्तित्व की सोरभ सवको तृप्त कर दती ह।

बुराइयो स वचने का पाचवा रास्ता ह—तनावमुक्ति। जव तक शरीर है तव तक प्रवृत्ति से वचा नही जा सकता। प्रवृत्ति कवल तन की ही नहीं होती हे, वह मन और वचन की भी हाती हे। मनुष्य का तन तो एक अनुपम उपलब्धि ह। उसका नाडीतन्त्र आर ग्रथितन्त्र देव दुर्लभ हे। पशुओ को तो भला वह सुलभ ही कहा है? सचमुच मनुष्य का तन अनत रहस्या का खजाना ह। जा आदमी इस खजाने स अनजान रह जाता हे वही तन का दुरूपयोग करता हे। वही मन ओर वचन का दुरूपयोग करता है ओर अन्तत उसके पल्ले पडते ह—तनाव। जो व्यक्ति प्रवृत्तिया का सम्यग् उपयोग करता हे, वह न केवल आनन्द से भरा रहता हे अपितु एक धन्यता उसे हर क्षण अनुभव होती रहती है। यद्यपि तनाव की हर दरार व्यक्तित्व क मंदिर म अपना एक निशान छोड जाती ह, पर जो अपने तनावो को नहीं समझता हे उसकी दरार निरतर चोडी होती जाती हे। उससे मुक्त होने का एक ही माग ह कि आदमी अपनी चचलता पर नियत्रण करे। जो व्यक्ति चचलता से मुक्त हाते ह उनका व्यक्तित्व ही धीर-गभीर हो सकता हे। ऐसे व्यक्ति न केवल स्वय समस्याआ से मुक्त रहते हे अपितु वे अपने निकट आने वालो की समस्याआ को भी सुलझा मकते हे। तनाव आर चचलता एक ही सिक्के के दो पहलु ह। उनसे वचने का एक ही माग हे—सयम। निवृत्ति से प्रसूत प्रवृत्ति ही श्रेयस्कर हे।

इन पाच आस्रवो का जो समझ लेता हे उसके बुराइयो के द्वार स्वय निरुद्ध हो जाते हे। आवश्यकता यही ह कि व्यक्ति अपना विश्लेपण करे आर जहा भी अपनी नोका म छिद्र दिखाइ दे, उसे राकने का प्रयास करे।

युवक ओर अणुव्रत

अणुव्रत ओर प्रेक्षा तेरापथ की दो महत्त्वपूर्ण उपलब्धिया हे। एक सम्प्रदाय के रूप मे सुस्थिर होकर भी तेरापथ ने ये दो महत्त्वपूर्ण असाम्प्रदायिक चरण अंकित किए है। यों जेनधर्म तेरापथ का अपना परम्परागत कार्य क्षेत्र हे। पर ये दो चरण सचमुच असाम्प्रदायिक गति-प्रगति के सूचक मूल्य मानक ह। हमारे म से अनेक लोग चाहते हे कि इस दिशा मे तेजी से आगे वढा जाए। निश्चय ही आचायश्री महाप्रज्ञजी का नेतृत्व हमारे लिए मार्गदर्शक दीप है। इनके आभामडल से हमारा मार्ग प्रभावित हो रहा है। अंकिचन साधु-साध्वियो की तपस्या भी हमारा ठोस पृष्ठ-वल हे।

पर यह भी सच ह कि साधु-साध्वियो के काम करने की अपनी एक सीमा होती हे। वे उसका अतिक्रमण नही कर सकते। उन्ह उसका अतिक्रमण करना भी नहीं चाहिए। अलवत्ता समणी वग इस दृष्टि से एक समाधायक विकल्प सामने आ रहा हे। समण शक्ति को यदि नियोजित रूप मे इस दिशा मे अग्रसर किया जाए तो वहुत वडा कार्य हा सकता हे। पर फिर भी यह शक्ति सीमित हे।

यही पर श्रावको की भूमिका का सवाल आता हे। पर श्रावको की कठिनाई यह हे कि उनकी अधिकाश शक्ति अपने धन्धे मे ही खप जाती हे अत वे सघ समाज को विशेप सेवा नही दे सकते।

असल म इस दिशा म हमारे पराक्रम को जितना सुचारु रूप से नियोजित करना चाहिए उतना नही हो पाया ह। जब हमारे ही समाज के लोग अन्य सभा सस्थाआ मे अपना समय लगा सकते ह तो उनकी शक्ति का सघ-समाज के लिए उपयोग क्यो नही लिया जा सकता यह एक चितनीय सवाल हे।

यह भी ठीक हे कि एक अवस्था तक आदमी के कधे पर परिवार की जिम्मेदारी होती ह। पर क्या उसके वाद वह उसस मुक्त नही हो सकता। यद्यपि निवृत्त अवस्था मे आदमी ज्यादा काम नही कर सकता, पर फिर भी कुछ काम तो कर ही सकता ह। तव भले ही आदमी अपने जीवन का सर्वोत्तम अश विता चुका होता हे फिर भी उसके अनुभव तो परिपक्व होते ही हे। कभी-कभार इस वात को अनुभव किया जाता हे। पर मानना होगा कि इसे एक अभियान के रूप मे प्रतिष्ठापित किए विना कार्य यथेच्छ रूप मे आगे नही वढ सकता।

असल मे हमे कार्यकर्ताओ की एक सेना खडी करनी ही होगी। जहा भी कार्यकर्ता की वात आती हे उसके योगक्षेम की समस्या भी खडी हो जाती ह। क्योकि भूख तो आखिर हर कार्यकर्ता को भी लगती हे। इसके साथ-साथ प्रचार के माध्यमो पर भी चितन करना होगा। आज विज्ञान ने इतने वहुमुखी साधन विकसित करा दिए ह कि पुराने जमाने म जो प्रचार वर्षो मे नही हो पाता था। वह आज घटे भर मे हो जाता हे। इस दृष्टि से प्रचार माध्यमा पर भी विचार करना पडेगा।

कुछ लोग धर्म के प्रसार के ता इच्छुक ह, उनकी वडी उत्कठा रहती हे कि हम आगे वढे, पर जहा पेसे का सवाल आ जाता हे, वे फिसल जाते हे। वल्कि वहुत सारे लोग ता इस वात पर विवाद के लिए भी उत्तारू रहते ह। इसमे काई सदेह नही हे कि साहित्य शोध साधना आदि के क्षेत्र म जेसा कार्य हमारे सघ के माध्यम से हो रहा हे, वह यदि सरकारी स्तर पर, वेतन भोगी लोगा द्वारा करवाया जाए तो विपुल धन की आवश्यकता होगी। हमारा कार्य जिस स्तर का हे उस स्तर पर पेसे का हिसाव लगाया जाए तो उसका कोइ अनुपात ही नही हो सकता। अन्य सस्थाए आज किस तरह कार्य कर रही ह तथा जिस तरह पेसा वहा रही ह उसके अनुपात मे हमारा खचा वहुत ही अल्प हे। पश्चिम म 'पीपल्स ऑफ दी क्वेस्ट' नाम की एक सस्था हे उसका प्रतिवर्ष का विज्ञापन

खच ही १० लाख डालर ह। इस अनुपात म हम यदि अपन आपको देखे तो शायद एक प्रतिशत म भी नही आएगे। फिर भी इस दृष्टि स व्यापक रूप से समाज क प्रमुख लोगा का चितन चल रहा है। कुछ योजनाए भी सामने आ रही है। अमृत निधि की योजना इसी वात का सकेत ह। पर इस वात से इकार नही किया जा सकता है कि समर्पित कार्यकर्ताओ की अपेक्षा ता है ही।

इस दृष्टि स पूर्वचचित विकल्प फिर सामने आता हे कि एक अवस्था के वाद आदमी अपना जीवा सघ-समाज की सवा क लिए समपित करे। अपने परिवार की चिता म तो सभी जीते ह। मरत दम तक भी यदि आदमी अपन आपको परिवार मे भी खपाता रहता है तो उसके लक्ष्य को व्यापक नही कहा जा सकता। आवश्यकता ता इस वात की हे कि ५० या ६० वर्प वाद आदमी परिवार की चिता से मुक्त होकर समाज-हित म अपने आपको लगाये।

ऐसे लोग जिनके पास पस की कमी नहीं हे तथा उसके वच्चे भी धन्धे मे वुजुर्गो का हस्तक्षेप नहीं चाहत फिर भी यदि वे दुनियादारी मे अपनी टाग अडाते रहते है तो यह एक चितनीय वात वन जाती ह। कुछ लाग यह भी कहते हे कि हम निष्क्रिय जीवन जीना नही चाहते, इसलिए व्यापार म सलग्न रहते है। पर क्या सक्रियता का क्षेत्र केवल व्यापार ही हे? क्या समाज सघ का कार्य सक्रियता का क्षेत्र नहीं वन सकता? अत आवश्यक हे कि प्रोढ लोग इस प्रस्ताव पर गहराइ स विचार कर।

आज जो युवक ह व भी अपनी जिम्मेदारी से मुकर नही सकते। जिन व्यक्तिया का चितन स्पष्ट होता हे वे युवा अवस्था म भी अपना समय निकालत ही ह। पर सभी युवकों को यह तो सोचना ही ह कि एक अवस्था के वाद हमे अपना जीवन सघ-समाज की सेवा मे समर्पित करना हे। यदि आज से ही वे लोग अपना लक्ष्य वनाए तो उनके सामने वहुत अधिक कठिनाइया नही आएगी। आशा हे हमारा युवा-वर्ग समय की माग को पहचान कर पहले से ही अपने जीवन का एक निश्चित ध्येय वनायेगा।

'अणुव्रत' स्वस्थ समाज रचना का आधार

शान्ति मनुष्य की सबसे वडी अभीप्सा है। वाकी सारी वाते शान्ति के लिये ही शुरू होती हे। शान्ति की खोज ही परिवार व समाज का हेतु हे तथा शान्ति की खोज ही अध्यात्म हे। महावीर ने कहा था—

जे य वुद्धा अइक्कता, जेय बुद्धा अणागया
सति तेसि पइट्ठाण भूयाण जगई जहा

ससार मे जितने भी बुद्ध पुरुष हुए हे या होगे, शान्ति ही उनका प्रतिष्ठान हे। वेसे ही जेस प्राणियो का प्रतिष्ठान पृथ्वी हे।

सचमुच जीवन शान्ति की ही परिक्रमा हे। कुछ लोग पदार्थ मे शान्ति को खोजते हे। पर पदार्थ मे सुख तो मिल सकता हे शान्ति नही। शान्ति तो मनुष्य के अपने आप मे ही निहित हे। उसका पहला सूत्र हे मेत्री। मेत्री का अर्थ दूसरो से दोस्ती नही हे। जव भी मत्री कोई दोस्त वनाती हे तो वह वाहरी वन जाती हे। पर यह भी सही हे जव मेत्री आत्मगत होती हे तो वाहर मित्रा की सख्या अपन आप वढ जाती हे। अणुव्रत समाज सरचना का पहला सूत्र ह मेत्री।

दुनिया म मनुष्य ही एक ऐसा प्राणी ह जिसके पास समाज की समझ हे। जानवरा म सह जीविता तो ह पर व अपना समाज नही वना सकते। उनके पास केवल समज की समझ है। मनुष्य ने केवल साथ रहना ही नही सीखा अपितु सह अस्तित्व के सिद्धात को भी स्वीकार किया। मत्री के अभाव म सह अस्तित्व नहीं पनप सकता। वह ता तभी पनप सकता है जव मनुष्य दूसर के अस्तित्व

को भी स्वीकार करे। जहा सह अस्तित्व होगा वहा कोई भी व्यक्ति वेवजह किसी को किसी प्रकार की तकलीफ नही देगा।

उसका रहन-सहन ही इस प्रकार का होगा कि वह निरपराध प्राणी का सकल्प कर ही नही सकेगा। जो आदमी अपने आप से मेत्री करेगा वह आत्महत्या नही कर सकेगा। वह भ्रूण हत्या भी नही कर सकेगा। वह किसी पर आक्रमण नही कर सकेगा। वह आक्रामक नीति का समर्थन भी नही कर सकेगा। विश्वशान्ति ओर निशस्त्रीकरण उसका सहज अभियान वन जाएगा। आज पूरी दुनिया मे शस्त्रो का जो उत्पादन हो रहा हे वह अहिसा ओर मेत्री को सबसे वडी चुनोती ह। शस्त्र का फलितार्थ ही हे युद्ध। मनुष्य के मन मे जव युद्ध की भावना पदा होती हे तभी शस्त्रो का जन्म होता हे। कोइ भी देश शस्त्रो को प्रदर्शनी करने के लिये नही वनाता। कई वार आत्म रक्षा के लिये शस्त्रो के निर्माण का तर्क दिया जाता हे। वल्कि अमेरिका जेसे देशो मे तो वच्चो के हाथा मे भी वन्दूके आ गई ह। स्कूल जाने वाले वारह वच्चा मे से एक वच्चे के पास वन्दूक होती हे। अभी अमेरिका मे छपी एक किताव मे कहा गया हे—'अधिक वन्दूके और कम अपराध'। पर अमेरीकन लोग असमजस मे हे कि वन्दूक रखना उनके लिए सुरक्षा की गारटी हे या नही? वास्तव मे शस्त्र से हिसा मे कमी नही आ सकती। हिसा हिसा से नही मर सकती, वह तो अहिसा से ही मरती हे। जेसा कि कहा गया हे—

क्षमा शस्त्र करे यस्य खड्ग तस्य करोति कि?

अथात् जिमका मन मेत्री से भर जाता है उसके शस्त्रो के खजाने खाली हो जाते हे। उसकी न केवल हाथ की लाठी ही छूट जाती हे अपितु नाखून भी मोथरे पड जाते हे। मेत्री का शस्त्र बहुत धारदार हे। जो मनुष्य या देश मेत्रीभाव को नहीं समझते वे न केवल दूसरो के लिये खतरनाक वनते हे वल्कि अपने लिये भी खतरनाक वन जाते हे। क्याकि शस्त्र मे हमेशा प्रतिस्पर्धा रहती हे। वह हमेशा

अधिक से अधिक वेधकता की खोज करता रहता ह। कोइ भी व्यक्ति समाज या राष्ट्र अमित्र वनकर दूसरा का मित्र नही वना सकता। यद्यपि दुनिया का इतिहास युद्ध परम्परा से भरा पडा ह पर युद्ध कभी भी शान्ति का स्थापित नही कर सकता। शान्ति तो मेत्री से ही आहूत हो सकती हे।

यद्यपि आज शान्ति के नाम पर शस्त्रो का वहुत विकास हुआ हे। पर यह भी समझ मे आने लगा हे कि शान्ति को शस्त्रो से नही खरीदा जा सकता। भले ही कुछ लोग शस्त्रा के व्यापार से अपार धन सग्रह कर सकते हे। पर वे मानवता के मित्र नही वन सकने।

विश्व इस वात से परिचित हो चुका हे कि परमाणु वम कितना भयानक हे। कोवाल्ट, स्ट्रोशियम्, थोरियम आर कार्वन से फेलने वाले प्रदूपण को वह भोग चुका है। उसे डर लग रहा हे कि कव कोई परमाणु वम फट जाए आर आज जो लोग निश्चित हे, ने कल का सूर्योदय देखने के लिए भी जीवित वच या नही? परमाणु विखडन का धुआ भी विश्व की जन्मपत्री को धुए से भर देगा। वल्कि परमाणु अस्त्रा का जहरीला कचरा भी २० लाख टन की सीमा को पार चुका हे। कही न कही तो उसका निष्पादन करना ही होगा। समुद्र मे फेक दिया गया तो मछलियो के माध्यम से पुन मनुष्य के भाजन मे पहुच जायेगा। वरसात मे धुलेगा तो पानी के माध्यम से मनुष्य के पेट म पहुच जायेगा। असल मे शस्त्र मे से शाति नही निकल सकती।

शान्ति की पहली शर्त मेत्री हे। हिसात्मक एव तोड फोड प्रवृत्तिया से भी शान्ति को नही प्राप्त किया जा सकता। जहा हिसा ही शान्ति की समझ वन जाती हे वहा जगल का राज्य ही आकार ले सकता हे। समझदार लोग हर समस्या को परस्पर विचार-विमश से सुलझाने का प्रयास करते हे। हिसा से प्राप्त होने वाला समाधान थोडे दिना मे स्वय ही समस्या वन जाता ह।

अणुव्रत समाज की सरचना मनुष्य की आत्मा मे वसी हुई इस

आध्यात्मिकता को जगाने का प्रयत्न है। अध्यात्म की दृष्टि से प्राणी की हिंसा ही नहीं अपितु पदार्थ के प्रति दुरुपयोग का भाव भी हिंसा है। आज जो उपभोक्तावाद समस्या बन रहा है उसका मूल कारण असंयम ही है। व्रत या संयम की समाज व्यवस्था में उच्छृंखल उपभोक्तावाद को स्थान नहीं मिल सकता। यद्यपि जीवन के लिये आवश्यक सूक्ष्महिंसा से बचना मनुष्य के लिये सम्भव नहीं है। पर उसके लिये मानवीय एकता में तो विश्वास करना जरूरी है ही। जाति रंग आदि के आधार पर किसी को ऊंच-नीच अस्पृश्य मानना मानवीयता के महल में बहुत बड़ी दरार है। कभी यह दीवार क्षुद्र और अक्षुद्र के रूप में प्रकट होती है तो कभी काले और गोरे के रूप में। पर इसमें कोई संदेह नहीं है कि मानवता का महल उससे क्षतिग्रस्त होता ही है।

अध्यात्म और मैत्री का ही दूसरा नाम है धर्म। पर आज धर्म का स्थान सम्प्रदायों ने ले लिया है। सम्प्रदाय आज पूरी दुनिया को अशान्ति के गड्ढे की ओर धकेल रहे हैं। धर्म के नाम पर आज तक जो रक्तपात हुआ है और हो रहा है उससे कौन अपरिचित है? बहुत बार साम्प्रदायिकता को दूसरों से बचने का रक्षा कवच बनाया जाता है। पर देखा यह गया है कि इससे स्वयं का भी बचाव नहीं हो सकता। जब तक दूसरा सम्प्रदाय लड़ने के लिये उपलब्ध होता है तब तक तो सम्प्रदाय की लड़ाई दूसरे सम्प्रदाय से रहती है। पर जब दूसरा सम्प्रदाय लड़ने के लिये उपलब्ध नहीं होता तो साम्प्रदायिकता अपने ही उपसम्प्रदायों के साथ लड़ना शुरू कर देती है।

साम्प्रदायिकता धर्म नहीं अहंकार है। बहुत बार साम्प्रदायिकता का यह मुकुट राज सिंहासन पर बैठ कर राष्ट्र को भी साम्प्रदायिकता में रंग देता है। ऐसे लोग विश्वशान्ति के लिये तो खतरा हैं ही पर अपने राष्ट्र में भी भेद की दीवार खड़ी किये बिना नहीं रह सकते। साम्प्रदायिकता एक मीठा जहर है इसके नाम पर भोले भाले लोगों को बहुत भड़काया जा सकता है। हर सम्प्रदाय में पैदा होने

वाले महापुरुष हमेशा दूसरे सम्प्रदायो के प्रति मैत्री का हाथ आगे वढाते हुए दिखाई देते हे। अणुव्रत समाज व्यवस्था का एक सूत्र हे परस्परता। परस्परता वेसे एक आध्यात्मिक मूल्य भी वन सकती हे पर सामाजिक जीवन के लिये तो अनिवाय हे। व्यवसाय ओर व्यवहार की प्रामाणिकता इसका मुख्य आधार है। जो व्यक्ति व्यवसाय ओर व्यवहार मे प्रामाणिक रहेगा वह अपने लाभ के लिये दूसरा को हानि नहीं पहुचा सकता। वह छलनापूण व्यवहार नही कर सकता। व्यवसाय ओर व्यवहार के विना जीवन चल नही सकता। पर जहा इनके वीच मे स्वार्थ आ जाता हे आदमी अप्रामाणिक वन जाता हे। अप्रामाणिक व्यक्ति की आकाक्षाए आगे से आगे फेलती जाती हे। ऐसे व्यक्ति न केवल समाज व्यवस्था के लिये ही खतरा वनत हे अपितु उनका व्यक्तित्व भी अदर से टूट जाता हे। हो सकता हे कभी-कभी व्यक्ति को नही चाहते हुए भी अप्रामाणिकता वरतनी पडे। पर वह अप्रामाणिकता समाज व्यवस्था को जोडने वाली नहीं वन सकती। अवसरवादी बनकर एक व्यक्ति कितना ही धन कमा सकता हे पर वह समाज को सुखी नही वना सकता। दान देकर भी कोई व्यक्ति समाज को सुखी नही वना सकता। सत्य तो यह हे कि जो व्यक्ति प्रामाणिक बनता हे वह स्वय अपने सग्रह की सीमा कर लेता हे तथा दूसरो के जीने के लिये स्थान छोड देता हे। इसीलिये अणुव्रत समाज सरचना मे परिग्रह की सीमा एक आवश्यक व्रत हे। इससे व्यक्ति स्वय तो सतोप का अनुभव करता ही हे पर दूसरो के लिये भी शान्ति का आश्वासन देता हे।

स्वार्थी व्यक्ति बहुत लम्वे समय तक सुखी नही रह सकता। उसके मित्रो की सख्या निरतर घटती जानी हे। ओर एक दिन ऐसा आता हे जब उसे अनुभव होता ह कि वह शत्रुओ से घिर गया हे। वह ऐसे चक्रव्यूह मे फस जाता हे जिससे निकलना नामुमकिन हो जाता हे।

स्वार्थ को आच देने वाली ओर भी कई बाते ह। चुनाव भी एक ऐसा ही प्रसग है। आज पूरी दुनिया मे लोकतत्र प्रतिष्ठित हो

गया हे। पर जब तक वह मनुष्य के मन मे प्रतिष्ठित नहा होगा स्वस्थ लोकनत्र का निर्माण नही हो सकता। आज लोकतत्र मे जहा-जहा भी खामिया दिखाई देती है। वहा-वहा चुनाव की अनियमितताए अवश्य ही हो रही हे। दुनिया मे राज्य व्यवस्था से इन्कार नही हुआ जा सकता पर जो राज्य व्यवस्था स्वार्थ के धागो से वधी रहती हे वह स्वतत्रता प्रदान नही कर सकती। आज यदि पूरी दुनिया ने साम्राज्यवाद को नकार दिया है तो इसका कारण यही रहा हे कि उस व्यवस्था मे स्वार्थ का घेरा वहुत सकरा हो जाता हे। राजा भी यदि प्रजा की सुविधा का ध्यान रखे तो राज्यतत्र अखरने वाला नही बनता। लोकतत्र मे भी यदि स्वार्थ प्रवल बन जाता हे तो वह लोक-मगल का वाहन नही बन सकता। राज्य शासन को सुव्यवस्था से जोडने के लिए चुनाव की शुद्धि पहली शर्त हे।

शासन एक व्यवस्था तो वनाता हे, पर उसका मूलाधार दड ही रहता है। यह सही हे कि दड-व्यवस्था की भी अपनी उपयोगिता हे। पर शासन के अनुशासन से पहले व्यक्ति मे समाज ओर परिवार का अनुशासन भी आवश्यक हे। आवश्यक तो यह हे कि व्यक्ति का अपना आत्मानुशासन जागे, पर जहा भी व्यक्ति मे आत्म-दुर्वलता जागती हे वहा परिवार ओर समाज की व्यवस्था सामने आती हे। आदमी ने बहुत अनुभवो के वाद समाज मे रहना सीखा हे। अनेक लोगो के वलिदान की वलिवेदी पर ही परिवार और समाज की व्यवस्था खडी होती है। वह यद्यपि कोई दड-व्यवस्था नही हे, पर परस्पर की समझ के कारण ही समाज की एक व्यवस्था खडी होती हे। इसे ही हम सभ्यता कह सकते हे। सस्कृति व्यक्ति,के अपने आत्मानुशासन से फलित होती हे। सभ्यता समाज के अनुशासन स फलित होती है। जिस समाज मे अपना आन्तरिक अनुशासन नही होता वह समाज कभी सभ्य नही वन सकता। जीवन तो यो जगली आदमी भी जीते हे, पर सभ्यता मानवता की अपनी पहचान हे। सभ्य समाज के अपने व्यवहार ओर व्यवहार के ही सभ्य तरीके नही होते अपितु उसमे कुछ रीति-रिवाज भी शामिल होते है। यह सही हे कि रीति रिवाज

कोई शाश्वत सिद्धात नही वन सकते। एक समय जो रीति-रिवाज आवश्यक माना जाता है वदले हुए परिवेश म वह अनावश्यक आर अथहीन ही नहीं अपितु घातक भी वन जाता है। इसलिए ममाज-व्यवस्था एक वहता हुआ स्रोत हे। वह कभी ठहर नही सकता। पर फिर भी हर स्रोत्र के दो तट अवश्य होते है। जव वे तट टूट जाते हे तो वाढ का आतक फेल जाता है। समाज व्यवस्था को वदलने के वावजूद भी परस्परता के कुछ तट ऐसे होते है जिनका रहना आवश्यक हे। स्वार्थ उन तटो पर आघात करता हे। उसी से समाज मे विघटन पेदा होता हे।

समाज ने अपने अस्तित्व के लिए विवाह सस्था को जन्म दिया। एक समय ऐसा था जव विवाह नाम की कोई व्यवस्था नही थी। पर धीरे-धीरे आदमी ने यह समझ लिया कि स्त्री ओर पुरुप को एक सीमा म नही वाधा गया तो जीवन नरक वन जायेगा। आदमी-आदमी अपने ही झगडे मे खत्म हो जायेगा। यह सही हे कि विवाह सस्था मे भी समय-समय पर अनेक परिवर्तन होते रहे ह। जाति, रग, सम्प्रदाय, भूगोल भी आपसी सम्वन्धा को जोडने के सेतु वनते रहे ह। दहेज भी उसी सम्वन्ध-सेतु का एक पत्थर रहा हे। पर जव दहेज का ठहराव एक शर्त वन जाता हे तो उससे अनक विकृतिया जन्म लेती हे। यद्यपि दहेज को लेकर समाज मे समय-समय पर कुछ कुरीतिया भी खडी होती रही हे। इसीलिये कुछ लोग तो विवाह सस्था को ध्वस कर देने का ही प्रयत्न कर रहे हे। दहेज एक कुरीति हे पर उसके नाम पर यदि योन स्वच्छन्दता वढी तो समाज को रुग्ण होन से नही बचाया जा सकता। योन स्वच्छन्दता की कठिनाइया भी विवाह सस्था की आवश्यकता को रेखांकित कर रही हे। निश्चय ही अणुव्रत की समाज सरचना मे दहेज को काई स्थान नही मिल सकता पर जीवन मे सम्वन्धो की पवित्रता का सूत्र अगर बीच मे नही रहा तो न केवल आदमी का स्वास्थ्य ही चोपट हो जाएगा अपितु समाज का पूरा ढाचा ही चरमरा जाएगा। इसी तरह बाल विवाह, वृद्ध विवाह आदि कुरुढिया भी स्वस्थ समाज रचना मे टिक नहीं सकती। अणुव्रत

का अथ उच्छृखल काम को राकन का हे। इसी तरह वहुत-सी कुरूढिया ऐसी ह जा कभी जरूरी रही हागी पर आज यदि उनकी काई उपयोगिता नहीं रही हे तो उनके शव का ढाना काइ जरूरी नही ह।

मनुष्य तन एक अनमाल रत्न हे पारम्भ म ही मनुष्य शरीर के गुणगान गाए जात रहे ह। धीर-धीर मनुष्य न वहुत विकास भी किया। पर अभी मनुष्य क विकास की अनेक सम्भावनाए सामन छलक रही ह। यह वहुत आवश्यक हे कि मनुष्य अपने शरीर की सम्पदा को पहचान। नर ही अपनी साधना से नारायण वन सकता हे। नारायण की यह यात्रा आत्मा की यात्रा ह। वहुत सारे लाग इस आतरिक सम्पदा का पहचान नही पात ह। वे कवल शरीर स्वाद स ही परिचित ह। इसलिय खान-पान की अनियमितता अथवा सामान्य सीमा के अतिक्रमण म कुछ क्षणिक सुखा का व्यक्ति भाग तो लता हे पर उसके परिणाम अत्यत भयावह हात ह। नशा उस दुर्व्यसन यात्रा का पहला कदम हे। इसी न अनेक अपराध अस्तित्व म आत ह। आज नशा इतना भयकर हा गया हे इस कोन नही जानता। हम कवल तम्वाखू को ही ल। भारत म हर साल करीव छ लाख लोग इसकी वजह से उत्पन्न कसर की चपट म आ जाते ह। अनुमान हे कि सन् २००० तक देश म कसर के रोगिया की सख्या पन्द्रह लाख हो जाएगी। इस सख्या का एक तिहाइ भाग गुटका आर तम्वाखू का सवन करने वाल लोगा का होता ह। अकेल टाटा मेमोरियल म हर वष लगभग सताइस हजार रागी इलाज के लिय आते हे जिनम सत्रह हजार कसर मे पीडित होते हे। इनम पतीस प्रतिशत रागी वे होत हे जो तम्वाखू का सवन करते ह। विश्व म प्रतिवष तीस लाख लाग कसर से अथवा तम्वाखू स उत्पन्न अन्यान्य रागा स मर जात ह। वीस लाख लाग इनमे विकसित दशा के हात ह। इसक वावजूद गुटका तम्वाखू खाने वाला की सख्या वढ रही ह। यह वृद्धि दर इसी प्रकार वनी रही ता २०२५ तक हर साल एक कराड लाग केसर से ग्रस्त हागे। समस्या का खतरनाक पहलू हे कि यह क्रम वढता ही जा रहा ह। भारत मे हर साल करीव छ

लाख तीस हजार मात तम्बाकू के सेवन के कारण होती है। एक अनुमान के अनुसार पंद्रह से सतालीस वर्ष की आयु समूह के करीब चालीस करोड भारतीय किसी न किसी तरह तम्बाखू के आदी हैं। इस भयावह आकडे का सबसे बड़ा कारण है कि तम्बाखू के उपयोग को सामाजिक स्वीकृति प्राप्त है। तम्बाकू के उपयोग के और भी अनेक कारण हैं, पर इसमें कोई संदेह नहीं है कि यह एक बहुत ही दर्दनाक नशा है। यह तो हम नशे के पहले कदम की बात कर रहे हैं, पर आज यह यात्रा जिस मुकाम पर पहुच गई है उसमें अनेक पड़ाव हेरोइन, स्मैक, अफीम, चरस, गाजा अथवा शराब के बन गए हैं। क्षणिक तृप्ति के लिये यह नशा यात्रा शरीर का बहुत भयंकर दुरुपयोग है। अणुव्रत समाज रचना इसीलिये नशामुक्ति को एक आवश्यक शर्त के रूप में स्वीकार करती है।

आज की दुनिया का सबसे अहं प्रश्न है--प्रदूषण। इसने जिस तरह की समस्याएं पैदा कर दी हैं उससे पूरी धरती के अस्तित्व का ही खतरा पैदा हो गया है। प्राचीन लोग इस बात को बखूबी जानते थे। इसीलिए महावीर जैसे लोगो ने प्रकृति के साथ छेडछाड नहीं करने की कीमती नसीहत दी थी। वे स्वयं तो इतना संयमित जीवन जीते थे कि सूक्ष्म जीवो को भी कष्ट नहीं देते थे, हिंसा की तो बात ही बहुत दूर थी। अहिंसा का यह विचार ही प्रदूषणमुक्ति का विचार है। यह संभव नहीं है कि महावीर जितना संयम हर आदमी अपना सके, पर यदि आदमी अतिभोग पर भी नियंत्रण स्थापित कर ले तो धरती की उम्र को छीजने से काफी बचाया जा सकता है।

आज तो भोगवाद का भूत लोगो के सिर पर इस तरह चढा हुआ है कि वे किसी दूसरे की बात सोचना ही नहीं चाहते। सचमुच सुविधावाद और उससे भी बढकर फैशनवाद ने दुनिया को विनाश के एक ऐसे कगार पर पहुचा दिया है, जिसका अंतिम परिणाम सामूहिक आत्म-हत्या ही है। यह सही है कि आदमी को जीने के लिए सास लेना पडता है भोजन भी करना पडता है, उसकी अन्य कुछ आवश्यकताओ से भी प्रदूषण बढता है। इसमें भी कोई संदेह

नही कि एक दिन दुनिया म प्रलय होने वाला हे, पर आदमी अपने कारनामो स उसे इतना जल्दी निमन्त्रित कर रहा हे कि समय पर सयम नही किया गया ता न केवल गरीव आर असहाय लोग ही काल के गाल मे समा जायग अपितु सुविधाजीवी लोग भी उससे अपने आपको वचा नही पायेगे।

सुविधावाद का कहीं काइ पार नही हे। खाने-पीने से लेकर पहनने-ओढन, मकान फर्नीचर वनाने, यान-वाहनो का प्रयोग करने के लिए विभिन्न उद्योगा की स्थापना निमाण कर आदमी अपने अत के सारे साधन जुटान म व्यस्त हे। वल्कि आज तो पेकिग सिस्टम ही ऐसी भयकर वीमारी के रूप म खडा हो रहा हे कि उसका कोइ भी अथ नही हे। सभ्यता के नाम पर हर दिन भयकर कूडे का ढेर लग रहा ह। उद्योगा से प्रवाहित होने वाले कचरे से नदिया ओर समुद्र भी दूपित होते ह।

कुछ लोगा का तक हे कि हमार पास वोद्धिक क्षमता हे, हम उसका उपयोग क्यो न करे? एस लोग ही अपने लिए सुविधाआ का एक अभद्य कवच खडा कर लेते ह। पर उन्हे यह सोचना होगा कि क्षमताओ का दुरुपयोग एक भयकर पाप हे। यद्यपि लोगो ने न्याय आर अन्याय की अपनी कुछ परिभापाए गढ रखी हे। पर वे नितात पूजीवादी मनोवृत्ति की परिचायक हे। प्राकृतिक साधनो का उच्छृखल उपयोग करन वाल लोग भले ही न्याय की कितनी ही दुहाइया द पर पकृति का भी अपना एक न्याय हे। उसे यदि नही पहचाना गया तो एक दिन सवनाश सवको ध्वस्त कर डालेगा।

पूजीवाद का मूल ही सुविधावादी मनोवृत्ति का मूल हे। कुछ लोग अपनी सुविधाए जुटान या शेप लागो स अपन आपको ऊपर दिखाने क लिए ही प्रकृति का अकल्प्य दोहन कर रहे हे। अज्ञान भी इसका एक वडा कारण हा सकता हे। उन्ह यह ज्ञान ही नही होता कि उनका अह या शोक कितने भयकर विनाश का कारण हे। वल्कि वह उनके अपने लिए भी कितन विनाश का कारण ह। भोगा का प्रारम्भ मधुर लगता हे, पर धीरे-धीरे वह मधुरता ही जहर

वन जाती हे। भोगा म, सुविधाओ म आकठ डूवे रहने वाले लागो का करुणापूरित अवदान भी आज अनजानी वात नहीं रह गइ हे। आज जिन रागो का असाध्य या अचिकित्स्य माना जा रहा हे वे प्राय अतिभाग की ही देन ह। इसीलिए अणुव्रत के अन्तगत पयावरण की समस्या के प्रति भी जागृत रहने की वात कही गई ह। उद्योग-धधा तथा सुख-सुविधाआ के लिए आज पानी, विजली तथा वनस्पति का जो दोहन हो रहा हे वह एक चितनीय वात ह। अणुव्रत समाज सरचना के प्रति सचेत व्यक्ति को इन्ही आधारो पर चितन करना जरूरी हे। पयावरण सस्था विश्व ससाधन (W R I) के अनुसार विकास के नाम पर होन वाले मानवीय हस्तक्षेपा ने दुनिया से दुनिया का भारी क्षति पहुच रही हे। उन हस्तक्षेपा की एक लम्वी सूची ह। हम केवल समुद्र स्थित प्रवाल चट्टाना की वात कर तो उनके विनाश की एक वडी समस्या प्रतीत होती हे। समुद्र तटा पर होन वाले विकास कार्यो, अधाधुध मत्स्य आखट तथा भूमि पर आर सागर म चलने वाली गतिविधिया इन प्रवाल भित्तिया के विनाश क प्रमुख कारण हे। ज्ञातव्य हे कि धरती के कुल सागर पयावरण मे इन चट्टाना का हिस्सा एक चोथाइ हे। फिर भी इनम निहित विपुल परिस्थिति सम्पदा तथा लाखा लागा की आथिक तथा पयावरणिक सेवा प्रदान करने की क्षमता के कारण वे धरती की सवसे ज्यादा मूल्यवान् पारिस्थितिक प्रणालियो मे गिनी जाती हे। एक अनुमान के अनुसार वे प्रतिवष ८० करोड डॉलर मूल्य के मानव वस्तिया वाले तटा की लहरो आर समुद्री तूफानो से रक्षा करती ह। इनक विनाश का अथ ह धरती का विनाश। आवश्यकता ह इस प्रकार के अगणित आक्रमणो से धरती को वचाया जाए। यही अणुव्रत का मत्री का सिद्धात हे।

प्रज्ञा-पुरुष आचार्यश्री महाप्रज्ञ

एक जागतिक नियम के अनुसार हमारा विश्व परस्पर अत्यत गहनता से जुडा हुआ है। हमे यह ज्ञात ही नही है कि किस किस पकार की चेतन-अचेतन शक्तिया हमारी सृष्टि को अस्तित्वशील ओर गतिशील वनाये हुए हे। निश्चय ही प्रकृति कुछ अव्याख्येय नियम हे। सव कुछ इतना रहस्यमय हे कि उसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती। विज्ञान उस रहस्यमयता को भेदने का प्रयास कर रहा ह। कुछ वाते स्पप्ट हो रही ह। कुछ स्पप्ट होते-होते ओर अधिक रहस्यमय वनती जा रही हे।

पर फिर भी कुछ वाते ऐसी ह जो हमारे सामने घटित हो रही हे ओर हम उनके अनुबधा को पहचान रहे हे। इसी क्रम मे कुछ पुरुप भी हमारी पकड मे आ रहे ह जो कुछ घटित हो रहा हे उसे प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से अभिप्रेरित कर रहे ह। पूरी दुनिया मे पुनीत पुरुप-पुगवो की एक ऐसी पक्ति होती हे जिनका कतृत्व जन-जीवन को प्रभावित/प्रेरित करता हे। ऐसे ही एक शलाका पुरुप ह आचार्य श्री महाप्रज्ञ।

आचार्य महाप्रज्ञ तरापथ के दशवे आचाय ह। अत तेरापथ म आपके अनुदान को स्पप्ट समझा जा सकता है। पर अपनी प्रखर-प्रज्ञा से आपने तेगपथ से ऊपर उठकर जन धम तथा पूरे अध्यात्म-जगत् को आलोकित/आभासित किया ह। इसमे कोई सदेह नही हे कि हमारा वतमान अध्यात्म के प्रति उतना उत्सुक/उत्कठ नही हे जितना पदाथ के प्रति हे। प्रत्यक्ष को ही प्रमाण मानने की दृप्टि से वेज्ञानिक लोग दुनिया को भोतिक अस्तित्व से आगे नही देख पा रहे हे।

पर ज्या-ज्या विज्ञान का विस्तार हाता जा रहा है त्या-त्या ऐसा भी प्रतीत होने लगा हे कि पदार्थ ही सव कुछ नही है। एक-एक परमाणु की सरचना भी इतनी रहस्यमयी हे कि उसके आगे वुद्धि चकरा जाती हे। यहीं हम आचाय महाप्रज्ञ की प्रज्ञा-दृष्टि सहारा दर्ती है। महाप्रज्ञ तर्क या विज्ञान को नहीं मानते हो ऐसी वात नहीं ह, पर आप उसके साथ अध्यात्म को जोड कर देखना चाहत ह। महाप्रज्ञ का मानना ह कि अध्यात्म के साथ जाड कर ही हम विज्ञान को समझ सकते ह। विज्ञान अध्यात्म का विरोधी नही ह। उसकी अपनी एक सापेक्ष भूमिका हे। अध्यात्म की भी अपनी एक सापेक्ष भूमिका हे। अध्यात्म ओर विज्ञान को जोडकर ही हम सत्य की खाज मे आगे बढ सकते हे।

आचाय महाप्रज्ञ को समन्वय का यह सूत्र अपने गुरु अणुव्रत प्रवतक आचायश्री तुलसी ओर उनस भी आगे पूरी जन परम्परा से मिला हे। भगवान महावीर ने कहा ह--सत्य सदा सापेक्ष हाता ह। जव भी उसे एकान्त दृष्टि पकड लेती ह तो वह ठहर जाता हे। आज सत्य-अध्यात्म के आस-पास जा सम्प्रदाय खडे हो गए हे वे सार ऐकान्तिक आग्रह की निष्पत्तिया ह। महाप्रज्ञ का मानना हे कि सम्प्रदाय असत्य तो नही ह, पर जव वे किसी आग्रह स ग्रसित हो जाते हे तो असत्य के पोपक वन जाते हे।

महाप्रज्ञ ने सापेक्षता को अपने विचार ओर आचार दोना मे उतारने का प्रयत्न किया हे। आपने अपनी अध्यात्म-यात्रा दर्शन क केन्द्र से शुरू की। प्रारभ म दशन आपका प्रिय विपय रहा। पर सहज ही आपने अनुभव कर लिया कि सापेक्ष दृष्टि क बिना दशन द्वद्वा का केन्द्र वन जाता हे। समन्वय की इस भावभूमि ने ही आपको दाशनिक से एक सत वना दिया। सन्त सव जगह समता भाव का दशन करता है। उसका अह इतना द्रवित हो जाता ह कि उसमे सव कुछ समा सकता हे।

सतता वहुत वार हिमालय की गिरि-गुहाआ म कैद हो जाती ह। इसमे कोई शक नही कि एकातवास की भी अपनी एक गरिमा

है। पर जो सतता सबके बीच मे रहकर निखर सकती हे वह सर्वोदयी तथा सर्वतोभद्र बन जाती हे। महाप्रज्ञ ने अपने आपका सर्व-सुलभ बना कर आम लोगो का सम्यग् मार्ग-दर्शन किया हे। आपकी साधना ने आपका एक पवित्र आभा-वलय बनाया है। आपके सान्निध्य, प्रवचन एव साहित्य से अनगिन लोगो ने अपने जीवन का मर्म समझा हे।

यद्यपि अध्यात्म एक शाश्वत ज्योति हे। पर आचार्य महाप्रज्ञ ने शाश्वत को सामयिक के साथ जोड कर वर्तमान को भी ज्योतिर्मय बनाया हे। बल्कि आपने अपनी प्रज्ञा से भविष्य को भी ज्योतिर्मय बनाया है। आपके प्रवचनो मे वर्तमान की समस्याओ के भी सटीक समाधान सहज परिलक्षित होते है। अध्यात्म एक व्यक्तिगत साधना हे, पर आचार्य महाप्रज्ञ ने उसके माध्यम से समाज ओर राष्ट्र की समस्याओ को हल करने मे भी महत्त्वपूर्ण योगदान किया हे।

एक जमाना था जब लोगो ने मुनि नथमल को कम्युनिस्ट भी कहा था। इसका एक कारण था। साधारणतया धार्मिक आस्था को क्रान्ति का अवरोधक तत्त्व माना जाता है। इसीलिए कम्युनिस्ट लोगो की सबसे बडी लडाई धर्म के साथ ही बताई गई है। धर्म के स्थापित मूल्यो को ध्वस्त किए बिना सर्वहारा वर्ग को ऊपर उठने का रास्ता नही दिखाया जा सकता यह उनकी पहली प्रतिपत्ति हे। यह माना जाता है कि जब तक गरीब लोगो की धार्मिक आस्था नही टूटती तब तक क्रान्ति घटित नही हो सकती। क्योकि धर्म की आस्था हे कि ईश्वर ने गरीब को गरीब के रूप मे ही बनाया हे। गरीब ईश्वर मे, दूसरे शब्दो मे धर्म मे आस्था के कारण ही अपनी गरीबी को सहता चला जाता है। एक ओर कुछ लोग ईश्वर कृपा के कारण ऐश्वर्य को भोगते रहते है ओर दूसरी ओर गरीब लोग भी अपनी गरीबी का कारण ईश्वर को मानते है ओर धार्मिक आस्था के कारण उसे स्वीकार भी करते जाते है। कम्युनिस्ट इस धार्मिक बुर्जुआपन का विरोध करते है। महाप्रज्ञ ने कहा—गरीब की गरीबी का कारण ईश्वर नही है वह स्वय हे। कुछ लोग ईश्वर को नही मानते है तो कर्म को मानते है। उनका मानना है कि गरीब अपने कर्म के

कारण ही गरीव है। महाप्रज्ञ ने कहा—गरीवी का कारण केवल कर्म भी नहीं है। पुरुपार्थहीनता और व्यवस्था भी उसका कारण हो सकती है। महावीर के अर्थशास्त्र मे महाप्रज्ञ ने इसी वात को प्रकट किया है।

साधारणतया ऐसा ही समझा जाता है कि महावीर का अर्थशास्त्र से काई सम्वन्ध नहीं है। महावीर तो अध्यात्म-पुरुप है। वे तो आत्मधर्म के प्रवक्ता है, उनका अर्थ से क्या लेना देना? पर जव वगाल के वित्तमत्री ने भगवान महावीर का अर्थशास्त्र पुस्तक पढी तो उन्ह आश्चर्य हुआ। देखा यह गया है कि प्राय सभी राजनेतिक दलो के लोग अणुव्रत के सम्पर्क म तथा अणुव्रत की सभाओ मे आते रहते है। पर वगाल की कम्युनिस्ट पार्टी के लोगो ने कभी अणुव्रत की सभाओं मे भाग नहीं लिया। इस वार सयोग से जव भगवान महावीर का अर्थशास्त्र का वगाली अनुवाद उन्ह पढने के लिए उपलब्ध हुआ तो उनकी धर्म के प्रति वद्धमूल धारणा वदल गई और वे कलकत्ते मे अणुव्रत की सभा मे भापण देने के लिए आये। लोगो को भी आश्चर्य हुआ कि मुनि नयमल का कम्युनिज्म सच ही महाप्रज्ञ और महावीर मे वोल सकता है।

महाप्रज्ञ ने 'महावीर का अर्थशास्त्र' पुस्तक मे कहा है अर्थशास्त्र आर्थिक समृद्धि का शास्त्र है और अर्थ का सीमाकरण शान्ति का शास्त्र। असीम आकाक्षा और शान्ति म कभी समझौता नहीं होता। मनुष्य के लिए आर्थिक ससाधन भी जरूरी है। शान्ति के मूल पर *यदि आर्थिक विकास हो तो परिणामत अशान्त मनुष्य आर्थिक समृद्धि* से सुखानुभूति नहीं कर सकता। वर्तमान की अपेक्षा है—आर्थिक आवश्यकता की सपूर्ति और शान्ति—इन दोनो का समन्वय किया जाए। ऐकान्तिक दृष्टिकोण विश्व की समस्या को समाधान देने मे सक्षम नही है, इसलिए *सापेक्ष दृष्टिकोण के आधार पर आवश्यकता की सपूर्ति* का अर्थशास्त्र ओर शान्ति का अर्थशास्त्र—दोना एक-दूसरे के पूरक हों। सयम, विसर्जन, त्याग, सीमाकरण—*ये शब्द आथिक सम्पन्नता के स्वप्नद्रष्टा* मनुष्य को प्रिय नहीं हे। भोग, विलासिता, सुविधा—इन शब्दो मे सम्मोहक शक्ति है। जो प्रिय नही लगते, वे मानवता के भविष्य

के लिए अत्यन्त अनिवाय हे। इस अनिवार्यता की अनुभूति ही महावीर और उनके सीमाकरण के सिद्धान्त को अर्थशास्त्र के सन्दर्भ मे समझने की प्रेरणा देगी।

अपने समन्वय के सिद्धान्त के कारण ही महाप्रज्ञ ने धम और अर्थ मे एक समीकरण बनाया ह। इसी से उनकी दृष्टि म परिपूर्णता के दर्शन होते हे। इस परिपूर्णता के कारण ही वे शरीर आर आत्मा मे भी एक समीकरण बनाते हे। इस दृष्टि से उनका 'महावीर का स्वास्थ्य शास्त्र' भी एक महत्त्वपूर्ण कृति ह। साधारणतया महावीर ओर शरीर दो भिन्न दिशाए मानी जाती ह। आचार्य महाप्रज्ञ कहते हे—भगवान महावीर क सामने आत्मा प्रधान थी, शरीर गोण था। आत्मा के विकास मे सहयागी बने, उस शरीर का मूल्य था। वह शरीर मूल्यहीन था, जो आत्मोदय म बाधक बने। आदि से अत तक अहिसा की परिक्रमा करने वाली चेतना उसी स्वास्थ्य को बल दे सकती हे, जिसके कण-कण मे आत्मा की सहज स्मृति हो। भगवान महावीर ने स्वास्थ्य के शास्त्र का प्रतिपादन नही गया। उनकी वाणी मे शरीर आत्मा का सहायक ओर उपयोगी मात्र है, इसलिए शारीरिक स्वास्थ्य का शास्त्र उनकी वाणी का विषय नही रहा। उनके सामने परम तत्त्व था आत्मा। उसे स्वस्थ रखने क लिए उन्होने बहुत कहा और वह अध्यात्म शास्त्र बन गया। अध्यात्म शास्त्र का ही दूसरा नाम हे स्वास्थ्य शास्त्र।

स्वास्थ्य का सम्बन्ध भाव से जुडा हुआ हे। यदि हम शरीर तक जाए, उसके आगे मन तक जाए तो समस्या का समाधान नही होगा। बहुत सारी बीमारिया ह जो न शरीर से उत्पन्न हान वाली हे और न मन से उत्पन्न होने वाली हे, किंतु भाव से उत्पन्न होने वाली हे। मन ओर भाव का जो अलगाव हे, वह महावीर ने बहुत सूक्ष्मता से बतलाया। प्रश्न हे भाव क्या हे? मन क्या है? स्पष्ट हे—मन हमारा स्वरूप नही हे, जीव का स्वरूप नही हे। किन्तु भाव जीव का स्वरूप है। मन पेदा होता हे, किन्तु भाव का स्रोत भीतर हे। मन का कोई स्रोत भीतर मे नहीं है। वह हमारे चित्त के द्वारा

उत्पन्न किया हुआ तत्र है। भाव जब मन के साथ जुडता है वह मनोभाव बन जाता है। मूलत मन भाव जगत् से अलग है।

तनाव हमारे युग की एक विकट समस्या है। ओद्योगिक सभ्यता से मनुष्य इतना तनावग्रस्त बन गया ह कि जीवन ही बोझिल होता जा रहा हे। ऐसे क्षणा मे आचार्य महाप्रज्ञ का प्रेक्षाध्यान एक समाधान बनकर सामने आ रहा हे। वेसे ध्यान भारत के लिए कोई नई बात नही है, पर प्रेक्षाध्यान को जिस वेज्ञानिक ढग से परोसा जा रहा हे, उससे समाधान की एक स्पष्ट दिशा मिलती हे। प्रेक्षाध्यान न केवल मानसिक तनाव का ही ईलाज हे अपितु शारीरिक व्याधियो को शात करने मे भी उसकी बहुत महत्त्वपूर्ण भूमिका है।

प्रेक्षाध्यान को जीवन विज्ञान के रूप मे प्रस्तुत कर महाप्रज्ञ ने शिक्षा जगत् की समस्या के समाधान का एक विकल्प प्रस्तुत किया हे। महाप्रज्ञ का यह कहना नही हे कि आज की शिक्षा निरर्थक हे। आपका मानना हे कि यदि आज की शिक्षा निरर्थक होती तो आज जो डॉक्टर, इन्जीनियर, वकील आदि है, वे कहा से आते? बात इतनी ही हे कि शिक्षा मे यदि जीवन-विज्ञान को ओर जोड दिया जाए तो उसका ओर अधिक लाभ उठाया जा सकता हे। इस तरह जीवन-विज्ञान के माध्यम से आचार्य महाप्रज्ञ एक नये मनुष्य के निर्माण के लिए अहर्निश प्रयत्नशील है। अणुव्रत प्रवर्तक आचार्य तुलसी के बाद अणुव्रत अनुशास्ता के रूप मे एक स्वस्थ समाज रचना का सकल्प आपने उत्तराधिकार मे पाया हे। ऐसे सत पुरुष को प्राप्त कर अणुव्रत-समाज धन्यता का अनुभव करता है। अध्यात्म को समाज के साथ जोडकर वे अणुव्रत के रूप मे शाति का महत्त्वपूर्ण प्रयोग कर रहे ह।

□□□

मुनि सुखलाल

जन्म सवत् १९८७ सुजानगढ (राजस्थान)

दीक्षा सवत् २००१ सुजानगढ़ (राजस्थान)

अग्रगामी सवत् २०१८ गगाशहर (राजस्थान)

शिक्षा गुरुदेव श्री तुलसी एव आचार्य श्री महाप्रज्ञ के उपपात म सस्कृत, प्राकृत, अग्रेजी आदि भाषाओ का अध्ययन। योग्यतम परीक्षोत्तीर्ण।

लेखन धर्म दर्शन, विज्ञान मनोविज्ञान काव्य कहानी, गीत सस्मरण, बाल साहित्य, जीवनवृत्त आदि विविध विधाओ मे तीन दजन से अधिक कृतिया का सृजन।

यात्रा अणुव्रत आन्दोलन के सन्दर्भ मे अणुव्रत प्रवर्तक श्री तुलसी एव आचार्य महाप्रज्ञ के साथ तथा स्वतन्त्र रूप से भी देश के विभिन्न भागो म सुदीर्घ पदयात्राए-जनसम्पर्क।

विशेष
- हिन्दी तथा सस्कृत काव्य रचना।
- अणुव्रत की राष्ट्रीय गतिविधियो से सतत सम्पर्क।
- शिक्षा तथा ग्रामीण-अचलों में अणुव्रत का रचनात्मक कार्य।

सम्प्रति
- राष्ट्रीय अणुव्रत प्रभारी
- तेरापथ विकास परिषद् मे अणुव्रत-समायोजक।